नूतन आलोक

चुनिंदा प्रगितिशील कहानियों का अनुवाद

आलोक राय



नूतन आलोक

अनुवादक

अमृत राय

प्रथम संस्करण नवंबर १९४७

प्रकाशक

अमृतराय

हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस,

अलाहाबाद।

मुद्रण

टाइमटेबुल प्रेस,

काशी।

प्रच्छदपट

माखन दत्तगुप्त

वर्णलिपि

कृष्णचंद्र श्रीवास्तव

प्रच्छदपट-मुद्रण

भारत फोटोटाइप स्टूडियो

७२।१ कॉलेज स्ट्रीट

कलकत्ता।

ब्लॉक-निर्माण

रिप्रोडक्शन सिन्डीकेट

७।१ कार्नवालिस स्ट्रीट,

कलकत्ता।

लीडर प्रेस,

अलाहाबाद।

टी० एन० लक्ष्मणराव, आर्टिस्ट,

रीगल बिल्डिंग

बंबई।

*

मूल्य अढ़ाई रुपया

क्रम

जो नया बिहान ला रहे हैं, उनको ।

नूतन आलोक

Not for you
Is mourning
Not for you
Is rest,
The legacy's yours
That is soaked
In the blood from the hearts of your brothers,
For you
Is the future-creating
Deed.
Time
Presses you down
In the depths.
Fling wide
To a joyfuller morning
The gates !
Ernst Toller.

Nothing is ever born
Without screaming and blood.
John Cornford.

तिङ् लिङ्

चीन के नये साहित्यिक आन्दोलन ने पिछली बीस साल में कई लेखिकाओं को पैदा किया। मगर उनमें से अधिकांश ज्यादा दिन साहित्य के क्षेत्र में न रह सकीं, कुछ अपने पारिवारिक जीवन में खो गयीं और कुछ युग के साथ पैर मिलाकर आगे न बढ़ सकीं। तिङ् लिङ् उन गिनी-चुनी लेखिकाओं में हैं जो युग का साथ दे सकीं और समय के साथ जिनकी कीर्ति में अभिवृद्धि होती गयी।

तिङ् लिङ् का जन्म यांग-सी की तराई के हूनान नामक प्रान्त में १९०५ में हुआ था। हूनान अपने क्रान्तिकारियों और लाल मिर्चों के लिए प्रसिद्ध है। तिङ् लिङ् का जन्म गरीब परिवार में हुआ था, इसी से वह अपनी कालेज की शिक्षा पूरी नहीं कर सकीं। मगर वह लगातार दृढ़तापूर्वक लिखती रहीं और अपनी पहली कृति 'द डायरी ऑफ़ मिस सोफ़ी' से ही उन्होंने काफी ख्याति अर्जित की।

इसके अलावा उनकी अन्य कृतियों, वाई हू, द बर्थ ऑफ़ अ मैन, इन द डार्कनेस, मदर आदि सब में उनकी शैली का एक स्वतंत्र ओज है और सबमें शोषितों-गरीबों के प्रति उनकी गहन सहानुभूति पायी जाती है। उनकी सहज

प्रतिभा के अलावा उनकी कृतियों की शक्तिमत्ता के मूल में उनके अपने जीवन के अनुभव और उनके इंक़लाबी काम हैं। १९३२ में उनके पति को शांघाई में प्राणदण्ड दिया गया। तब तिङ् लिङ् को अपने नवजात शिशु को लेकर वहाँ से भागना और हूनान जाना पड़ा था। दूसरे ही साल अपने बच्चे को अपनी माँ के पास छोड़कर वह शांघाई लौट आयीं और फिर से अपने क्रान्तिकारी कार्यों में जुट गयीं। मगर जल्दी ही पकड़ ली गयीं और फिर चार साल तक किसी को इस बात का पता न था कि तिङ् लिङ् ज़िन्दा हैं या मार डाली गयीं।

सन् ३७ में वह जेल से छूटीं और सीधे छापेमार लड़ाई के इलाके में गयीं, और मोर्चे के अधिक से अधिक जोखिमवाले काम में लग गयीं। कुछ दिन बाद उन्होंने जापान-विरोधी सांस्कृतिक जत्थों का संघटन शुरू किया और इस क्षेत्र में भी बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रस्तुत कहानी उनकी नवीनतम कृति 'व्हेन आइ वाज़ इन शेचुआन' से अनूदित है।

नूतन आलोक

मैदानों के उस पार, पेड़ों के एक हलके से झुरमुट के परे 'वेस्ट विलो' गाँव बसा था, शान्त और एकाकी। गाँव के बाहर, नदी के किनारे विलो के पेड़ की नंगी शाखें जाड़े की हवा में जोरों के साथ झूम रही थीं। विलो की छाया में आँगन की सफेद पुती दीवार पीली दीख रही थी। उसका पीला रंग ठंढक को बढ़ा रहा था। उसी के कारण दृश्य में मृत्यु की सी भयानक शान्ति भी आ गयी थी।

गांव के छोर पर एक पुरानी, अँधेरी सी, पगोडा के समान इमारत खड़ी थी। गोधूलि में वह इमारत ऐसी जान पड़ती थी मानों कोई एकाकी बुड्ढा खड़ा उदास आँखों से आगे की ओर देख रहा हो।

झुटपुटा हो रहा था। मकानों से कुछ खास धुँआ न उठ रहा था। शाम का धुँधलका गांव पर उतर आया था।

कौवों के झुण्ड पर झुण्ड ऊपर चक्कर काटते और फिर एक एक करके खजूर के झुरमुट की ओर उड़ जाते थे। कुछ नन्हीं मुन्नी चिड़ियाँ जो पहले ही से झुरमुट के अपने घोंसलों में पहुँच चुकी थीं इन नये आगंतुकों के कारण चकित होकर जोर जोर से चहकने लगीं।

मगर इन कौवों से भी ज़्यादा घबराहट उन्हें उस बड़ी छाया के कारण हुई जो पहाड़ी पर से धीरे धीरे उतर रही थी। उसके काले, रुईदार जूते जब घास पर पड़ते तब उस पर की पीली बर्फ दबती और आवाज़ होती। एक जंगली मुर्गी जिसके पंख बड़े खूबसूरत थे, डरकर झाड़ी में कूद गयी।

चेन सिङ् हान को ऐसा लग रहा था मानों वह कैदी हो और लोग उसे फाँसी के तख्ते की ओर ले जा रहे हों। वह अपने को गिर पड़ने से बचाने के लिए पूरा जोर लगा रहा था। उसकी सूनी सूनी सी निष्प्रभ आँखें आकाश की ओर यों देख रही थीं मानों उन्हें इस बात का डर हो कि कोई भयावनी चीज़ उनके सामने आ जायगी। जैसे जैसे वह पहाड़ी की तलहटी की ओर बढ़ता था, वैसे वैसे उसके पग भारी और धीमे होते जाते थे।

गाँव पर छायी हुई निस्तब्धता धीरे धीरे टूट रही थी। होश में आते हुए बीमार की तरह वह थका थका सा कराहने लगा। अब बहुत अँधेरा हो चुका था। लेकिन ये आवाजें आधी रात के वक्त क़ब्रिस्तान में घूमते हुए भूखे भेड़ियों की लंबी, खिंची हुई गुर्राहट के समान जान पड़ती थीं। चेन सिङ् हान ने इन आवाजों को साफ साफ सुना। एक जबर्दस्त डर ने उसके शरीर को बुरी तरह जकड़ लिया।

वह कांपा और स्तंभित सा खड़ा हो गया। भयंकर निराशा के बीच भी आशा के कण सँजोये, उसने अपने टूटते हुए साहस को बटोरा और पहाड़ी से उतरते हुए वह गांव की तरफ बढ़ा। गाँव अब कुहरे से ढँका हुआ था और मकानों की छतें मुश्किल से दीख पड़ती थीं।

तभी गाँव में से दो मानव छाया आकृतियाँ निकलीं। आगे पीछे चलती हुई वे चुपचाप कोई चीज़ लिये चली जा रही थीं। चेन सिङ् हान ने जब यह जाना कि वह चीज़ एक आदमी का शरीर है तो उसका खून सर्द हो चला। वह ठिठका और उसका दिल फिर डर के मारे धड़कने लगा।

वह उन्हें कुछ दूरी से देखता रहा। वे दोनों बहुत बेमन से खुदी हुई मिट्टी को फावड़े से उठाते और जल्दी जल्दी गड्ढे में फेंकते जा रहे थे। धीरे धीरे गड्ढा भर गया। तब उन्होंने मिट्टी ठोंक-पीटकर वहाँ की ज़मीन को कड़ा कर दिया। अब उस ज़मीन की शकल एक बड़े फूले हुए केक के समान थी। चलते चलते एक बार फिर मिट्टी को ठोंककर और बराबर करके वे उसी रास्ते से वापस लौट पड़े। उनमें

कोई बातचीत न हुई, सिर्फ चलते वक्त उनमें से एक ने ठंडी साँस छोड़ी।

चेन सिङ् हान ने उन दोनों को मज़बूती से पकड़ा और पूछा—बताओ, तुम यहां किसको दफ़नाकर जा रहे हो?

उस वक्त उसकी आवाज़ एक बीमार गाय के कराहने की तरह सुनायी पड़ी!

बुड्ढे चाङ् दादा को। हमें उनकी लाश उनके नाती के मकान में मिली। शायद वे ही सबसे पहले मारे गये थे।—उनमें से एक ने जवाब दिया।

दूसरे ने अपने साथी की बात को और साफ करने के लिए कहा—उनकी नतबहू की लाश उन्हीं के पास बिलकुल नंगी पड़ी थी। वह अपने जमे हुए खून के कारण ज़मीन पर जम सी गयी थी। वह देखो, वह रही उसकी क़ब्र—दाहिनी ओर। अब वह शान्ति के साथ सो रही है।

चेन सिङ् हान ने उनका हाथ छोड़ दिया और उनके साथ हो लिया। एक प्रश्न बार बार उसके मन में उठकर जैसे उसका गला घोंट रहा था, मगर उसे पूछने की हिम्मत न हुई। उन दोनों में से छोटे ने शान्ति भंग की।

चेन काका, इन दिनों तुम कहाँ भाग गये थे? जल्दी चलो! तुम्हारा भाई कब का वापस आ गया है।

क्या मतलब, रलो हान? कब वापस आ गया वह?

जवाब का उसने इन्तजार न किया। उसके पांवों में नयी ताकत आ गयी थी और वह लम्बे लम्बे डग भरने लगा। उसने आंखें ऊपर उठायीं तो वे दृश्य उसकी आंखों में फिर गये—घटनाएँ छोटी छोटी थीं पर वह उनसे द्रवित हुआ।

तब तक गाँव आ गया था। अँधेरे में उसे वहाँ कोई परिवर्तन न दीख पड़ा। चेन सिङ् हान की चिन्ता आशा में परिणत हो गयी। उसने क़ब्र खोदनेवालों को पीछे छोड़ा और तेजी से अपने घर की ओर दौड़ा।

उसे घर छोड़े पाँच दिन हुआ था। उस दिन, तब पौ फट रही थी। उसने एकाएक गाँव के छोर पर बन्दूक की आवाज़ सुनी। वह चटपट उठ बैठा और उसने देखा कि उसकी स्त्री पहले ही से उठी बैठी थी। उसकी पन्द्रहवर्षीया लड़की सोना कमरे में झपटकर घुस आयी; उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था। सारा मामला उसकी समझ में फौरन आ गया और वह बोला—तुम पहाड़ी के उस पार अपनी नानी के घर भाग जाओ।

वह बोली—बाबूजी, अगर मरना ही है तो हम सब एक साथ मरेंगे। मेरा चमड़ेवाला जाकट कहाँ है?

अब इन सब चीज़ों पर सिर न खपाओ। जापानी आ रहे हैं।

वह अपनी पत्नी को एक हाथ से और अपनी सुन्दर लड़की को दूसरे हाथ से पकड़कर भागने लगा। उसका चेहरा धूल और कालिमा से भद्दा हो गया था; और वह उस समय बहुत भोंड़ा दीख रहा था। वे लोग भीड़ में सबसे आगे थे, और जल्दी ही पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। उसकी पत्नी रोने लगी। उसकी दूसरी लड़की और लड़का न जाने कहाँ थे? क्या उनको भी भागने का मौका मिला होगा? और ऊपर से चेन सिङ् हान की सत्तावन बरस की बूढ़ी माँ भी तो छूट गयी थी। वह अपनी पत्नी और लड़की से भी भीड़ के साथ जाने को कह, गाँव की तरफ लौट पड़ा। कुछ लोगों ने उसे रोकना चाहा, कहा कि लौटकर मत जाओ, जान बचाना हो तो भाग चलो। पर उसे अपनी माँ को बचाना था, डरा नहीं। उसने उस बढ़ती हुई भीड़ में सतर्कता से उसे ढूँढ़ा और आवाजें दीं।

रसो हान की पत्नी अपने एक साल के बच्चे को गोद में लिये हुए भीड़ के पास पहुँचने के लिए जल्दी कर रही थी।

चेन सिङ् हान ने उससे पूछा, माँ कहाँ है? तुमने उसे कहीं देखा है?

हाँ उन्होंने हमसे पहले घर छोड़ा था। रूपा और तुङ का भी उनके साथ थे। हमें कहाँ जाना होगा?

नानी के घर, जल्दी करो।

वह उसके पीछे न जाकर घर की तरफ़ भागा। सारे गाँव में खलबली मची थी, चारों तरफ से गोलियों की बौछार हो रही थी और चीखने और कराहने की आवाजें आ रही थीं। गाँव के छोर पर आग लग गयी थी और धुएँ के सफेद बादल भीतर की तरफ बढ़ रहे थे।

घर में, सिवा कुछ इधर उधर भागते हुए चूहों के और कोई न था।

वह फिर बाहर की ओर भागा और गोलियों की बौछार में आता गया। उसने अपने पीछे आते हुए घोड़ों की आवाज़ सुनी लेकिन पीछे मुड़कर देखने का वक्त न था। ऐसा लगता था कि आसमान अपने पूरे वज़न से ज़मीन को चूर चूर कर देगा। लोग मुश्किल से साँस ले पाते थे—एक चीख और···बस।

लौटते हुए, पूरे रास्ते उसे अपने लोग नहीं मिले। उसने कुछ गाँववालों से पूछा भी लेकिन वे कुछ नहीं बता सके।

दो बूढ़ी औरतें एक पहाड़ी की चोटी पर बैठी फूट फूटकर रो रही थीं लेकिन उनमें उसकी माँ न थी। कुछ बच्चे भी भीड़ के साथ झोंके खाते चल रहे थे, लेकिन उनमें उसका तुङ्ग छा न था। उसकी पत्नी और पुत्री का भी अब पता न था। काश कि वह रसो हान की पत्नी को ढूँढ़ पाता। लेकिन उसका भी कहीं पता पाना कठिन था। रुक कर उसने थोड़ी देर आराम किया। शरणार्थियों की एक लहर सी आयी लेकिन उनमें उसके लोग नहीं थे।

जापानियों की पूरी रेजिमेण्ट आयी है।

कुछ खेतिहर किसान मारे गये।

हमारा गाँव क्या इसी तरह तहस-नहस होनेवाला है?

मैंने पहले ही कहा था कि वे सब आयेंगे।

हुई न वही बात। अब हम लोगों का काम तमाम समझो।

इसी को भाग्य कहते हैं।

भीड़ में भय का रोग एक आदमी से दूसरे आदमी को छुतहे रोग की तरह लग रहा था। इसलिए उसने उनका साथ न दिया और चाङ्

किया कान नामक गाँव की ओर, जो वहाँ से नौ मील दूर था, चल पड़ा। इस छोटे से गाँव में कोई बीस तीस परिवार रहते थे, इसीलिए वह बहुत शान्त सा था और आने जानेवाले भी उसमें कम हीः आते थे। बाक़ी दुनिया से अलग, वे लोग बड़े आदिमकालीन ढंग से रहते थे। उसकी पत्नी का मायका वहीं था।

उसके पहुँचने के थोड़ी ही देर बाद उसकी पत्नी और सोना भी वहाँ पहुँचीं, लेकिन परिवार के और लोगों का कोई पता न था। दूसरे दिन वह बाहर निकला और गाँव के बारे में कुछ दुःसंवाद ही सुना। तीसरे दिन उसने एक आदमी भेज कर अपने भाई को सन्देसा कहलवाया। चौथे दिन उत्तर आया कि वे लोग जल्दी ही आवेंगे। पाँचवें दिन जब वह फिर घूमने निकला तो उसने एक अच्छी खबर सुनी। छापेमारों ने वेस्ट विलो गाँव पर फिर अधिकार जमा लिया था और लोग अब फिर अपने घरों को वापस लौट रहे थे। इसलिए वह भी पता लगाने के लिए वापस गया। वह भयभीत था—उसे यह सोचकर डर लगता था कि उसके परिजनों को कहीं कुछ हो न गया हो, लेकिन लौटना तो उसे पड़ा ही। भय और आशंका के साथ वह वापस गया।

अब वह अधिक प्रसन्न था। अब तक उसने ऐसा कुछ नहीं सुना था जिससे उसे यह पता चलता कि उन लोगों पर कोई आफत आयी, और कौन जाने, हो सकता है सब मजे में हों। लेकिन कब्र खोदनेवाले उसे यह बताना भूल गये थे कि उसी दोपहर को उन्होंने एक लड़के को दफ़नाया था जिसका नाम था तुङ्ग का, उसका अकेला लड़का तुङ्ग का।

२

चलो मैं भी तुम्हारे साथ उसे ले आऊँ।

सोना ने अपनी कमर का फेटा कसा और अपने काका चेन स्सो हान की ओर बढ़ी। उसने अपनी माँ के चेहरे पर लिखे हुए विरोध के भाव की कोई परवाह नहीं की।

चेन सिङ् ह्वान के छोटे भाई चेन रसो ह्वान को साहस और गंभीरता अपने पिता से मिली थी। उसकी भारी भारी पलकें जब गुस्से में झुक जातीं और उसके ओंठ जब दृढ़ता के साथ बन्द हो जाते तब उसके भाई एक दूसरे को देखते हुए शान्त हो जाते। लेकिन शायद ही कभी उसे गुस्सा आता हो। उसने अपनी सिधाई के मारे लड़कों को बिगाड़ दिया था और इससे घर की औरतें उससे क्षुब्ध रहतीं।

नहीं, तुम मत चलो। घर ही में रहो। देखती नहीं, बाहर बर्फ गिर रही है।—उसने सोना की हल्की रुईदार जाकट को थपथपाया।

नहीं, मैं चलना चाहती हूँ। मैं घर पर नहीं रहना चाहती।

उसने अपने शरीर को तोड़ा-मरोड़ा और मुँह फुलाकर खड़ी हो गयी। उसने अपनी माँ और काकी को देखने के बाद बड़ी आशा और आह्लाद के साथ आँखें अपने काका के चेहरे पर जमायीं।

काका मुसकराये मानों कह रहे हों, कैसी लड़की है···

तुम्हारी जाने की हिम्मत पड़ती है—इस सब तूफान के बावजूद! इतनी बड़ी लड़की और इतनी बेशरम···माँ ने जो इधर बहुत बदमिजाज और चिड़चिड़ी हो गयी थी, डाँटना शुरू किया।

घर ही रहो, नहीं तुम्हारी माँ अकेली पड़ जायँगी। चेन सिङ् ह्वान ने कहा और बिना अपनी लड़की की ओर देखे बाहर निकल गये।

सोना, आग जलाओ और उस पर बहुत-सा पानी उबलने के लिए रख दो। देखो, अब भी संभव है कि तुम्हारे मँझले काका दादी और तुम्हारी छोटी बहन को ढूँढ़ लावें। तुम्हें कुछ चाहिए क्या?

सोना ने कोई उत्तर न दिया। उसने एक सूती कपड़े से सिर ढँक लिया और दरवाजे की तरफ़ बढ़ी।

कहाँ जा रही हो? उसकी माँ ने गुस्से में गरजकर पूछा।

कोयला लाने। जाऊँ! सोना ने उतनी ही भारी आवाज में जवाब दिया।

काका फिर हँसने लगे। कमरे में चारों ओर एक बार निस्पृह ढङ्ग से नज़र दौड़ाकर वह बाहर चले गये। उनका चेहरा गम्भीर बना रहा।

चेन सिङ् ह्वान की पत्नी काङ् † पर बैठी हुई है। अपने परीशान दिमाग से वह ऐसी किसी चीज की तलाश में थी जिस पर वह अपना सारा दबा हुआ गुस्सा उतार सके और जिसे बुरा भला कह सके। तभी उसके दिमाग में एक बात आयी। उसे सोलहो आना यकीन हो गया कि उसका अन्दाज सही है। उसका यह ताजा गुस्सा उसके मन को बुरी तरह मथ रहा था और उसकी बहुत प्रबल इच्छा हुई कि वह भी दाँत काटे और लात चलाये, पर उसने अपने पर काबू करने की कोशिश की और धीमे संयत स्वर में पूछा—बहन, तुमने कहा था न कि उस दिन भगदड़ के समय रूपा और तुङ्ग का तुम्हें दिखे थे?

जीजी ने जो कि काङ् के दूसरे सिरे पर अपने बच्चे को लिये हुए बैठी थीं, बड़ी भलमंसाहत से उत्तर दिया। पिछले दो दिनों से उसे अपनी जिठानी से बात करने में डर लग रहा था।

हाँ भागते समय मैंने उन्हें देखा था।

सोना और उसके पिता से तुम्हारी मुलाकात कब हुई?

रास्ते में।

हूँ।

बातचीत थोड़ी देर को बन्द हो गयी। फिर उसने सवाल करना शुरू किया।

सातवें काका के घर पहले भी तुम कभी गयी हो?

नहीं, मैं कई लोगों के साथ गयी थी और किसी किसी तरह घर पहुँची थी। अगर सातवें काका न होते तो, बस··· जीजी ने अपनी उस समय की दयनीय दशा का वर्णन किया। अगर सातवें काका से उसकी भेंट न होती तो उसका क्या हाल होता?

हुँः! कैसा संजोग है! कैसी अच्छी कहानी गढ़ी है! जीजी, हम

† उत्तरी और उत्तर पश्चिमी चीन में जहाँ बहुत सख्त सर्दी पड़ती है अँगीठी के ऊपर मिट्टी का बिस्तरनुमा चबूतरा बनाकर लोग उस पर सोते हैं। उसी को काङ् कहते हैं—अनु०

सब एक ही घर के हैं इसलिए कुछ छिपाओ मत मुझसे। सोना के पिता तुम्हें वहाँ ले गये, यह बिलकुल ठीक ही किया उन्होंने। तो तुम मुझसे यह बात छिपाना क्यों चाहती हो?

जीजी, ऐसी बात मत कहो। हमारा घर यों ही बरबाद हो गया है। अब कुछ शान्ति तो रहने दो।

घर बरबाद हो गया? तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ज़रा सुनूँ तो? तुम्हें तो एक आदमी बहुत आराम के साथ एक हिफाजत की जगह पहुँचा आया, मरन तो मेरी हुई। ओह! मेरा तुझ छा! मेरा बेटा! तू बुरी मौत मरा। इस घर में राक्षस भरे हैं—कठोर और निर्लज्ज...! —वह अपनी देवरानी का अपमान करने के लिए कुछ अपशब्द खोज रही थी जिसमें वह उसे गुस्सा दिला सके।

जीजी को लगा कि उसके साथ बेजा सलूक किया जा रहा है और वह कम्बल में मुँह छिपाकर रोने लगी। बच्चा डर गया और चिल्लाने लगा।

माँ, क्या मामला है? कोयले का एक गट्ठर लिये हुए सोना लौटी तो बड़े फेर में पड़ गयी।

अपनी बेटी की आवाज़ सुनकर तो उसकी तकलीफें और जैसे बढ़-सी गयीं। अब यही उसकी अकेली लड़की थी। उसकी दूसरी लड़की सोना से भी ज्यादा खूबसूरत थी। और कितने अच्छे, कितने प्यारे थे दोनों बच्चे! कभी उन्होंने एक काम उसकी मर्जी के खिलाफ नहीं किया। अपने तुझ छा की लाश भी वह नहीं देख सकी; उस छोटी-सी कब्र पर वह दो बार जा चुकी थी। वह सोच ही नहीं पाती थी कि उस वक्त वह कैसा दिखता रहा होगा। उसकी हालत क्या हलाल किये हुए बकरे के समान रही होगी, जिसकी आँतें—पीली, सफेद और लाल—निकालकर अलग कर दी जाती हैं। इस विचारमात्र से उसे लगा कि कोई उसकी अँतड़ियाँ निकाले डाल रहा है।

माँ रोओ मत। काकी, माँ को क्यों रुला रही हो तुम?, लेकिन सिसकने सोना भी लगी।

बर्फ गिर रही थी। बर्फ के साथ अँधेरा गिर रहा था और अँधेरा बर्फ को दबा रहा था। रंगों की मोटी और अनन्त परतें इकट्ठा हो रही थीं। हवा बहुत तेजी से आकर कागज की खिड़की में टक्कर मार रही थी और छेदों में से अन्दर घुस आती थी। जहाँ पहले कमरों में थोड़ा-सा अँधेरा छाया हुआ था वहाँ अब गहरा अँधेरा था। लोगों के मन के भाव भी अनिश्चय की पीड़ा से गहरी उदासी में बदल रहे थे। रोने का स्वर अब दब गया था, लेकिन घायलों की कराहें अब भी सुन पड़ती थीं।

मँझली काकी ने जल्दी से बच्चे को, जो थकान के मारे सो गया था, काङ् पर लिटाया और कमरे में रास्ता टटोलने लगीं। उन्हें लगा कि कुछ होने जा रहा है।

सोना ने जैसे ही देखा कि कमरे में कोई चल रहा है, उसने अपनी उदासी को दूर फेंकने की कोशिश की। अँगीठी में लाल लाल अंगारे दहक रहे थे और उनकी बगल में काङ् भी गरमा उठा था। बर्तन से उठती हुई भाप की वजह से, अँगीठी के चारों ओर की शक्लें धुँधली हो जाती थीं। उन्होंने फिर बातें करना शुरू किया और परस्पर कुछ शुभाकांक्षाओं का विनिमय किया। ये बुड्ढी सफेद बालोंवाली दादी और छोटी लड़की के आने की आस लगाये थे।

जब भयानक उत्तरी हवा उन असीम मैदानों और दूर पास की पहाड़ियों पर अपनी दुर्दम तेजी से चलती तो चुपचाप पड़ी हुई बर्फ तितर-बितर होने लग जाती। अस्थिभेदी शीत और भयंकर अन्धकार रात्रि के साम्राज्य के स्वामी हो गये थे। चूँकि बहुत थोड़ी छतें और दीवारें बमबारी से बचकर खड़ी रह सकी थीं इसलिए निराश्रय लोग ध्वस्त धरती पर कुत्तों की भाँति पैर सिकोड़ सोते थे। कुत्ते दुम दबाये, खँडहरों में आश्रय ढूँढ़ते फिर रहे थे। छायाएँ चलती देखने पर भी केवल आँखें मूँद लेते थे। इतने थक गये थे कि इससे अधिक चिन्ता करना उनके लिए संभव न था। समस्त चेन परिवार ने पूरी रात आशा और प्रतीक्षा में काटी थी। सोना अब भी खड़ी हुई थी। बीच बीच में वह

आग में कोयला और बर्तन में उबलने के लिए पानी डालती जाती। वह बार बार पूछती, मँझले काका, तुम्हारे ख्याल में क्या दादी सच-मुच लौटेंगी ?

आज रात नहीं। आज बहुत ठंढ है। अगर मिल भी जायँगी तो मँझले काका उन्हें आने न देंगे। अच्छा बेटी अब जाओ, सोओ। चेन त्सो हान, तम्बाकू पीता हुआ काङ् के सहारे टिका हुआ बैठा था।

तुम नहीं सो रहे हो इसलिए मैं भी नहीं सोऊँगी—देखो, माँ कितनी गहरी नींद में सो रही है। फिर उसने गाँव में होनेवाली किसी नयी घटना के बारे में उसकी राय पूछी। उसने अपनी दादी के बारे में भी बातें कीं। उन दोनों को यही उम्मीद थी की वह रात को न आयेंगी। बहुत सख्त सर्दी थी।

चीखने-चिल्लाने और कराहने की आवाजें मानो हवा उनके पास ला रही हो। सोना भय से संत्रस्त हो गयी। उसने अपने काका की ओर देखा और एकदम खामोश रहने के लिए इशारा किया जिसमें वे ज्यादा अच्छी तरह सुन सकें। काका काम रोककर ध्यान से सुनने लगे। यहाँ तक कि पिताजी जो काङ् पर उनींदे से लेटे हुए थे, उठकर बैठ गये। लेकिन व्यर्थ। वे लोग जाड़े के धुँधले प्रकाश में पौ फटने तक संशय में बैठे रहे। दिन निकलने से उनकी उम्मीदें अगले दिन पर टल जाती थीं। थोड़ी ही देर में कमरे में बाहर की-सी शांति छा गयी।

बुझा बुझा सा उदास दिन निकला और आसमान का स्याह रंग पीलापन लिये हुए भूरे रंग में बदल गया। बर्फ तेजी से और बहुत-बहुत सी गिर रही थी। चिड़ियों, चूजों, कुत्तों, किसी की आवाज नहीं सुन पड़ रही थी। बर्फ सब पर थी—खँडहर मकान और टूटी, ढही हुई दीवालें। यह बर्फ थी परों और हड्डियों पर, गन्दगी पर और तमाम उस खून पर जिससे देश की धरती भींगी हुई थी। दिखायी पड़नेवाली चीज केवल एक थी, सफेद दीवाल पर काले अक्षर। चियाङ् काइ शेक की जय। कम्युनिस्टों का नाश हो। इनके अलावा और भी नारा था, जो अभी से मिट चला था और साफ़ पढ़ा न जाता था, चीन से जापानी साम्राज्य-

शाही को निकाल बाहर करो। उन पर भी बर्फ गिर-गिरकर उन्हें यों मिटाये डाल रही थी जैसे आँसुओं से धुल-धुलकर उदास चेहरा निखर आता है।

मैदान पर एक जीवित चीज धीरे-धीरे चल रही थी जो ठोकर खाती थी, गिरती थी और फिर-फिर उठती थी। कभी-कभी वह बर्फ में बिलकुल समा-सी जाती थी, लेकिन दूसरे ही पल वह फिर जोर लगाकर चलने लगती। उसके गाँव के पास पहुँचने पर यह बात साफ हो गयी कि वह एक मनुष्य की आकृति थी।

वह डोलता हुआ जीव जब फिर सड़क के किनारे गिरा तो एक कुत्ता उसके पास आया। उस जीव ने थोड़ा उठ कर कुत्ते को भगाने का प्रयत्न किया। अपने अशक्त हाथों को हिलाते और उठने की कोशिश करते हुए वह एक परिचित के मकान की ओर लड़खड़ाकर चलने लगा। कुत्ते की समझ में न आया कि यह चीज क्या थी और वह भी थका-सा उसके पीछे-पीछे चलने लगा। एक अकेली प्रेरणा से परिचालित वह विरूप मानव आकृति चेन लिङ् हान के हाते तक किसी-किसी तरह पहुँची और फिर वहीं ढेर हो गयी। उसने देखा कि एक जोड़ा पीली-पीली भूखी आँखें उसके चेहरे को घूर रही हैं लेकिन उसमें इतनी शक्ति भी नहीं थी कि उन्हें भगा दे या उधर से नज़र भी फेर सके, इसलिए वह कराही और उसने अपनी सूखी झुर्रीदार पलकें बन्द कर लीं। उसी वक्त एक दीवाल के खँडहर पर दूसरा कुत्ता दिखाई दिया और फिर उसने भी भूँकना शुरू कर दिया। पहलावाला कुत्ता कूदकर आगे बढ़ गया और दूसरेवाले कुत्ते का जवाब देने के लिए ज़ोर ज़ोर से भूँकने लगा। जमीन पर पड़ी हुई उस जीवित वस्तु ने फिर बहुत पतली आवाज में एक लंबी कराह भरी।

पिताजी, बाहर कैसा शोर हो रहा है?, सोना जग गयी थी और डरी हुई थी।

कुत्ते लड़ रहे हैं।

यह बहुत बुरी बात है। मैं उन्हें भगा दूँगी।

सोना काङ् पर से उतरी और उसने कोयले का एक टुकड़ा उठाया। वह निकलकर दरवाजे पर खड़ी हुई तो कुत्तों ने उस पर बिगड़कर भूँकना शुरू किया। उसने उन पर कोयले का टुकड़ा चलाया। कुत्ते और थोड़ी दूर हट गये लेकिन उनका भूँकना न बन्द हुआ।

कुत्तों को छेड़े बगैर भी उसका जी नहीं मानता, माँ ने शिकायत के लहजे में कहा।

मँझले काका, यहाँ हाते में कोई चीज़ पड़ी है।

सोना जब उस चीज़ की ओर बढ़ी तो कुत्ते और गुस्से के साथ भूँकने लगे। उसने उन्हें भगाया। उस 'चीज़' ने डरते डरते अपनी आँखें खोलीं और कुछ बोली। सोना चीख पड़ी—यह बाँस चिरने की-सी आवाज थी। बहुत हलचल के बाद इस चेतन आकृति को सूखे रुईदार कपड़े पहनाये गये और उसे गर्म काङ् पर लिटाया गया। उसके कुछ थोड़े से बाल उसके चेहरे को ढँक रहे थे और उसकी बुझी बुझी आँखें गड्ढों में से झाँक रही थीं। सोना अपनी माँ की गोद में सिर रखे रो रही थी। बच्चा अपनी इस दादी को जो उसे गोद में लिये रहती थी और चूमा करती थी, नहीं पहचान सका। निदान वह कमरे के एक कोने में एकदम खामोश बैठा रहा। उसके मुँह से एक शब्द नहीं निकला। मँझली काकी बूढ़ी दादी को भात का माँड़ पिला रही थी। चेन सिङ् हान डाक्टर को बुलाने चला गया था, उसकी पत्नी सुबकने जो लगी तो उसका सुबकना बन्द ही न हो—मेरी बच्ची···मुझे अपनी बच्ची चाहिए।

माँ, तुम हम लोगों को पहचानती नहीं क्या? चेन सिङ् हान ने बार-बार प्रश्न किया। लेकिन बूढ़ी माँ न तो बोली और न तो उसनेऐसा ही कोई इशारा किया जिससे पता चलता कि वह इन लोगों को पहचानती है।

उसने उसे गौर से देखा। उसका थका, ज़माने की मार खाया हुआ चेहरा जिसमें एक जोड़ा बुझी बुझी-सी, मछली की-सी आँखें जड़ी हुई थीं, उसे जली लकड़ी के टुकड़े-सा जान पड़ा। उसके हृदय की संचित घृणा ने बढ़कर लपट का रूप धारण कर लिया। हर शब्द पर रुककर,

उस पर जोर देते हुए उसने उस भावहीन आकृति से कहा—माँ मैं चाहता हूँ, कि मरते समय तुम शान्ति अनुभव करो। तुम्हारा बेटा तुम्हारी मौत का बदला लेने के लिए अपनी जान दे देगा। अब मैं केवल इसलिए जिऊँगा कि मुझे जापानियों की हत्या करनी है। मैं प्रतिशोध लूँगा, तुम्हारी मौत का, अपने बरबाद गाँव का, शांसी का, चीन का। मुझे जापानी खून चाहिए, अपने देश को धोकर साफ़ करने के लिए, उसकी धरती को उपजाऊ बनाने के लिए। ओह, मुझे जापानी राक्षसों का लहू चाहिए.........

इन शब्दों ने मानों जादू सा किया और काङ् पर लेटी हुई बुढ़िया हिली। उसके ओठ फड़क रहे थे; उसने धीरे धीरे कुछ शब्द कहे और फिर भयभीत स्वर में चिल्ला पड़ी—जापानी राक्षस......। उसने घूमकर पुत्रवधुओं और पौत्र को देखा। वह और कुछ न बोल सकी—हलाल की हुई मुर्गी की तरह जो सिर्फ पंख फड़फड़ाती है। सिर कपड़ों में छिपा कर वह एक बच्चे के समान रोने लगी।

दादी दादी।

गो कि कमरा दुःख और उदासी से भरा हुआ था, तब भी अब वहाँ पर थोड़ी आशा और जीवन का संचार हो रहा था।

२

जीने की अपनी प्रबल इच्छा के ही कारण बुढ़िया जल्दी ही चंगी हो गयी। कुछ दिन बाद एक रोज़ वह आँगन में धूप लेती हुई बैठी थी। परिवार की औरतें उसे चारों ओर से घेरकर बैठी हुई थीं। बुढ़िया ने अपनी कहानी का प्रवाह जारी रखा—लड़की चीख़ती-चिल्लाती रही, वह जब अपने पैर फैलाती तो वे ऐसे दिखते जैसे तासे पर तड़तड़ तड़तड़ के नाद के साथ गिरनेवाली बाँस की खपाचियाँ और उसका हिमश्वेत...

बस करो दादी, बस करो, मुझे डर लगता है। कहकर सोना ने अपना मुँह हाथों में छिपा लिया।

'बारी बारी से तीन जापानी राक्षसों ने उसी समय उससे...' बुढ़िया के चेहरे पर ऐसा भाव आया मानों उसे इस बात का गर्व हो कि उसने अपनी पौत्री को डरा दिया। 'वह लड़की चिल्ला तक नहीं पायी। उसका चेहरा लाल सुर्ख हो गया। दर्द के मारे उसने बूढ़ी गाय की भाँति कराहा। यह पीड़ा प्रसव की पीड़ा से भी अधिक भयानक थी। उसने याचनाभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। अपनी ज़बान काट डालो—ज़ोर से काटो। मैंने सोचा उसके लिए मौत ही अच्छी होगी।'

'दादी, दादी!' कहकर उसकी पुत्रवधू पीली पड़ गयी।

लेकिन बुढ़िया निर्ममतापूर्वक कहती ही गयी—वह मरी लेकिन अपने ही हाथों नहीं। उसकी मरी हुई गौर देह खून से लथपथ पड़ी थी। ध्यान रहे प्रसव में भी उसका इससे अधिक खून नहीं जाता। खून उसकी छाती पर था और वहाँ से वह उसकी कमर और उसके हाथों तक बह बहकर आ रहा था। उन्होंने उसके स्तनों की घुण्डियाँ दाँत से नोच डाली थीं। वे घुण्डियाँ तुम्हारे से बड़ी न थीं।' जादूगरनी की तरह उसने अपनी आँखें अपनी पौत्री पर गड़ा रखी थीं। 'उसका छोटा-सा कोयलसा मुँह बहुत बुरी तरह कटा हुआ था—सड़े सेब की तरह मसला हुआ, और इतने पर भी वह मेरी ओर अपनी बड़ी बड़ी आँखों से देख रही थी।'

बुढ़िया एकदम बदल गयी थी। क्या अब उसे अपना परिवार प्यारा न था? अगर था तो वह क्यों हमेशा वे किस्से सुना सुनाकर उन्हें तकलीफ पहुँचाती रहती थी। मगर कोई आह भरता तो उसका पारा एकदम चढ़ जाता और वह चिल्लाकर कहती, 'कायर...टेसुआ ढरकाते तुम्हें लाज भी नहीं आती! घबराओ नहीं, फिर आयेंगे जापानी राक्षस...' जब वह यह देखती कि उसके वृत्तान्त सुनकर लोगों के चेहरे गुस्से से लाल हो गये हैं तब उसे अपनी लगायी हुई प्रतिशोध की चिनगारी को लपट बनते देख सुख होता।

पहले वह अपने लड़कों के सामने अपनी कथा न कहती। उसे उनकी तीखी निगाहों से डर लगता था, उसे थोड़ी लाज भी लगती, पीड़ा भी होती और वह अपनी कथा जारी न रख पाती।

और उसने अपनी पौत्री की मृत्यु का वृत्तान्त सुनाया—उसे सैनिकों के आमोद और विलास की चेरी बनाया गया था। जापानी सैनिकों के शरीर के बीच दबकर वह डर के मारे पागल सी हो जाती और अपनी दादी और अम्मा को चिल्ला चिल्लाकर पुकारती। दो सैनिकों को 'सुख पहुँचाने' के बाद उसे घूर पर फेंक दिया गया। लेकिन वह उसके बाद भी एक दिन जीवित रही। आँसू उस वक्त भी उसके तने कुम्हलाये हुए चेहरे पर दीख पड़ते थे।' वृद्धजन समादर समाज † में जाने के पहले उसने लड़की को ज़िन्दा ही घसीटे जाते देखा—शायद कुत्तों के आहार के लिए।

उसने अपनी आँखों से तुङ्ग का को भी मरते देखा। उसने बिना अपनी पुत्रवधू (तुङ्ग का की माँ) की भावनाओं का खयाल किये, बहुत विस्तार से अपनी कथा कहना आरम्भ किया। उसने बतलाया कि तुङ्ग का बहादुर लड़का था। संगीन की नोक पर होते हुए उसने भागने की कोशिश की। वह मर गया लेकिन 'उफ' तक न की। ऐसी बहुत सी घटनाएँ थीं; अपने जीवन में उसने पिछले दस दिनों की सी यंत्रणाएँ कभी न देखी थीं। कुछ पड़ोसी अपने सगे सम्बन्धियों के बारे में पूछताछ करने के लिए आने लगे और तब वह बहुत सच्चाई के साथ बतलाती कि कैसे उसके मा बाप, पत्नी या बच्चों को कत्ल किया गया था और उन्हें कैसी कैसी यातनाएँ पहुँचायी गयी थीं!

उसकी बातचीत से लोगों पर जो असर होता उसी से उसे शान्ति तथा सन्तोष मिलता। अपने श्रोताओं से उसे समवेदना मिलती और वह यह सोचकर सुख पाती कि उसकी घृणा उसके श्रोताओं के जीवन का अंग भी बन रही है।

वह कभी बहुत बातून न रही थी। पहले कहानी कहते कहते

---

† ये सोसायटियाँ बूढ़ों के लिए सदाव्रत के ढङ्ग की चीज़ समझी जाती थीं लेकिन अधिकृत चीन में जापानियों ने इसे बूढ़ों से काम लेने का केन्द्र बना दिया था।

उसके आँसू आ जाते, लेकिन कुछ ही दिन बाद उसने उन पर काबू पाना सीख लिया और समझ गयी कि अपनी बात कहने का सबसे प्रभावशाली ढङ्ग कौन सा है।

उसने अपने अपमान की कहानी भी लोगों को सुनायी। 'वृद्धजन समादर समाज' में उसे सभी तरह के काम करने पड़ते। वह गन्दे कपड़े धोती, जापानी झण्डे बनाती। उसे कोड़े मारे गये थे। कोड़े की बात कहते हुए वह अपनी आस्तीन चढ़ाकर और कालर खोलकर वे दाग दिखलाती। हाँ, उसे एक बूढ़े चीनी के पास ज़बर्दस्ती लिटाया भी गया था। वह बेचारा बूढ़ा चीनी भी विवश था! तमाम जापानी सैनिक चारों ओर खड़े हमको देख रहे थे। बूढ़े की आँख से आँसू टपककर मेरे चेहरे पर आ गिरा था। उसने अत्यन्त पीड़ा के साथ कहा था 'मुझसे घृणा न करना।'

वह रोज़ गाँव में घूमने निकलती और लोगों के झुण्ड उसके पीछे होते। वह ज़ोर से पूछती, 'क्या तुम कभी इसे भूल सकते हो!' अगर सड़क पर उसे काफी लोग न मिलते तो वह घरों में जाकर लोगों को अपनी कहानियाँ सुनाती। अकसर सुननेवाले, बुढ़िया की भावना से स्वयं प्रभावित हो, अपने काम का हर्ज करके बातचीत में हिस्सा लेते।

अब उसे पूरा गाँव जान गया था और बच्चे खास तौर से क्योंकि वे अकसर उससे मिलने और कहानी सुनने आते।

तभी उसके पुत्रों और पुत्रवधुओं ने कहना शुरू किया, 'वह पागल हो गयी है। इसे अपने खाने और बाल ठीक रखने की सुध नहीं रहती। अब वह घर में रहना तो चाहती ही नहीं, सच्ची बात तो यह है।'

बड़ी पुत्रवधू सबसे पहले गरजती, 'हाँ, दादी निश्चय ही बदल गयी हैं। अब रूपा और तुङ्ग का तक के बारे में बात करते हुए उसकी आँख से आँसू का एक कतरा तक नहीं गिरता। मैं कह नहीं सकती, उसके दिमाग में क्या कुछ हो रहा है।'

मँझली ने अपने पति की ओर देखा। पति की मुद्रा चिन्तित थी।

चेन सिङ् हान को पहले दिन की याद आयी जब उसने उधर से गुज़रते हुए बुढ़िया को भीड़ से बात करते देखा था। वह अपनी रामकहानी कह रही थी और यकायक उस पर जैसे पागल-पन-सा सवार हो गया। सारा खून दौड़कर जैसे सिर में जमा होने लगा ; वह समझ नहीं सका कि वह क्या चाहता है, जोर से चिल्लाना, झपककर अपनी माँ को छाती से लगाना या वहाँ से भाग जाना। उसका शरीर जोर से काँपने लगा। उसी वक्त माँ ने अपने बेटे को देखा, चुप हो गयी और उसकी ओर घूरने लगी। सब श्रोताओं ने उसको देखने के लिए गर्दन मोड़ी, लेकिन हँसा कोई नहीं।

वह अपनी माँ की ओर बढ़ा और अपना हाथ बढ़ाते हुए बोला—माँ, मैं तुम्हारा बदला लूँगा।

भावावेश के कारण माँ का मुँह बिगड़-सा गया था ; उसने भी अपना हाथ बढ़ाया लेकिन फिर तुरन्त खींच लिया और हारे हुए मुर्गे की भाँति अपने ही में सिमटने-सी लगी और रोती हुई जैसे मुँह छिपाने के लिए भीड़ की ओर दौड़ी। कोई बोला नहीं। सिर झुकाये हुए वे अपने भारी कदम उठाते वहाँ से चले गये। वह उस खाली सड़क में अकेला रह गया। उसे लगा कि उसका हृदय सूना सूना है लेकिन तब भी जैसे बहुत-सी बातें बाहर न आ सकने के कारण उसका गला घोंट रही हों।

'मैं देखती हूँ हमारा सारा परिवार पागल हुआ जा रहा है।' बड़ी बहू ने फिर बहस शुरू की, 'तुम उनसे कुछ कहते क्यों नहीं, तुम्हें तो जैसे कोई चीज व्यापती ही नहीं,' उसने अपने पति को लक्ष्य करते हुए कहा।

'खूब ! भला क्या कहूँ मैं उनसे, तुम्हीं बताओ न ? देखता तो हूँ कि बहुत मानसिक पीड़ा वह पा रही हैं।'

'उसकी बात न करो, कौन है जिसका दिल नहीं रो रहा है ?'

चेन सिङ् हान फिजूल के लिए झगड़ा नहीं खड़ा करना चाहता था इस लिए वह खामोशी से अपने भाई को देखता रहा। जो कुछ उसने

कहा था, उसमें उसका भाई सहमत था। उसने घर की औरतों से पूछा कि क्या वे यह चाहती हैं कि बुढ़िया को रस्सी से बाँधकर घर में डाल दिया जाय। लेकिन जरा यह भी तो मालूम हो कि बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा है ? उसका खयाल था कि उसकी देखरेख के लिए जब तक सोना है तब तक वह नहीं बहक सकती।

उसका तीसरा बेटा लौटा, सबसे छोटा और उसे सबसे अधिक प्रिय। माँ के सफेद बालों को प्यार से छूते और थपथपाते हुए वह रोने लगा और हकला हकलाकर बोला : माँ, गलती मेरी थी। मैं अगर घर पर होता तो तुम हरगिज हरगिज जापानी राक्षसों के चंगुल में न फँसतीं। लेकिन मा, फौज में रहने के कारण सदा अपने मन की नहीं कर पाता।

'क्या कहते हो बेटा, फौज में तो तुम्हें होना ही चाहिए।' उसने अपने बेटे को देखा और बहुत सन्तोष अनुभव किया। बीस के आसपास की उम्र का छोकरा, छोटी सी जाकट पहने और कमर पर पिस्तौल लगाये। 'अब यह पिस्तौलों और बन्दूकों की दुनिया है। बेटा, बताओ तुमने कितने जापानी मारे ?'

उसे अपने इस बेटे के सामने कुछ बतलाने की जरूरत न थी—अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार की गाथा गाने की जरूरत न थी। वह जापानियों के खिलाफ़ लड़ाई की कहानियाँ सुनना चाहती थी। उनसे उसे कुछ सान्त्वना मिलती थी।

'तुम डरती नहीं न ? अच्छा तो फिर मैं तुम्हें सुनाऊँ।'

चेन लिङ् हान की आँखें चमकने लगीं। उसने खाँसा और कहना शुरू किया—हम लोग वेस्ट विलो गाँव पहुँचे और हमने लगभग बीस 'राक्षसों' का काम तमाम किया। फिर हम लोगों ने ईस्ट विलो और लगी गाँवों पर हमला किया। हम लोगों ने एक बार सानयाङ् गाँव पर कब्जा कर लिया था मगर फिर वह हमें छोड़ना पड़ा। लेकिन अब फिर हम लोगों ने उस जगह पर कब्जा कर लिया है। मुझे याद नहीं हम लोगों ने कितने जापानी मारे; लेकिन सामग्री जरूर हम लोगों के

हाथ बहुत सी लगी—तोपें, गोला-बारूद, यहाँ तक कि खाने की सामग्री भी। हमारे ही दल में वह मशहूर बहादुर चाङ् ता चुआन भी था। वह एक बार छोटी मशीनगन अपने कंधे पर मोटे रूईदार कोट के नीचे रखकर शहर ले गया था। परिस्थिति वहाँ की बहुत विषम थी इसलिए वहाँ पर वह कुछ कर नहीं पाया और यों ही लौट आया। लेकिन घर लौटते समय रास्ते में उसकी मुठभेड़ दल जापानी सैनिकों से हुई और उसने उन सबको जहन्नुम रसीद किया। एक बार हम लोगों ने एक जापानी सैनिक गिरफ्तार किया। आम नागरिकों की मदद से हमें उसे ले जाना पड़ा—इतना मोटा था वह। लेकिन ले जाते समय रास्ते से ही वह कहीं भाग गया। हम लोगों ने फिर उसे पकड़ने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन बेसूद।

बुढ़िया ने ये तमाम बातें बहुत चाव के साथ सुनीं और दूसरों को सुनाने के लिए बेताब हो उठी। अब उस पर और भी जुनून सवार हो गया था। उसका बड़ा लड़का जो कि किसान सभा का सदस्य था, नये बीज खरीदने गया हुआ था और उसका दूसरा लड़का फौज में था। उसका तीसरा लड़का घर पर बहुत कम रहता और जब रहता भी तो उससे ज्यादा कुछ फर्क न पड़ता, बुढ़िया उससे डरती थोड़े ही थी। एक शाम को उसने दो बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ मैदान में देखीं। उसने अपने लड़के से पूछा, 'वे क्या हमारी गाड़ियाँ हैं ?'

'हाँ, हमारी माल ले जानेवाली गाड़ियाँ हैं।'

'होंगी, मुझे इससे मतलब नहीं कि वो क्या माल ले जाती हैं। अगर वे हमारी हैं तो मैं जानती हूँ कि उनका क्या काम है ? मैं कल चाँग गाँव जाना चाहती हूँ।'

परिवार के सभी लोग उसकी ओर घूर घूर कर देखने लगे।

'क्या कहा ? मेरे लिए जगह नहीं है उसमें, वाह रे ! खाली खाना ले जाती है वह गाड़ी ? ले जाती होगी ! मेरे ठेंगे से ! मैं तो जाऊँगी। मैं अपने भाई भौजाई को देखना चाहती हूँ।' उसने सबके विरोध को तानाशाही ढङ्ग से खतम कर दिया।

और दूसरे रोज बुढ़िया सोना को साथ लेकर खाने की गाड़ी में वाँग गाँव की ओर रवाना हो गयी।

वहाँ उसे अपने रिश्तेदार मिले। उनसे उसने अपनी आँखों देखी यंत्रणाओं की चर्चा की। और उनके आँसुओं को देखा। उसने अपने चारों ओर बैठे हुए लोगों के चेहरों पर लिखे हुए डर और गुस्से के भाव भी पढ़े। फिर अपने बेटे से सुनी हुई उत्तेजक और उत्साहवर्द्धक कहानियों की सहायता से उसने उनके घायल जी पर मरहम लगाया और वे फिर हँसने लगे। नौजवानों को उसने छापेमारों के दल में शामिल होने के लिये तैयार किया। अगर वह उनके चेहरों पर ज़रा भी हिच-किचाहट का भाव देखती तो उसकी भवें तन जातीं और वह गुस्से से उबलकर कहती 'छिः कायरो! मौत से डरते हो! अच्छा तो रुको, आने दो जापानियों को, फिर वही उतारेंगे तुम्हें मौत के घाट। बता तो मैं चुकी ही हूँ कि वे कमजोरों को कैसे कत्ल करते हैं।'

हाँ, बहुतों ने उसकी बातें सुनीं और छापेमारों के दल में शामिल हुए। कभी-कभी वह कुछ लोगों को अपने घर लाती और उन्हें अपने बेटे के हवाले करती हुई कहती, लो ये भी तुम्हारी तरह हैं—इन्हें बन्दूक चाहिए।

वाँग गाँव के बाद एक रोज वह सोना को साथ लेकर दूसरे गाँव गयी। जाने के लिए अगर उन्हें गाड़ी न मिलती तो वे दोनों पैदल ही चल देतीं।

वह अक्सर सोना को डाँटकर कहती, 'तू भी लोगों से क्यों नहीं बात करती?' सोना सदा से ही अपनी दादी के पक्ष में थी। वह उसे प्यार करती और दादी के प्यार को सँजोकर रखती। वे जब साथ साथ चलतीं तो वह अक्सर बहुत शान्ति और सहानुभूति के साथ बुढ़िया को देखा करती और उसकी बुढ़िया दादी उसे बाँहों में कसकर छाती से लगा लेती और लंबी साँस लेती। सोना तब उदासी-मिश्रित प्यार का भाव अपने मन में अनुभव करती।

सोना बुढ़िया की जोरदार प्रशंसिका थी। जब वह अपनी दादी की

अनुपस्थिति में लोगों से बात करती तो वह अक्सर वे ही शब्द इस्तेमाल करती, गो कि ज़रा शर्माते शर्माते ।

अपने बेटों के लिए बुढ़िया का प्रेम बिलकुल बदल गया था। वे जब छोटे छोटे थे तो बिल्ली के बच्चों की तरह उन्हें उसने पाला था। तब वह यही सोचा करती कि वे जल्दी से बड़े होकर उसकी तकलीफों और मुसीबतों को बँटा लेंगे। फिर बच्चे बड़े हुए—सांड़ों की तरह मज़बूत और गिद्धों की तरह सतर्क। वे उसकी बातें न समझते इसलिए उसे अपने मन ही मन में उन्हें प्यार करना पड़ता, शान्ति के साथ थोड़ी उदासी के साथ, और उसे हरदम यही डर बना रहता कि कहीं वे उसके लिए बिलकुल अजनबी न बन जायँ और वह उन्हें ज़रा भी समझ न पाये। जैसे जैसे सब लड़के बड़े होने लगे वैसे वैसे परिस्थिति विषम होती गयी और उसके स्वभाव में भी एक दृढ़ता आ गयी। वे कभी अपनी माँ की पर्वाह करते न जान पड़ते और उसे लगता कि वह भी कभी कभी उनसे घृणा करती है। लेकिन जो हो उसे अब अपने लड़कों के प्यार की ज़रूरत और भी ज्यादा थी। इसलिए वह कमज़ोर हो गयी और बहुत जल्दी आवेश से भर उठती। अपने लड़कों के एक शब्द या संकेत से उसका हृदय द्रवित हो जाता। उसने हमेशा अपने को उनसे बँधा हुआ अनुभव किया था लेकिन अब उनके चेहरों का रंग देख देखकर ही वह अपने दिन न काटती।

उनकी निजी भावनाओं का महत्त्व अब अधिक न था। वह क्या अब उन्हें नहीं प्यार करती ? क्या वह उनसे नफरत करती है ? नहीं हरगिज नहीं, बात बस इतनी-सी है कि वह अब उन्हें एक भिन्न दृष्टि-कोण से देखती है। जब वे उसे जापानी राक्षसों की कहानियाँ सुनाते तो उसका हृदय गर्व से भर उठता। उसे यह सोचकर सन्तोष मिलता कि अपने लड़कों को बड़ा करने के लिए उसने जो जो तकलीफें उठायीं सब अकारथ नहीं गयीं।

उसकी बहुओं का बर्ताव उसकी ओर अधिक मैत्रीपूर्ण हो गया। उनकी दर्द उठानेवाली स्मृतियों और स्वर्णिम भविष्य की आशाओं ने

उन्हें एकता की डोर में बाँध दिया और उनके परस्पर सम्बन्धों में सामंजस्य उत्पन्न कर दिया। अकेले होने पर वे उसी विषय पर बात करतीं। छोटी छोटी-सी बातों पर होनेवाले उनके पहले के झगड़े खत्म हो गये और परस्पर विचारसाम्य के फलस्वरूप उनके बीच एक नये प्रेम का उदय हुआ। उनके परिवार में ऐसी एकता और ऐसा प्रेम पहले कभी नहीं देखा गया था, साथ ही उनका सोचने का ढङ्ग भी अब बिलकुल बदल गया था। उन्होंने इस बात को नहीं समझा कि इसका कारण वह बुढ़िया ही थी।

लड़के बड़ी अजीब ख़बर लेकर लौटे। कोई उससे बात करना चाहता है। जरूर इसका कारण बुढ़िया का गाँव-गाँव फिरना होगा। युवती सोना तनिक चिन्तित भाव से अपनी दादी का हाथ थामे हुए थी। दादी ने उसे ढाढ़स बँधाया।

'बेटी घबरा मत। जापानी राक्षसों से अधिक दुःख मुझे अब भला कौन पहुँचा सकता है? मुझे तो बड़ी से बड़ी तकलीफें दी जा चुकी हैं। मुझे तो नरक जाने तक में डर नहीं लगता, तो फिर अब डरने को रहा क्या?'

बड़ी बहू ने गुस्से के साथ कहा—उन्हें हमसे क्या काम हो सकता है? क्या हमारे बोलने पर भी अब रोक लगेगी? हम चीनियों के विरोधी नहीं, जापानियों के विरोधी हैं। तो आखिर उन्हें हमसे क्या काम है?

लेकिन वे बुढ़िया से आख़िर मिलना क्यों चाहते हैं? उसके बेटे की समझ में बात कुछ आयी नहीं। उसने कहा कि असोसियेशन से कोई आदमी आया था और उससे पूछ रहा था कि बुढ़िया उसकी माँ है या नहीं। इसके बाद उसने हम लोगों का पता लिख लिया। उसने कहा मेरी समझ में बात आती नहीं, लेकिन मुझे यकीन है कि कोई गड़बड़ न होगी। लेकिन जो भी हो ख़बर चिन्ता पैदा करनेवाली तो थी ही। ज़िन्दगी में और तो कभी बाहर से मिलनेवाला आया नहीं लेकिन उसने इसके पीछे न तो अपनी नींद गँवायी और न अपने को ज्यादा परेशान ही होने दिया।

दूसरे दिन दो औरतें आयीं। उनमें से एक दादी के समान पहनावा पहने थी और दूसरी वर्दी में थी और उसके बाल अँग्रेजी ढङ्ग पर कटे हुए थे।

देखने में दोनों ही कमउम्र लगती थीं। बुढ़िया दादी बिला तकल्लुफ उन्हें घर के अन्दर ले गयी। फिर उन्होंने बातचीत करना शुरू किया।

'अरे बूढ़ी माँ, तुम तो मुझको नहीं जानतीं लेकिन मैं तो तुम्हें बहुत दिनों से जानती हूँ। मैंने दो बार तुम्हारा भाषण सुना है।'

'भाषण!' वह इस शब्द को नहीं समझ सकी और उनकी ओर सन्देहभरी निगाहों से देखती रही।

'तुम्हारा भाषण सुनकर तो मैं अपने आँसू रोक ही नहीं सकी। बूढ़ी माँ, तुम जापानियों के साथ रह चुकी हो, इसलिए जो कुछ तुमने बताया होगा, वह सब तुमने अपनी आँखों से देखा होगा।'

बुढ़िया के चेहरे पर पहले से अधिक मैत्री का भाव दिखाई पड़ने लगा। उसने सोचा, अच्छा तो ये लोग खबरें जानने आये हैं।

फिर उसने अपनी कथा आरम्भ की और धाराप्रवाह बोलती गयी।

उन्होंने बहुत देर तक धीरज के साथ सुना फिर बाधा दी, 'बूढ़ी माँ, हमारा हृदय हर प्रकार से तुम्हारे साथ है। हम भी दिन रात जापानी राक्षसों से नफ़रत करते रहते हैं। हम हरदम इसी बात की कोशिश करते हैं कि हमारी चीनी जनता का प्रतिशोध लेने के लिए अधिक से अधिक लोग सैनिक का वेश धारण करें। लेकिन हम तुम्हारी तरह बोल नहीं पातीं। तुम भी आओ, हमारे महिला संघ में भरती हो जाओ। हमारा उद्देश्य इन्हीं बातों को औरों को बताना और जापानी राक्षसों के ख़िलाफ़ लड़ाई में मदद देना है।'

बुढ़िया ने उन्हें अपनी बात भी नहीं पूरी करने दी और अपनी पौत्री को आवाज दी, 'सोना, ये लोग मुझे अपने महिला संघ में लेने के लिए आये हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?' लेकिन उसने उत्तर की प्रतीक्षा न की और अपने अतिथियों की ओर मुड़ी, 'मुझे तो इन सब बातों की

कोई जानकारी नहीं है, लेकिन अगर तुम लोग कहोगी तो शामिल हो जाऊँगी, उसमें बात ही क्या है। यह कोई धोखे का खेल तो है नहीं। मेरे दो लड़के छापेमारों के दल में हैं। तीसरा किसान सभा में है। तुम्हारे महिला संघ में शामिल होने में कोई बुराई नहीं है। उसमें मेरा कोई नुकसान न होगा। लेकिन मेरी सोना बेटी को तुम लोग अपने में शामिल करो तभी मैं आऊँगी तुम्हारे साथ।' उन्होंने फौरन महिला संघ में आने के लिए सोना का स्वागत किया और बहुओं से भी शामिल होने के लिए कहा।

बुढ़िया के सदस्य बन जाने के बाद महिला संघ बड़ी तेजी से आगे बढ़ा। वह घूम घूमकर नये सदस्य बनाने लगी। औरतें जब उसे महिला संघ में देखतीं तो तुरन्त, बिना किसी हिचकिचाहट के सदस्य बन जातीं। संघ जनता के फायदे के बहुत से काम करने लगा।

और बुढ़िया प्रतिदिन यौवन-सा प्राप्त करती जान पड़ने लगी—भावनाओं और स्वास्थ्य दोनों ही की दृष्टि से।

एक दिन उन्होंने तय किया कि छापेमारों की पिछले तीन महीनों की जीतों की खुशी मनाने के लिए स्त्रियों की एक बड़ी सभा बुलायी जाय। उन्होंने उसको महिला दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया और आसपास के गाँवों की स्त्रियों की एक संयुक्त सभा बुलायी गयी। उस दिन बुढ़िया एक दर्जन लड़कियों और स्त्रियों को साथ लेकर सभा में गयी। उन्होंने अपने बच्चे साथ में ले लिये—कुछ ने गोद में, कुछ ने उँगली पकड़ाकर। लेकिन उनकी बातों का केन्द्र बच्चे न थे। वे अपने काम और अपनी जिम्मेदारियों के बारे में बातें कर रही थीं। बहुतों के पैर अभी तक बँधे हुए थे, लेकिन भीड़ के साथ चलने के कारण वे अपनी थकान भूल गयीं।

लोग पहले ही से सभास्थल पर पहुँच चुके थे। बुढ़िया के बेटे भी वहीं पर थे। बहुत से जान-पहचानवालों ने दूर ही से उसका अभिवादन किया। उसके मन में एक नया भाव उठा और उसे कुछ अस्थिर-सा कर गया। इस नये भाव में कुछ अंश लजीलेपन का था और कुछ गर्व

का। लेकिन कुछ देर बाद जब लोगों से बात करती हुई वह इधर-उधर घूमने लगी तो वह भाव उसके मन से निकल गया।

भीड़ जोरों के साथ बढ़ रही थी। बुढ़िया प्रसन्नता से भर उठी। उसने सोचा, 'अच्छा ! तो हमारे इतने समर्थक हैं !'

सभा शुरू हुई। कोई भाषण दे रहा था। बुढ़िया गौर से सुनने लगी। उसे भाषण बहुत अच्छा लगा—उसमें एक शब्द व्यर्थ का न था। कौन होगा जो उससे प्रभावित न हो। कौन है जो अपने देश की सेवा न करना चाहे। फिर उन लोगों ने उसे मंच पर बुलाया।

वह बहुत घबरा रही थी, लेकिन उसमें साहस आ गया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कुछ कुछ लड़खड़ाती हुई वह मंच की ओर बढ़ी। सब से ऊपर खड़े होकर उसने देखा कि नीचे आदमियों के सिरों का एक समुद्र-सा दूर दूर तक लहरें मार रहा था, और लोगों के चेहरे उसकी ओर मुड़े हुए थे। वह सकपका गयी—उसकी समझ ही में न आया कि क्या कहे। फिर उसने अपनी ही कहानी से शुरू किया—'मुझ बुढ़िया का सतीत्व जापानी सैनिकों ने छीना। ये देखो...उसने अपनी बाहें ऊपर को चढ़ा लीं। उसने जनता की ओर से संवेदना की एक लहर अपनी ओर आते हुए सुनी। 'तुम घबरा गये—इतने ही से।' फिर बिना लोक-लाज का ख्याल किये और बिना यह सोचे कि अपनी बात कहने में मुझे क्या तकलीफ होगी या मेरी बात सुनकर औरों को क्या तकलीफ होगी, उसने बयान करना शुरू किया कि कितनी बेरहमी से जापानियों ने उसके साथ बर्ताव किया था। उसने अपने चारों तरफ के लोगों के चेहरे देखे जो उसे बहुत उदास लगे, फिर वह गुस्से से उबल पड़ी : मुझ पर तरस न खाओ, तरस खाओ अपने ऊपर। अपनी हिफाजत करो। आज तुम मुझ पर तरस खाते हो। लेकिन अगर तुम राक्षसों का मुकाबला करने के लिए नहीं उठ खड़े होते तो खुदा न करे, मैं नहीं चाहती कि तुम पर वही बीते जो मुझ पर बीती। कुछ भी हो मैं तो आखिर बुड्ढी हूँ। मुझे बहुत दिन तकलीफ नहीं बर्दाश्त करनी है, मैं तो थोड़े दिन की मेहमान हूँ। लेकिन जब मैं तुम्हें देखती हूँ—अभी

तुम कितने नौउम्र हो, तुम्हे जीना चाहिए। जिन्दगी के मजे क्या हैं, अभी तुम नहीं जानते। क्या तुम मुझसे यह कह सकते हो कि तुम सिर्फ तकलीफें उठाने या जापानियों के हाथ अपमानित होने के लिए ही पैदा हुए हो ?

हजारों पीड़ित आवाज़ों ने उसकी बात को दुहराया, 'हम जीना चाहते हैं। हम अपमानित होकर नहीं जियेंगे।'

उसने इन हज़ारों आवाजों के दर्द और तकलीफ को महसूस किया। उसके अन्दर सिर्फ एक इच्छा रह गयी कि वह अपने को इन लोगों के सुख के लिए बलिदान कर दे। उसने फिर जोर से चिल्लाकर कहा :

'मैं तुम सबको प्यार करती हूँ अपने बेटों की तरह। मैं तुम्हारे लिए मरने को तैयार हूँ लेकिन जापानी सिर्फ मुझे नहीं चाहते, वे तुम सबको चाहते हैं। वे हमारे हजारों लाखों आदमियों के खून के प्यासे हैं। मैं अगर एक न होकर दस हजार भी होती तो भी मैं तुम्हारी हिफाजत न कर सकती। तुम्हें अपनी हिफाजत आप करनी होगी। अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो तुम्हीं को उसकी सूरत निकालनी होगी। एक वक्त ऐसा भी था जब मैं अपने बेटों को अपनी नजर से ओझल भी न कर सकती थी। आज वे सब छापेमारों के दल में हैं। हो सकता है कि एक दिन वे मारे भी जायँ लेकिन अगर वे छापेमार न बनते तो शायद और भी जल्दी मारे जाते। पर अगर तुम जापानियों को मार भगाने के लिए जिन्दा रहो जिसमें हम सभी सुख से जीवन बिता सकें तो मुझे अपने बेटों की कुर्बानी मंजूर है। अगर मेरा कोई बेटा मारा जाता है तो मैं उसे याद रक्खूँगी, तुम सब उसे याद रक्खोगे क्योंकि उसने हम सबके लिए अपनी जान दी होगी।'

उसके शब्द पूर में आयी हुई नदी के पानी के समान उबलते हुए बह चले और उसकी समझ ही में न आया कि वह अपने को रोके तो कैसे ! लेकिन उसकी भावना के उत्तार ने उसे अशक्त सा कर दिया था— वह ठीक से खड़ी न हो पाती थी। उसके पैर डगमग होते थे, उसकी

आवाज भारी हो गयी थी और अब वह जोर से न बोल पाती थी। जनता से उठनेवाला तुमुल शोर रुकता ही न था—वे और भी कुछ सुनना चाहते थे।

शब्द की तरंगों के साथ वह विशाल जनसागर जब सिर हिलाता तब ऐसा जान पड़ता मानों उसमें ज्वार आ गया हो। बुढ़िया ने अपनी सारी शक्ति बटोरकर जोर से चिल्लाते हुए कहा—'हम अन्त तक लड़ेंगे।' उसके ये शब्द तट से टकराती हुई समुद्र की लहरों के समान जनता के तुमुल गर्जन में प्रतिध्वनित हुए।

वह अपने को सहारा देनेवाले कंधों पर थकी हुई सी एकदम झुक गयी और उसने मंच के नीचे दूर दूर तक फैली हुई उद्वेलित जनता को देखा। उस क्षण उसे अपनी जनता की महत्ता का अनुभव हुआ। उसने धीरे धीरे अपनी दृष्टि उनके चेहरों पर से अनन्त नीलाकाश की ओर उठायी। उसने सभी जराजीर्ण वस्तुओं के ध्वंस और एक नये संसार की ज्योति के उदय को देखा। उसका दृष्टिपथ आँसुओं से धुँधला हो रहा था लेकिन तो भी उसके नये विश्वास का आलोक सतत बढ़ता जा रहा था।

अलेक्जैंडर कुप्रिन

अलेकजैंडर इवानोविच कुप्रिन। जन्म १८७०, मृत्यु अगस्त १९३८। मास्को के कडेट स्कूल में शिक्षा पायी। १८९० में फौज में दाखिल हुआ। १८९७ में फौज से इस्तीफा दिया। १८९५ में उसका पहला सफल उपन्यास 'द डुएल' प्रकाशित हुआ। उसके पहले फौजी जीवन के बारे में उसने कई कहानियाँ लिखी थीं। 'द डुएल' में उसने पश्चिमी मोर्चे की फौजी जिन्दगी का यथार्थवादी चित्र खींचा है और उग्र-पंथियों में उसकी लोकप्रियता बढ़ने का कारण यही है कि उसने फौज की व्यवस्था आदि पर प्रहार किया।

कुप्रिन मूलतः क्रान्ति के पहले का साहित्यकार है, क्रांति के बाद उसने बहुत थोड़ा लिखा है। इस काल की रचनाओं में उसका करुण लघु उपन्यास 'जीनेट' है जिसका मुख्य चरित्र रूस से भागकर पेरिस में बसनेवाला एक व्यक्ति है।

क्रान्ति में कुप्रिन बोलशेविकों का विरोधी था और क्रान्ति-विरोधी सेनाओं की हार के बाद रूस से चला गया। सन् १९३८ में वह सोवियत रूस वापस आया। जिस प्रकार उसके तमाम क्रान्तिविरोधी अतीत को एक तरह से भूलकर उसके देशवासियों ने उसे स्नेह और मान दिया, उसने उसको कितना

प्रभावित किया, यह तेलेशोफ़ नामके एक अत्यन्त वृद्ध सोवियत लेखक ने अपनी साहित्यिक संस्मरणों की किताब 'ए राइटर रिमेम्बर्स' में बतलाया है। वह एक अपूर्व चीज़ है।

अंग्रेजी में उसकी पुस्तकों के जो अनुवाद मिलते हैं, उनमें से कुछ ये हैं: द ब्रेसलेट आफ गार्नेट्स (१९११), साशा (१९२०), द रिवर आफ लाइफ (१९१६) ए स्लाव सोल (१९१६) यामा द पिट (जिसका अनुवाद हिन्दी में 'गाड़ीवालों का कटरा' नाम से हुआ है), द कावर्ड, द कडेट्स, द इनटेरोगेशन, द नाइटवाच, डिलिरियम, गैंब्रियस, द इनसल्ट, द क्लाउन, मोलॉक, कैप्टेन रिबनिकोफ, द स्वाम्प (जिसका अनुवाद आपके सामने है) आदि।

दलदल

वह गरमी की शाम धीमे-धीमे घिरती आ रही थी; जंगल विश्राम करने जा रहा था। एक भावपूर्ण शान्ति चारों ओर विराज रही थी। चीड़ के दरख्तों की चोटियाँ अब तक आखिरी रोशनी के हलके गुलाबी रङ्ग से रँगी हुई थीं; मगर नीचे सब कुछ अँधेरा और नम हो गया था। गोंद की गरम और खुश्क बू मद्धिम पड़ गयी थी, और उसकी जगह धुएँ की भारी गंध ने ले ली थी, जो कि किसी दूर की जंगल की आग से बहकर आ रही थी। जल्दी-जल्दी, चुपके-चुपके, दक्षिणी प्रदेश की रात ज़मीन पर छा गयी। सूरज डूबने के साथ चिड़ियों ने अपना गाना बन्द कर दिया, सिर्फ कठफुड़वे की ऊँघती हुई, काहिल आवाज अब तक झाड़ियों में गूँज रही थी।

ज्याकीन, खेत की पैमाइश करनेवाला (अमीन) और निकोलाई निकोलाईविच, विद्यार्थी जो एक छोटी-सी जागीर की मालकिन मदाम सरडुकोव का लड़का था, दोनों अपने काम पर से लौट रहे थे। सरडुकोवा (मदाम सरडुकोव का निवास-स्थान) जाने के लिए देर भी बहुत हो गयी थी और दूरी भी बहुत थी, इसलिए उन्होंने रात जंगल में चौकीदार स्टीपान के यहाँ काटने का इरादा किया। पेड़ों के बीच वह सँकरा रास्ता इधर-उधर कन्नियाँ काटता हुआ निकल रहा था। यहाँ तक कि दो कदम आगे का हिस्सा आँख से ओझल रहता था। अमीन, जो कि लंबा और सींक सा था, झुका हुआ-सा, सिर नीचे को झुकाये, लंबे रास्ते तय करने-वाले आदमी के ढंग पर झूमता हुआ चल रहा था। थलथल, छोटे पैरों

चाला नाटा विद्यार्थी मुश्किल से उसके साथ हो पाता था ; उसकी सफ़ेद टोपी गर्दन के पिछले हिस्से पर आ रही थी ; उसके लाल बिखरे हुए बाल माथे पर गिर रहे थे ; उसका एक शीशेवाला चश्मा टेढ़ा होकर उसकी भीगी नाक पर बैठा हुआ था। उसके पैर कभी पिछले साल की पत्तियों की क़ालीन पर बिछलते और कभी रास्ते की ओर निकले हुए ठूँठों से टकराते। अर्मीन उसकी इस परीशानी को देख रहा था, लेकिन वह अपनी चाल कम न करता था। वह थका हुआ, नाराज़ और भूखा था। इसलिए उस छात्र की परीशानियाँ उसे एक खास तरह का आनन्द पहुँचा रही थीं जो डाह से पैदा होता है।

उर्मीन को मदाम सरडुकोव ने जंगल के उन उजाड़ टुकड़ों की पैमाइश करने के लिए लगाया था, जो कि उनके थे, जिन्हें जानवरों ने रौंद डाला था, और जिनके पेड़ किसानों ने काट लिये थे। उनके लड़के, निकोलाई निकोलाईविच ने खुद अपनी खुशी से उसे मदद पहुँचाने का इरादा ज़ाहिर किया था। सहकारी के रूप में वह नवयुवक एकाग्रचित्त और मेहनती था, और उसकी प्रकृति ऐसी थी कि लोग आसानी से उसके मित्र बन जाते थे—तेज़, मस्त, बेलाग बात कहनेवाला और उदार, यद्यपि अब भी उसमें कुछ बचपने का शेष था, जो कि उसकी अत्यधिक जल्दबाज़ी और उत्साह में झलक जाता था। अर्मीन अधेड़ आदमी था, अकेला, कठोर और शक्की। ज़िले भर में वह शराबी की हैसियत से जाना जाता था और परिणामवश काम पाने में उसे विशेष कठिनाई होती थी, और काम मिल जाने पर पैसे कम मिलते थे।

दिन-भर तो वह नौजवान सरडुकोव के संग दोस्ती दिखलाता लेकिन रात के समय, दिन-भर की लंबी दौड़ से थका हुआ और चिल्लाने से तंग, वह बहुत चिड़चिड़ा हो जाता था। और उस वक़्त उसे ऐसा मालूम होता था कि इस नौजवान छात्र की काम में दिलचस्पी, और किसानों के घरों पर उनसे बातचीत, सब कुछ केवल बहाना है, और असल बात यह है, कि उसकी मा ने उसे मेरे संग इस गुप्त आदेश से लगा दिया है कि वह देखे कि कहीं काम के समय मैं शराब तो नहीं

पीता हूँ ! साथ ही ज्याकिन को विद्यार्थी से जलन इसलिए और भी होती थी कि वह सात दिन ही में पैमाइश संबंधी तमाम बातें समझने लग गया था जब कि खुद मियां ज्याकिन तीन बार फेल हुए थे ! निकोलाई निकोलाईविच का असंयत बातूनीपन उस बुड्ढे में खीझ पैदा करता था, और वैसी ही खीझ पैदा करता था उस विद्यार्थी का ताज़ा पुष्ट यौवन, उसकी सफ़ाई-सुथराई, उसकी विनीत सहृदयता। लेकिन सबसे ज़्यादा तकलीफ़ ज्याकिन को अपने उदास बुढ़ापे, अपने उजड्डपन, अपने कुचले हुए दिल, और अपनी पुरुषार्थहीन अन्यायपूर्ण ईर्ष्या से ही होती थी।

दिन के काम का खात्मा क़रीब आने के साथ साथ अमीन और भी उजड्ड और झगड़ालू हो जाता था। वह निकोलाई निकोलाईविच की हर ग़लती को तीखेपन के साथ बढ़ाकर कहता और उसे क़दम-क़दम पर टोकता।

लेकिन विद्यार्थी के पास युवकोचित उत्साह और अपनी मोहक प्रकृति का ऐसा अक्षय भण्डार था कि उसे कोई बात लगती ही न थी। अपनी ग़लतियों के लिए वह ऐसी तत्परता से माफ़ी माँग लेता था कि वह दिल में खुब जाती थी। ज्याकिन की तमाम डाँट फटकार का जवाब वह एक ऐसी मुक्त हँसी से देता था, जो बड़ी देर तक पेड़ों के बीच गूँजती रहती थी। अमीन के ऊपर वह सवालों और दिल्लगियों की झड़ी लगा देता था, मानो वह उसके उदास मन को सच ही बिलकुल ठीक ठीक समझ पाता हो—ठीक उसी खुशदिली, बेढङ्गी मस्त खुशदिली के साथ जिससे कोई कुत्ते का खिलन्दड़ा पिल्ला किसी बुड्ढे कुत्ते को चिढ़ाता है।

अमीन चुपचाप आँखें नीची किये चल रहा था। निकोलाई निकोलाईविच उसकी बगल में रहने की कोशिश करता था, लेकिन चूँकि वह अक्सर पेड़ों से टकराता और ठूँठों से ठोकर खाता था, इसलिए वह पीछे छूट जाता और अपने साथी को पकड़ने के लिए उसे दौड़ना पड़ता। हाँफते हुए भी वह ऊँचे स्वर में जल्दी जल्दी सजीव

भाव-भंगिमा और अप्रत्याशित शब्दावली का प्रयोग करते हुए बोल रहा था। उसकी आवाज सोते हुए जङ्गल में गूँज रही थी।

उसने अपनी आवाज को एक पैना स्वर देने की चेष्टा की करते हुए और अपने हाथ को प्रभावोत्पादक ढंग से वक्ष पर रखते हुए कहा—इगोर इवानोविच, मैं ज्यादा दिन देहातों में नहीं रहा हूँ और मैं इसे मानता हूँ, तुम्हारी बात को पूरी तरह से मानता हूँ कि मैं देहात को नहीं जानता, लेकिन अब तक मैंने जो भी देखा है उसमें बहुत कुछ इतना मोहक गहरा और सुन्दर है...हाँ, हाँ, तुम यह कहोगे कि मैं नौजवान हूँ और मेरी अक़्ल अभी कच्ची है, तुम यह कह सकते हो लेकिन एक संतुलित और व्यावहारिक बुद्धिवाले आदमी की दृष्टि से मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों की जिन्दगी को दार्शनिक दृष्टिकोण से देखो...

अमीन ने अपनी नफ़रत जाहिर करते हुए कन्धा हिलाया, और एक अजब तकलीफदेह ढंग से मुस्कराया, लेकिन चुप रहा।

—जरा सोचो भी प्रिय इगोर इवानोविच, देहाती जीवन कितनी ऐतिहासिक पुरानी चीजों का इस्तेमाल करता है। हल, हेंगा, झोपड़ी, गाड़ी—किसने इनका आविष्कार किया? किसी ने नहीं। सारी मानव-जाति ने उसे पाया। दो हजार साल पहले भी ये चीजें वैसी ही थीं जैसी कि आज हैं। आज भी उसी तरह आदमी बोता है, हल चलाता है और मकान बनाता है। दो हजार साल पहले! लेकिन कब, किस शैतान के-से पुराने युग में इस दानवसम गृहस्थी का जन्म हुआ? प्रिय इगोर इवानोविच, हम इसके विषय में सोच सकने की हिम्मत भी नहीं रखते। यहाँ पर हमें अगणित, असंख्य शताब्दियों के अँधेरे इतिहास से ठोकर खानी पड़ती है। हम कुछ भी नहीं जानते। कब और कैसे आदमी ने पहली गाड़ी बनायी? इस रचनात्मक काम को करने में कितने सैकड़ों और हजारों बरस लगे, किसे मालूम है? विद्यार्थी एकाएक अपने पूरे जोर से जल्दी से टोपी आँख पर खींचते हुए चिल्ला पड़ा—मैं नहीं जानता, कोई भी नहीं जानता...तुम चाहे किसी भी चीज को देखो—कपड़े, बर्तन, चटाई के जूते, फावड़ा, चर्खा, चलनी,

चाहे जो ले लो—लेकिन उसे पाने के लिए पुश्त-दर-पुश्त लाखों आदमियों को सिर धुनना पड़ा है। देहाती लोगों के पास अपनी दवाएँ हैं, अपनी कविता है, अपनी व्यावहारिक बुद्धि है, अपनी सुन्दर भाषा है। लेकिन उतना सब कुछ होते हुए भी, मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें कि लेखकों की दुनियाँ में एक नाम भी आनेवाली सदी के लिए नहीं जोड़ा गया, एक लेखक नहीं! मुमकिन है लड़ाई के जहाजों और दूरबीनों के मुक़ाबले में लेखक का कुछ महत्व न हो और वे तुच्छ हों; लेकिन, यकीन मानो मेरी दृष्टि में, 'अनाज से भूसी अलग करनेवाली मशीन का कहीं ज्यादा महत्व है! कहीं ज्यादा!'

'टुरुरु, टुलुलु', ज्याकीन ने एक खींची हुई आवाज में गाया और हाथ को यों घुमाया, मानो सितार के कान ऐंठ रहा हो। 'मशीन चल निकली! मैं हैरान हूँ कि तुम थकते नहीं, रोज-रोज वही पचड़ा।'

विद्यार्थी जल्दी-जल्दी बोल रहा था—नहीं, इगोर इवानोविच, तुम सुनो। इससे कोई बहस नहीं कि किसी किसान का जी किस बात में लगता है, न इससे ही बहस है कि किन चीजों पर उसकी नजर जाती है। उसके चारों तरफ हर जगह पुराना सत्य ही है, ऊपर से स्पष्ट और ज्ञानपूर्ण। हर चीज बाप-दादों के तजुर्बे से रोशन है, सब कुछ सादा, सीधा और व्यावहारिक है। और जो बात सबसे ज्यादा महत्त्व की है, वह यह कि उनके साथ मेहनत की सार्थकता का कोई भी सवाल नहीं है। मिसाल के लिए, एक डॉक्टर को लीजिए, जज को लीजिए, लेखक को लीजिए—इन पेशों में बहुत कुछ ऐसा है जिसका विरोध किया जा सकता है और जो छलनामय है। और भी मिसालें चाहते हों तो लीजिए एक मुदर्रिस को, एक जनरल को, एक नौकरशाह को, एक पादरी को...'

'कृपया धर्म को इसमें न घुसेड़िये'—ज्याकिन ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

'इगोर इवानोविच, तुम मेरी बात नहीं समझे।'—सरडुकोव ने अधीरता के साथ हाथ हिलाते हुए कहा—अगर ऐसा ही है तो बैरिस्टर को लीजिए, कलाकार को लीजिए, संगीतज्ञ को लीजिए। मुझे इन नामी-

गरामी लोगों के खिलाफ कुछ नहीं कहना है। लेकिन हर किसी ने अपने आप से जिन्दगी में एक बार यह सवाल जरूर पूछा होगा कि क्या उसका पेशा मनुष्यता के लिए उतना जरूरी साबित हुआ जितना कि मालूम पड़ता था। एक किसान की जिन्दगी इतनी सीधी सादी और एक लकीर पर चलनेवाली है कि अचरज होता है। अगर तुम वसन्त के दिनों में बोओ, तो जाड़े में खाने को पाओगे। अगर तुम अपने घोड़े को खिलाओ तो बदले में वह तुम्हारी मदद करेगा। इससे ज्यादा निश्चित और स्पष्ट भला और क्या हो सकता है? यही व्यवहारकुशल आदमी अपनी सीधी सादी जिन्दगी से खींच लिया जाता है और गर्दन पकड़कर 'सभ्यता' के हाथों में फेंक दिया जाता है। 'फलाँ दफा के अनुसार और फलाँ संख्या के लिए कोर्ट ऑफ अपील की जाँच के अनुसार आइवन सिडोरोव नामक किसान ने जाती मिल्कियत के कानून के खिलाफ फलाँ जमीन के हिस्से पर हस्तक्षेप करके जो कि फलाँ हिस्से से गुजरती है, जुर्म किया है और इसके लिए उसे सजा दी जाती है।' वगैरह, वगैरह। आइवन सिडोरोव बहुत संगत जवाब देता है: योर हाइनेस, हमारे दादा और परदादा उस विलो के दरख्त के पास जमीन जोतते थे जिसका कि सिर्फ अब ठूँठ बच रहा है।' लेकिन उसी समय दृश्य-पट पर ज्याकीन आ जाता है।

ज्याकीन ताव के साथ टोंकता है—कृपया मुझे मत घसीटो।

'अच्छा अगर इसमें तुम्हारी तबीयत खुश होती हो तो फर्ज कर लो सरडुकोव नामक अमीन आ जाता है, और कहता है: अ ब नामक रेखा, जो कि आइवन सिडोरोव की मिल्कियत को, कंपास के अनुसार खतम करती है, दक्षिण-पूर्व चालीस डिग्री तीस मिनट के कोण पर चलती है— जिसका मतलब होता है कि आइवन सिडोरोव और उसके दादा और परदादा ने उस जमीन को जोता है जो कि उनकी नहीं थी। और आइवन सिडोरोव बड़े न्यायसंगत रूप में पीनल कोड की सारी दफाओं की रू से जेल में ठूँस दिया जाता है। लेकिन वह बेचारा आदमी कुछ भी नहीं समझता और सिर्फ आँखें मुलमुलाता बैठा रहता है। वह भला तुम्हारे कंपास और चालीस डिग्री को क्या समझे जब कि उसने मा के

दूध के साथ ही यह विश्वास भी पिया है कि जमीन किसी खास आदमी की नहीं है, बल्कि ईश्वर की है ?'

ज्याकीन ने उदासी के साथ पूछा—लेकिन भाई तुम ये सारी बातें मुझे क्यों सुना रहे हो ?

'या दूसरी बात लो—आइवन सिडोरोव फौज में खदेड़ दिया जाता है।' सरडुकोव अमीन की बात सुने बिना उत्साहपूर्वक कहता गया, 'अटेंशन ! आईज़ राइट, ड्रेस वाइ दि राइट ! अटेंशन !' सारजेंट उसे सिखलाता है। मैंने भी अपने देश की सेवा दो महीने की है और मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ कि फौजी काम के लिए ये सारी बातें जरूरी हैं, लेकिन एक किसान के लिए तो ये सारी बातें फिजूल और बेहूदा हैं। तुम जो चाहे कहो, लेकिन तुम एक ऐसे आदमी से, जो एक सादी और सरल जिन्दगी से खींच लाया गया है, यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह तुम्हारी बात मान ले और यकीन कर ले कि ये सारी पेचीदगियाँ वाकई जरूरी हैं, और इनके पीछे सचमुच कोई सूझबूझ है। और वह तुम्हारी तरफ उसी तरह देखता है जैसे एक भेड़ा नये दरवाजे को।'

अमीन ने पूछा—क्या बात करने से अभी तुम्हारी तबियत नहीं भरी निकोलाई निकोलाईविच ? मैं तुमसे सच कहूँ, अब मेरी तबियत ऊब गयी है। तुम कुछ न कुछ बनने की कोशिश करते हो, लेकिन तुम जो कुछ भी कहते हो, उसमें कोई युक्ति या तर्क नहीं है। क्या तुम डान जुआन बनना चाहते हो ? इतनी सब बातें आखिर क्यों ? मैं वाकई कुछ नहीं समझ पाता।

विद्यार्थी एक झाड़ी का चक्कर लगाकर और जरा तेज चलकर फिर ज्याकीन के संग हो लिया।

'अगर तुम्हें याद है, तो तुमने आज सुबह कहा था कि किसान बेवकूफ' काहिल और जङ्गली होता है।' तुम्हारी बात में उसके प्रति नफरत थी और यही वजह है कि तुम उसके साथ उतना इन्साफ न कर सके, जितना कि तुम्हें करना चाहिए था। पर क्या तुम नहीं समझते प्रिय इगोर इवानविच, कि किसान एक दूसरी ही दुनिया में रहता है। कितनी

मुश्किल के साथ वह थोड़ासा ज्ञान पा सका है और इसी बीच हम आइंटसटाइन के रिलेटिविटी के सिद्धान्त पर बहस करने लगे हैं। तुम यह भला कैसे कह सकते हो कि किसान बेवकूफ है। तुम्हें तो उससे सिर्फ मौसम के बारे में, उसके घोड़े के बारे में, भूसी अलग करने के बारे में बात करनी चाहिए, क्योंकि वही वह जानता है, और उस मामले में उसका ज्ञान आश्चर्यजनक है। हर शब्द सादा, सार्थक, स्पष्ट और मौजूँ है'''लेकिन तुम उसी किसान से इसके बारे में एक कहानी सुनो कि वह कैसे शहर गया था और वहाँ कैसे थियेटर गया, और वहाँ पर एक बैरेल-आर्गन कैसे बज रहा था, और सराय में उसका वक्त कैसी अच्छी तरह कटा, तो देखोगे कि अपने को व्यक्त करने का उसके पास कैसा अभद्र ढंग है, और कैसी बुरी तरह बिगड़े हुए शब्दों का वह इस्तेमाल करता है! उसको सुनना मुसीबत है!" विद्यार्थी फूट पड़ा, शून्य का आश्रय लेते हुए और हाथों को बाहर की ओर फेंकते हुए मानो सारा जंगल उसके सुननेवालों से भरा हो: मैं यह मानता हूँ किसान गरीब है, रूखा और उजड्ड है, गन्दा है, लेकिन उसे आराम करने का वक्त दो। उसके ऊपर के निरन्तर तनाव ने उसे तोड़ दिया है। उसे खाने को दो, उसकी चिकित्सा करो, उसे पढ़ना-लिखना सिखाओ, लेकिन किसी भी हालत में उस पर अपनी थियरी आफ रिलेटिविटी का बोझ मत डालो। मुझे पक्का विश्वास है कि जब तक तुम लोगों को सजग नहीं बनाते, तुम्हारे कोर्ट आफ अपील के सारे फैसले, तुम्हारे कंपास, तुम्हारे दस्तावेज की तसदीक करनेवाले अफसर, तुम्हारी गुलामी सब उसके लिए, तुम्हारी थियरी आफ रिलेटिविटी की ही तरह अनर्गल बात होगी।

ज्याकीन यकायक रुक गया और विद्यार्थी की ओर मुखातिब हुआ।

'निकोलाई निकोलाईविच, मुझे तुमसे यह बकबक बन्द करने के लिए कहना ही पड़ेगा!' उसने जोर से एक बुड्ढी औरत की तरह खिन्न स्वर में कहा—तुमने इतनी बात की है कि अब मेरा धैर्य खतम हो चला। मैं अब और बिलकुल नहीं सुन सकता। और मैं सुनना चाहता भी नहीं। देखने-सुनने से तुम साधारण समझ के आदमी

मालूम पड़ते हो, फिर भी तुम इतनी आसान-सी बात नहीं समझ पाते। लेक्चर झाड़ने का मौका तुम्हें मकान पर और अपने दोस्तों के बीच मिल सकता है। मैं तुम्हारा दोस्त तो हूँ नहीं। तुम तुम हो, मैं मैं हूँ। और मैं ऐसी बातें नहीं चाहता; और मुझे पूरा हक है...'

निकोलाई निकोलाईविच ने ज्याकीन को अपने चश्मे के ऊपर से कनखियों से देखा। ज्याकीन का चेहरा अस्वाभाविक था—तंग, लंबा और आगे की ओर नुकीला, लेकिन बगल से चौड़ा और सपाट—कहना चाहिए, एक चेहरा जिसका आगा हो ही नहीं, और एक उदास दबी दबी सी नाक। और साफ हलकी गोधूलि में, विद्यार्थी ने इस चेहरे में कुछ इतनी ज्यादा ऊब और जिन्दगी के लिए कुछ इतनी नफरत लिखी देखी कि उसका हृदय करुणा से कराह उठा और उसने तुरंत बड़ी स्पष्टता से समझ लिया उस सारे ओछेपन को, उन सारी खामियों को और स्वभाव के उस अनावश्यक तीखेपन को जो उस बेचारे बदनसीब आदमी के निचाट एकाकी हृदय को भर रही थीं।

उसने मनाने के तौर पर मगर बात को अनजाने में ही और बिगाड़ते हुए कहा—खफा न हो इगोर इवानिच। मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। तुम बड़े चिड़चिड़े हो!

'चिड़चिड़े, चिड़चिड़े!' ज्याकीन ने फिजूल ही द्वेष के स्वर में दुहराया—कोई वक्त था कि मैं चिड़चिड़ा था। मैं ऐसी बातें नहीं पसंद करता, मैं तुमसे कहे देता हूँ...और भला मैं तुम्हारा साथी कैसे हो सकता हूँ? तुम शिक्षित हो, धनी हो, और मैं क्या हूँ? एक बुड्ढा, राख के रंग का, परछाईं की तरह धुँधला जीव, और कुछ नहीं।'

विद्यार्थी, जिसकी अब आंख खुल रही थी, चुप रहा। जब भी उसे रूखेपन या अन्याय का सामना करना पड़ता वह उदास हो जाता था। वह पैमाइश करनेवाले से पीछे रह गया था और चुपचाप उसकी पीठ देखता हुआ चल रहा था। और यहाँ तक कि उस आदमी की झुकी हुई, तंग और अकड़ी पीठ भी, एक तरह से उसकी बेमतलब और निकम्मी

जिन्दगी का ही पता दे रही थी, नियति द्वारा लगाये गये कठोर घूँसे, और उसका जिद्दी खोटा अहं... ।

जंगल में काफी अँधेरा हो गया, लेकिन वे आँखें जो रोशनी के अँधेरे में बदल जाने की अभ्यस्त थीं, वे अब भी दरख्तों के अस्पष्ट और कल्पित रूप को पहचान सकती थीं। न तो एक आवाज सुन पड़ी, और न कोई गति ही ; हवा घास की मीठी खुशबू से भारी थी जो दूर के खेतों से आ रही थी।

रास्ता ढालुवाँ था। एक मोड़ पर, सीलन की-सी ठंढक ने, जो मानो जमीन के अन्दर के किसी तहखाने से आ रही हो, विद्यार्थी के मुँह पर तमाचा मारा।

ज्याकीन ने बिना घूमे हुए कहा—सँभलकर चलो, यहाँ पर एक दलदल है।

निकोलाई निकोलाईविच ने तब ख्याल किया कि उसके पैरों की कोई आवाज नहीं आ रही है, मानो वह किसी नरम गलीचे पर चल रहा हो। उसके दाहिनी और बाईं तरफ छोटी छोटी उलझी झाड़ियाँ थीं, जिनके चारो ओर फैली हुई हिलती हुई शाखों को पकड़कर कुहरे के सुफेद, बिखरे हुए बादल उड़ रहे थे। जंगल के बीच यकायक एक अजीब आवाज गूँज उठी ; खिंची हुई धीमी और अजब एक उदासी से भरी हुई आवाज मानो जमीन के अन्दर ही से आ रही हो। विद्यार्थी डरकर रुक गया।

'यह क्या है ?'—उसने काँपती हुई आवाज में पूछा।

'बिटर्न † की आवाज—ज्याकीन ने रूखेपन से जवाब दिया—हम लोगों को तेज चलना चाहिए, यहाँ पर एक बाँध है।

अब कुछ नहीं दीख पड़ता था। दाहिनी और बाईं तरफ कुहरा, एक सफेद भारी पर्दे की तरह लटक रहा था। विद्यार्थी ने उसका नम और चिपचिपा स्पर्श अपने चेहरे पर अनुभव किया।

---

† एक चिड़िया का नाम।

उसके सामने एक काला हिलता हुआ धब्बा था—ज्याकीन की पीठ, ज्याकीन आगे-आगे चल रहा था। रास्ता दीख नहीं पड़ता था, लेकिन उसके दोनों तरफ के दलदल का पता लग जाता था, जिसमें से सड़ती हुई घास और नम कुकरमुत्तों की तेज बदबू आ रही थी। बाँध पैरों को नरम और गुदगुदा लग रहा था और हर कदम पर उसमें से कीचड़ बहने लगता था।

ज्याकिन रुका, सरड्डुकोव का मुँह उसकी पीठ से जा टकराया।

'होशियार रहो, फिसल जाओगे!'—ज्याकीन बड़बड़ाया—जब तक मैं चौकीदार को बुलाता हूँ तब तक अच्छा हो कि तुम रुके रहो। तुमने जरा गड़बड़ की और उस मनहूस दलदल में जा रहे!

उसने अपना हाथ मुँह से लगाया और खिंची हुई आवाज दी: स्टिपाऽऽन!

आवाज नरम कोहरे में उड़ रही थी और इसलिए धीमी और स्वरहीन मालूम पड़ी मानो दलदल की नम गैसों ने उसे भिगोकर भारी कर दिया हो।

'छिः, तुम यह भी नहीं जानते कहाँ को चलना चाहिए!'—ज्याकिन अपने दाँतों को कसकर दबाते हुए गुर्राया—मालूम होता है हमें पेट के बल घिसटकर चलना होगा। स्टिपाऽऽन! वह फिर खिझी हुई आवाज में चिल्लाया।

'स्टिपान!'—विद्यार्थी ने फुर्ती से खोखली, धीमी, गहरी आवाज में पुकारा।

बारी-बारी से उन्होंने उसे बड़ी देर तक पुकारा और तब आखिरकार उन्हें कुछ दूरी पर कुहरे के बीच से होकर पीली रोशनी का एक बेशकल धब्बा दीख पड़ा। वह इन लोगों की तरफ आता नहीं मालूम होता था, बल्कि दाहने और बायें घूम रहा था।

'स्टिपान तुम हो क्या?' ज्याकिन ने पुकारा। दूरी से एक दबी हुई आवाज आती मालूम पड़ी—गॉप, गॉप! तुम हो क्या, इगोर इवानिच?

रोशनी का वह धुँधला धब्बा कुहरे के बीच से पीला चमकता हुआ, पास आकर फैल गया, आलोकित जगह में एक विराट् परछाईं पड़ने लगी, अँधेरे में एक छोटा सा आदमी हाथ में टीन की लालटेन लिये निकल आया।

चौकीदार ने लालटेन ऊपर को उठाते हुए कहा—तो यह बात है। और वह तुम्हारे साथ कौन है? छोटे सरडुकोव तो नहीं?

'गुड ईवनिङ्ग निकोलाई निकोलाइविच। मेरा ख्याल है आप रात को रुकेंगे? मैं आपका स्वागत करता हूँ। मैं अचरज कर रहा था कि कौन हो सकता है जो मुझे बुला रहा है, लेकिन मैंने वक्त-ज़रूरत के लिए अपनी बन्दूक साथ ले ली थी।

लालटेन की पीली रोशनी के पड़ने से स्टिपान का चेहरा और भी स्पष्ट हो गया। वह घने सुन्दर बालों से घिरा हुआ था, घुँघराले और नर्म—दाढ़ी मूँछें और भवें। उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें उस घने गुच्छे के भीतर से झाँक रही थीं, और उनके चारों तरफ छोटी-छोटी झुर्रियों की भँवरियाँ उसके चेहरे को एक अच्छे पर थके हुए मुस्कराते बच्चे की भंगिमा प्रदान कर रही थीं।

'हमें चलना चाहिए।' उसने कहा और घूमने के साथ कुहरे में विलीन हो गया। उसके लालटेन से निकलता हुआ रोशनी का बड़ा, पीला धब्बा जमीन पर सिहर रहा था, और रास्ते के कुछ हिस्से को आलोकित कर रहा था।

चौकीदार के पीछे पीछे जाते हुए ज्याकीन ने पूछा—अब तक काँप रहे हो, स्टिपान?

स्टिपान की आवाज ने दूर से जवाब दिया—हाँ, इगोर इवानिच, दिन में तो इतना बुरा नहीं रहता, लेकिन रात होते ही, कँपकँपी शुरू हो जाती है। लेकिन हम लोगों को इसकी आदत पड़ गयी है, इगोर इवानिच।'

'मेरिया की हालत कुछ अच्छी है क्या?'

'नहीं, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, नहीं। बीवी-बच्चे

सबकी हालत बहुत खराब है। बच्चा अब तक तो ठीक है, ईश्वर की कृपा से, लेकिन उसे भी यह रोग लग जायेगा जरूर, वक्त आने पर। और तुम्हारा छोटा धर्मपुत्र जिसे पिछले हफ्ते हम निकोल्स्की ले गये थे...उसे लेकर तीन हुए जिन्हें हम दफना चुके।...लाओ मैं तुम्हें रोशनी दिखला दूँ, इगोर इवानिच। यहाँ पर तुम्हें होशियारी से चलना चाहिए।'

निकोलाई निकोलाईविच ने देखा—चौकीदार की झोंपड़ी खूँटों पर बनी थी, जिससे कि फर्श और जमीन के दरमियान पाँच फुट की जगह छुटी हुई थी। दरवाजे तक पहुँचने के लिए कुछ टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियाँ थीं। रास्ता दिखलाने के लिए स्टिपान ने लालटेन अपने सर से ऊपर उठायी, और विद्यार्थी ने, उसके करीब से गुज़रने पर देखा कि वह सर से पैर तक काँप रहा है और अपनी भूरी वर्दी के कॉलर में घुस जाना चाहता है।

खुले हुए दरवाजे में से एक गर्म, सड़ी हुई बदबू निकल रही थी जो कि एक किसान के मकान के लिए आम बात है, और जिसके संग पकाये गये चमड़े की खालों और सेंकी हुई रोटियों की खट्टी गंध मिली हुई थी। दरवाजे में सब से पहले ज्याकीन झुकते हुए घुसा।

'गुड ईवनिंग, मालकिन!'—उसने सरल भलमनसाहत के साथ स्टिपान की पत्नी का अभिनंदन किया।

खुले दमकले के पास खड़ी हुई एक लम्बी पतली-सी औरत ने उसकी तरफ जरा-सा मुड़कर, बिना उसे देखे, उदासी और शान्ति के साथ, अपने को नवा दिया और फिर अँगीठी में अपनी खोज-बीन में लग गयी। स्टिपान की झोंपड़ी बड़ी थी और गन्दी। वहाँ की ठण्डक और वीरानेपन ने उसे एक आदमी की उजड़ी हुई बस्ती की शकल दे दी थी। उन लकड़ी की दीवालों के रू-बरू, जो दरवाजे के सामने कोने में आकर मिलती थीं, एक तंग, लम्बी-सी बेंच, जो बैठने और लेटने के लिए यक-साँ तकलीफदेह थी, पड़ी हुई थी। बहुत-सी कालिख पुती हुई तसवीरें कोने में लटक रही थीं, और उनके दाहनी और बाईं तरफ, दीवाल से कुछ बहुत परिचित, सस्ती लकड़ी के ठप्पे की मूर्तियाँ लगी हुई

थीं।—जैसे 'आखरी नतीजा' जिसमें अनेकों हरे दैत्य और सफेद फरिश्ते दिखलाये गये थे, जिनके चेहरे भेड़ की तरह थे—'लाजरस और अमीर आदमी की कहानी', 'मानव जीवन की सीढ़ी' और 'रूसी आमोद प्रमोद।' इसके उल्टी तरफ कोने में एक समोवार रखा हुआ था जो कि झोंपड़ी का तिहाई हिस्सा घेरे हुए था। उसके ऊपर से दो बच्चों के सर दीख रहे थे, जिनके बाल इतने सुफेद और धूप से फीके थे जितने कि सिर्फ गाँव के बच्चों में देखने को मिलते हैं। पीछेवाली दीवाल के सहारे एक चौड़ा, दुहरा पलँग रक्खा हुआ था, जिस पर कि लाल छींट का परदा था। उसके ऊपर एक छोटी-सी दशवर्षीय लड़की बैठी हुई थी, और उसके पैर झूल रहे थे। वह एक चरचराते हुए पालने को झुला रही थी, और उसकी चमकती हुई बड़ी-बड़ी आँखें नये आनेवालों को डर के साथ घूर रही थीं।

कोने में तसवीरों के नीचे, एक बड़ी-सी नंगी मेज थी और उसके ऊपर छत से लगे हुए काँटे से एक अत्यन्त हीन-सा लंप लटक रहा था जिसकी चिमनी मैली थी। विद्यार्थी मेज के पास बैठ गया और उसी दम उसके ऊपर एक गहरी ग्लानि छा गयी; उसे लगा कि वह उस जगह घंटों से लाचार बेकारी की हालत में बैठा हुआ है। लंप से निकलती हुई माम की गंध ने उसके दिमाग में एक धुँधली बीती हुई स्मृति जगा दी। क्या यह सपना था या स्मृति? कब और कहाँ उसे यह मिली? उसे लगा वह एक नंगे, मेहराबनुमाँ गूँजते हुए कमरे में बैठा है जो देखने में बरामदा लगता है; एक लंप से मोम की तेज गंध आ रही थी; और दीवाल से, बूँद-बूँद करके, पानी आवाज करता हुआ अँगीठी की लोहे की पत्तर पर ढुलक रहा था, और सरडुकोव का हृदय निचाट उदासी की भावना से भर आया।

ज्याकीन ने पूछा—स्टिपान, हमारे लिए अँगीठी तो तैयार करो, और एक अंडा?

स्टिपान ने जल्दी से जवाब दिया—अभी लो, इगोर इवानिच, अभी लो।

अनिश्चितता की हालत में वह अपनी पत्नी की ओर घूमा—मेरिया, अँगीठी तो तैयार करो। ये महाशय जरा .....क्या पीना पसंद करेंगे?

मेरिया ने नाराज होकर जवाब दिया—अच्छा, मैंने सुन लिया उन्होंने क्या कहा।

वह रास्ते पर बढ़ गयी। ज्याकीन ने मूर्ति के सामने जाकर सारी अपवित्रता को अपने से अलग करते हुए अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया और मेज के पास बैठ गया। स्टिपान उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया—दरवाजे के पासवाली बेंच के ठीक किनारे पर, जहाँ पर पानी की बाल्टी रक्खी थी।

'और मैं अचरज कर रहा था कि यह कौन हो सकता है जो मुझे बुला रहा है।' उसने खुशदिली के साथ कहना शुरू किया—कहीं यह हमारा जंगल का अफसर तो नहीं है? मैंने सोचा। लेकिन उसे भला रात के वक्त कौन-सा काम हो सकता है? अपना रास्ता भी पाने में उसे दिक्कत हुई होगी। निश्चय ही वह अजीब आदमी है। वह हम सब से सिपाहियों के ढंग के आचरण की उम्मीद करता है। उसे इसमें बड़ा मजा आता है। तुम अपनी बन्दूक लेकर जाओ और यों रिपोर्ट करो—योर हाइनेस, मेरे हल्के में सब कुछ ऐसा था जैसा कि जंगल में स्थित पर्नाटिन्स्की हाउस में होना चाहिए...लेकिन फिर भी यह आदमी इन्साफपसन्द है। यह बात तो है कि वह लड़कियों की आबरू जरूर खराब करता है, लेकिन हमको इस बात से कोई सरोकार नहीं है...

वह रुका। मेरिया का सस्वर अँगीठी में कोयला झोंकना सुन पड़ा, और अँगीठी के पास के बच्चों ने भारी साँस ली। पाजाने की उदास, एकरस चरचराहट जारी थी। बिस्तर पर वाली लड़की को सरगुईव ने और गौर से देखा, और उसके उज्ज्वल सौन्दर्य और उसके चेहरे के अनोखे भाव को देखकर चकित रह गया। उसके गाल फूले फूले और उसके अंग-प्रत्यङ्ग नरम और कोमल थे, सुन्दर पारदर्शक शीशी सदृश

के टुकड़े पर बनी चित्रकारी के समान। राफायेल † के प्रारंभिक चित्रों की स्त्रियों की तरह एक स्वप्निल भोले आश्चर्य से ताकती हुई वे बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें अस्वाभाविक रूप में चमक रही थीं।

'तुम्हारा नाम क्या है ?'—विद्यार्थी ने प्यार से पूछा।

लड़की ने चेहरा अपने हाथों से ढँक लिया और जल्दी से पर्दों के पीछे छुप गयी।

'बड़ी लजीली है।'—स्टिपान ने कहा—अरी पगली, तुझे डर काहे का है!' वह एक अजब अटपटे किन्तु सहृदय ढंग पर मुस्कराया जिससे उसका पूरा चेहरा उसकी दाढ़ी में खो गया, और उसकी शकल साही जैसी हो गयी। उसका नाम वारिया है। घबड़ा मत बावली, ये महाशय तुझे मारेंगे नहीं।—उसने लड़की को ढाढ़स बँधाते हुए कहा।

'क्या वह बीमार भी है ?'—निकोलाई निकोलाईविच ने पूछा।

'ओह!' स्टिपान ने कहा। उसके चेहरे पर के झाड़ी-सरीखे बाल अलग हो गये और एक बार फिर उसकी कोमल, थकी हुई आँखें बाहर की ओर एकटक निहारने लगीं। 'क्या तुमने यह पूछा कि यह लड़की बीमार है ? हाँ, हम सभी बीमार हैं,—अंगीठी, बीबी, बच्चे—हम सब। हमने तीसरे बच्चे को मंगल के दिन दफना दिया। जगह नम है, तुम जानते हो, यही खास वजह है। हमें कँपकँपी मालूम होती है, मालूम होती रहती है। और धीरे-धीरे अन्त आ जाता है।'

'इसके लिए तुम कुछ खाते क्यों नहीं ?'—विद्यार्थी ने सिर हिलाते हुए पूछा—मेरे संग आओ, मैं तुम्हें कुनैन दे दूँ।

'धन्यवाद, निकोलाई निकोलाईविच, ईश्वर तुम्हें इस भलमंसाहत का फल दे। हमने बहुत बार बहुत कुछ खाने की कोशिश की, लेकिन कुछ नतीजा नहीं होता।'—स्टिपान ने मायूसी से हाथ फेंकते हुए कहा—हम तीन को दफना चुके...दलदल की वजह से यहाँ पर बहुत नमी है, और हवा भारी है। और निश्चल।

---

† राफायेल—इटली का विश्व-विख्यात चित्रकार।

'तुम किसी और जगह क्यों नहीं चले जाते ?'

'किसी और जगह ?'—स्टिपान ने सवाल दुहराया। ऐसा लगता था कि उससे जो कुछ कहा जा रहा है उस पर ध्यान जमाने में उसे मिहनत पड़ रही है। हर लफ्ज पर उसे अपनी सुस्ती दूर करनी पड़ती थी। 'इसमें कोई शक नहीं, महाशय, कि किसी दूसरी जगह चले जाना अच्छा होगा, लेकिन फिर भी कोई न कोई तो यहाँ रहेगा ही। घर बड़ा है, और यहाँ पर बिना चौकीदार के उनका काम नहीं चल सकता। अगर हम नहीं, तो दूसरे रहेंगे। मेरे आने के पहले चौकीदार गब्रावशन यहाँ पर रहता था, गंभीर और आजाद प्रकृति का आदमी था। पहले उसके दो बच्चे गये, फिर बीबी और सब के बाद वह खुद। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता नज़र आता कि कोई कहां रहता है। स्वर्ग में हमारा पिता जो है, वह समझदार है; वह यह बहुत अच्छी तरह जानता है कि हमें क्या करना और कहाँ रहना चाहिए।'

कोहनी से दरवाजा खोलती और बन्द करती हुई, मेरिया अँगीठी लिये अन्दर आ गयी।

'क्या कहने हैं! वाह रे, यों बैठे हुए हैं नवाबों की तरह!' वह स्टिपान पर बरस पड़ी, 'इतनी देर में तुम कम से कम प्याले तो ठीक कर ही सकते थे!'

उसने गुस्से से समोवार को आवाज के साथ मेज पर धर दिया। उसका चेहरा जो कि समय से पहले बूढ़ा हो गया था, दुबला और फीका फीका था; उसके गालों पर नन्ही नन्ही झुर्रियों की जाली के नीचे दो अंगारे-से लाल दाग थे; उसकी आँखें अस्वाभाविक ढंग से चमकती थीं। उतने ही गुस्से के साथ उसने प्याले, तश्तरियाँ और डबल रोटी मेज पर फेंक दी।

सरडुकोव चा न पी सका। उसने उस दिन-भर जो कुछ देखा और सुना था, उससे वह घबरा और टूट-सा गया था। अमीन का अकारण तीखा द्वेष, स्टिपान का एक रहस्यमय निर्मम भाग्य के सम्मुख नत भाव, उसकी पत्नी का मूक क्रोध, दलदल के बुखार से बच्चों के

एक-एक करके मरने का दृश्य—सब मिलाकर एक दम घोंटनेवाली ग्लानि उसे अनुभव हो रही थी ; वह तीखी और घोर निराशापूर्ण ग्लानि जिसका अनुभव हमें या तो बीमार कुत्ते की समझदार आँखों को या बेवकूफ की रञ्जीदा निगाहों को देखने में होता है, या कि जब हम बेगुनाह मर्दों और औरतों द्वारा झेली गयी तकलीफों, सहे गये जुल्मों और यातनाओं के बारे में पढ़ते या सुनते हैं।

अमीन ने प्याले पर प्याले चा पी, मरभुखे की तरह रोटी खायी, बड़े बड़े कौर। खाते वक्त उसके गाल की हड्डियाँ जोरों के साथ हरकत कर रही थीं, उसकी भोथरी और उदासीन आँखें, एक जानवर की आँखों की तरह सामने किसी चीज़ पर लगी हुई थीं। बहुत कहने-सुनने पर पूरे परिवार की ओर से अकेले स्टिपान ने एक प्याला पीना मंजूर किया। वह उसे बहुत देर तक और बहुत सस्वर रूप में तश्तरी पर फू-फू करके और अपने शकर के टुकड़े को कुतरते हुए पीता रहा। जब वह खतम कर चुका तो उसने अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया, प्याले को औंधा दिया और बाकी बची हुई शकर को सतर्कता के साथ एक डब्बे में रख दिया, जिस पर मक्खियों ने अनगिनत अण्डे दे रखे थे।

वक्त बहुत धीमे-धीमे और तकलीफ के साथ गोया घिसट रहा था। सरडुकोव सोच रहा था कि अभी और न जाने कितनी लम्बी और शिथिल संध्याएं उस झोंपड़े में बीतेंगी जो कि नम और ज़हरीले कुहरे के समुद्र में एक छोटे-से अकेले द्वीप की तरह उजाड़ था।

बुझती हुई अँगीठी ने एकाएक एक पतला, दर्दनाक सुर गुनगुनाना शुरू कर दिया—फैली हुई मायूसी और निराशा की प्रतिध्वनि। पालने ने चरमराना बंद कर दिया, सिर्फ जब-तब, बँधे समय के अंतर पर एक झींगुर अपना मनहूस, उबा देने वाला संगीत सुना रहा था। बिस्तर पर की लड़की ने अपने हाथ घुटनों के बीच डाल लिये और लैंप की रोशनी को विचार-मग्न होकर घूरती हुई तंद्रा-मग्न की तरह बैठी रही। उसकी बड़ी-बड़ी, अपार्थिव-सी आँखें और भी अधिक खुल गयीं, सिर

एक ओर को शिथिलता के मारे झुक गया, उस मुद्रा का भी अपना सौंदर्य था। वह इतने ध्यान से रोशनी को देखती हुई क्या सोच रही थी, क्या अनुभव कर रही थी? बार-बार उसकी पतली-पतली नन्ही-नन्ही बाँहें थकी कमजोरी के कारण आगे को झूल जातीं, और ऐसे वक्त उसकी आँखें एक विचित्र, अकथ्य, सूक्ष्म, सजल और प्रतीक्षा-भरी मुस्कराहट से आलोकित हो जातीं मानो रात की चुप्पी और अँधेरी उसके लिए एक मीठी उम्मीद लिये हुए हों। एक क्षुब्ध कर देने वाला विचार उसके भीतर उठा, जिसमें अंधविश्वास का पुट भी मिला हुआ था। उसे सारा कुनबा बीमारी की एक रहस्यमय ताकत के पंजे में जकड़ा मालूम हुआ। लड़की की अस्वाभाविक रूप में चमकती हुई आँखों को देख कर उसे शक हुआ कि उसके लिए साधारण दैनिक जीवन है भी या नहीं। धीरे-धीरे दिन अपनी रोज की चिन्ताओं और शोरोगुल और थकान पैदा करनेवाली रोशनी के साथ आ जायगा, फिर शाम आयगी और लैंप की रोशनी पर आँखें गड़ाये हुए वह क्लांत अधीरता के साथ रात का इंतजार करती हुई बैठी रहेगी, और फिर एक रोज उसी असाध्य रोग का रक्तशोषक पिशाच, उसके छोटे-से कमजोर शरीर को चूसता हुआ, उसके नन्हे से दिमाग को अपनी गिरफ्त में ले लेगा और उसे एक भयंकर, शून्य, यातनापूर्ण, नशीले सपने की बर्फानी चादर में लपेट देगा...

बहुत दिन पहले सरदुकोव ने कहीं किसी प्रसिद्ध चित्रकार की बनायी हुई 'मलेरिया' शीर्षक तसवीर देखी थी। एक दलदल के किनारे, पानी के पास, जो कुई के फूलों से ढँका था, एक बच्ची लेटी हुई थी। वह नींद में बुरी तरह छटपटा रही थी और वहीं दलदल में से एक बड़ी खूँखार आँखोंवाली, प्रेत-सी औरत जिसके कपड़ों की परतें दलदल में विलीन सी होती जान पड़ती थीं, उदासीनतापूर्वक निकली और लड़की की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगी। सरदुकोव को एकाएक यह विस्मृत चित्र याद आ गया, और वह एक रहस्यमय भीति से जकड़ गया, मानो उसकी रीढ़ के नीचे-ऊपर किसीने एक ठंडी कूँची फेर दी हो।

कुरसी पर से उठते हुए, अमीन ने कहा—अमेरिका में कायदा है कि वे बैठे बैठे रहते हैं और फिर उठकर सोने चल देते हैं। मेरिया, तुम हमारे बिस्तर तो लगवाओगी?

सब लोग उठ खड़े हुए। उस लड़की ने अपना सिर हाथों में पकड़ लिया और बिस्तर पर बिथर गयी। उसने अपनी आँखें आधी मूँद लीं। तब उसके मुँह पर एक मुदित स्वप्निल मुस्कराहट खेल रही थी। मेरिया, जम्हाई और अंगड़ाइयाँ लेती हुई बाहर चली गयी और दो मुट्ठी सूखी घास ले आयी। उसके चेहरे का रुष्ट भाव जा चुका था, उसकी आँखें कोमल थीं, उनमें एक अजीब अधीर आतुरता चमक रही थी।

जब कि वह बेंचें खींच कर उन पर घास बिछा रही थी, तब निकोलाई निकोलाईविच देहलीज तक चला गया। उसके चारो तरफ सिवाय घने, भूरे, नम कुहरे को छोड़कर और कुछ न दीख पड़ता था, और जिन सीढ़ियों पर वह खड़ा था, वे समुन्दर में नाव की तरह हिलती-डुलती मालूम पड़ती थीं। जब वह फिर अन्दर गया तो उसके बाल, कपड़े और चेहरा सब दलदल के घने कुहरे से भिंदे हुए थे, ठंडे और भींगे।

विद्यार्थी और अमीन दोनों बेंच पर लेट गये। स्टिपान ने फर्श पर स्टोव के पास एक बिस्तर जमा लिया। फिर उसने लैंप बुता दिया और बहुत देर तक कोई प्रार्थना बुदबुदाता रहा। उसके बाद वह लेट रहा। मेरिया, नंगे पैर दबे पांव बिस्तर तक गयी। झोपड़ी पूर्ण नीरव हो गयी; सिर्फ झींगुर अपनी एकरस तन्द्रालस आवाजमें गा रहा था और मक्खियाँ भनभनाती हुई बार बार आ आकर खिड़की के शीशे से टकरा रही थीं।

थकान के बावजूद सरडुकोव न सो सका। वह आँखें खोले, चित पड़ा रहा, उन चित्र विचित्र ध्वनियों को सुनता हुआ जो अँधेरी और निद्राहीन रातों में भयानक रूप से घनी हो पड़ती हैं। अमीन फौरन अंटागफील हो गया और मुँह से सांस लेने लगा जो गले की किसी पतली झिल्ली को, गलल-गलल की आवाज के साथ तोड़ती हुई आती मालूम पड़ी। बिस्तर पर अपनी मा के साथ सोती हुई छोटी

लड़की ने कुछ अस्पष्ट शब्द बुदबुदाये ; समोवार पर सोये हुए लड़के जोर जोर से साँस ले रहे थे, मानो वे उस जलती हुयी, सड़ी गर्मी को अपने होंठों से हवा फेंक कर उड़ा देना चाहते हों। स्टिपान हर साँस के साथ कराहता था।

एक निंदासे बच्चे ने चिड़चिड़ेपन के साथ पुकारा, मा, थोड़ा पानी !

मेरिया, तुरत बिस्तर में से कूदकर बाहर आ गयी नंगे पैर थपथप करती हुई कमरों को पार करके पानी की बाल्टी तक गयी। विद्यार्थी ने पानी को लोहे की सुराही में गिरते सुना, और फिर गटागट हविस के साथ बच्चे को पानी पीते सुना जो साँस लेने भर के लिए बीच-बीच में रुक जाता था। फिर सब शान्त हो गया। अमीन के गले से खर्राटों की आवाज हमेशा एक-सी निकल रही थी, और बच्चों की साँस, धुआँ फेंकते हुए छोटे भाप के इञ्जन की तरह, जल्दी और तेजी से आ रही थी। सबसे बड़ी लड़की बिस्तर पर उठकर बैठ गयी; उसने कुछ कहना चाहा, लेकिन उसके ओंठ शब्द न बना पाये ; उसके दाँत बुरी तरह बज रहे थे। 'स्स्स् सर्दी' आखिरकार उसने कहा। मेरिया ने आह भरते और प्यार के स्वर में कुछ कहते हुए एक कोट बच्ची के चारो तरफ लपेट दिया। लेकिन विद्यार्थी ने बहुत देर तक अँधेरे में उसके दाँतों का बजना सुना। सरडुकोव ने नींद बुलाने के सारे आजमूदा तरीके इस्तेमाल किये। लेकिन व्यर्थ। उसने सौ तक गिनती गिनी, अपनी रटी हुई सारी कविताओं को दोहराया और पैंडेक्ट्स † में से कानून को; उसने एक चमकते धब्बे और समुद्र की हिलती सतह पर ध्यान स्थिर करना चाहा ; लेकिन सब निष्फल। उसके चारों तरफ बुखार से पीड़ित और बीमार लोग भारी साँसें ले रहे थे, और उस गहरे घोंटनेवाले अँधेरे में उसे क्रूर, रक्त की प्यासी किसी प्रेतात्मा की रहस्यमय, अदृश्य उपस्थिति का भान होने लगा जो उस चौकीदार की झोपड़ी में आ बसी थी।

---

† दीवानी कानून का कोड जो सम्राट् जस्टीनियन की आज्ञा से छठीं सदी में बनाया गया था।

बिस्तर के पास का बच्चा रोने लगा। मा ने पालने को हलका सा धक्का दिया, और नींद से युद्ध करते हुए उसने चरमराती रस्सियों के साज के साथ एक विषादपूर्ण लोरी शुरू की :

'आ हा आ हा
भले लोग सोये हैं,
और जानवर भी...

उस उदास तन्द्रिल गीत का मद्धिम स्वर, अँधेरे में, खिंचा हुआ और भारी मालूम पड़ने लगा—और उसके उस अबोध संगीत में उसे सुदूर, धुँधले कालों का कुछ आभास-सा मिला। मानव जीवन के उषः काल में, ऐतिहासिक युगों के बहुत-बहुत पहले गुफाओं के लोगों ने भी इसी तरह गाया होगा। रात के क्षणों में अपनी असहायता से दलित, वे समुद्र के किनारे अपनी गुफा के पास, आग के चारो तरफ, रहस्यमयी लपटों को घूरते हुए बैठे रहा करते होंगे, उनके घुटने उनकी बाहों के घेरे में और उनके सिर उस उदास संगीत की ताल पर झूमते हुए।

विद्यार्थी अपने सर के ऊपरवाली खिड़की से आती हुई एक अप्रत्याशित खट-खट से चौंक पड़ा। स्टिपान फर्श पर से उठकर खड़ा हो गया। बहुत देर तक, मानो अपनी खोई हुई नींद के लिए अफसोस करता हुआ, होठ हिलाते और सर और छाती खुजलाते हुए एक ही जगह पर खड़ा रहा। फिर अपने को ठीक करते हुए वह खिड़की तक गया और शीशे से मुँह चिपकाते हुए अँधेरे में बोला—कौन है ?

खिड़की के दूसरी तरफ से एक घुटी-घुटी आवाज़ आयी।

स्टिपान ने उस अदृश्य आदमी से पूछा—किस्लिन्स्का में ? हाँ, मैं सुन रहा हूँ। अच्छा तुम जा सकते हो, भगवान तुम्हारा साथ दें। मैं फौरन आऊँगा।

विद्यार्थी ने आतुरता से पूछा—क्या बात है स्टिपान ?

स्टिपान अंगीठी के पास दियासलाई के लिए खोज-बीन कर रहा था।

उसने अफसोस के साथ कहा—अरे भई...मुझे जाना है, ज़रूर

ही। कुछ नहीं किया जा सकता। किस्लिन्स्की हाउस में आग लग गयी है, और जंगल के हाकिम ने सारे चौकीदारों को बुलाने के लिए हुक्म दिया है...अभी-अभी गुमाश्ता यहाँ आया था।

आहों, कराहों और जम्हाइयों के साथ स्टिपान ने लैंप जलाया और कपड़े पहने। जब वह बाहर निकल गया तो मेरिया धीमे से, बिस्तर में से, दरवाजा बन्द करने के लिए निकली। किसी सड़ी हुई जहरीली भाप की तरह एक झोंका, गरम कमरे के अन्दर घुस आया।

'अपने साथ एक लालटेन लेते जाओ', दरवाजे के पीछे से मेरिया ने कहा।

स्टिपान ने एक शांत खोखली आवाज में जवाब दिया, जो कि फर्श के नीचे से आती जान पड़ी—क्या फायदा? लालटेन से तो और भी रास्ता भूल जाता है।

खिड़की की चौखट पर ठुड्डी को सहारा देते हुए सरड्डकोव ने खिड़की से अपना चेहरा चिपका दिया। बाहर अँधेरी रात थी और था भूरा कुहरा। एक ठंडा चुभता हुआ झोंका खिड़की की दरार से अन्दर आ रहा था। स्टिपान के फुर्तीले, जल्दी-जल्दी उठाये हुए कदम, खिड़की के नीचे सुन पड़ते थे, लेकिन खुद वह अब दीख न पड़ता था, कुहरे और रात ने उसे निगल लिया था। बिला सवाल-जवाब, बिला शिकवा-शिकायत, बुखार से तङ्ग, रात के उस पहर में वह उठा था, और नम कुहरे में चला गया था, उसमें एक भयानक स्थिरता थी। विद्यार्थी के लिए इसमें कुछ भी बोधगम्य न था। उसने वह रास्ता याद किया जिस पर कि वह चला था—बाँध के दोनो तरफ कुहरे के सुफेद पर्दे, पैरों के नीचे की नरम, दलदली जमीन, 'बिटर्न' की धीमी, खिंची हुई आवाज—और एक बच्चे की तरह, उसे भय से रोमाञ्च हो आया। रात में उस विराट् घने, अथाह दलदल में, कैसे-कैसे विचित्र, असम्भव जीव जन्तु पलते हैं? कैसी डरावनी साँप-सी चीजें नरकुल में और विलो की गँठीली शाखों में हिलती-डोलती, रेंगती हैं? और अकेले, नियति के समक्ष विवशता से नत, हृदय में तनिक भी भय के बिना, ठण्डक से,

नमी से, बुखार से जो उसे सता रहा था, स्टिपान अब उस दलदल को पार कर रहा था, काँपता हुआ—वही बुखार जो उसके तीन बच्चों को कब्र में घसीट ले गया, और मुमकिन है बाकियों को भी ले जाय। और वह सरल हृदय, साही की-सी दाढ़ी और सहानुभूतिपूर्ण थकी आँखोंवाला आदमी, सरड्डुकोव के लिए एक अबोध्य रहस्य हो पड़ा।

विद्यार्थी की आँख थोड़ी देर को लग गयी। पीले छाया-सम चित्र और आकृतियाँ उसके सामने आयीं। अपने को सोता हुआ जानकर उसने अपने से कहा—यह तो केवल सपना है; और ये सब सिर्फ भूत। उदास धुँधली छाया के रूप में वह एक बार फिर दिन भर की अङ्कित अनुभूतियों के बीच साँस लेता रहा—तपानेवाले सूरज के नीचे सुगन्धित चीड़ के पेड़ों का निरीक्षण; सँकरा रास्ता; बाँध के दोनों तरफ का कुहरा; स्टिपान की झोंपड़ी; खुद स्टिपान और उसके बीवी बच्चे। और सरड्डुकोव ने सपना देखा, हाँ, कि अपने अमीन से व्यग्रता- और व्यथा-पूर्वक वह कह रहा है—इस जीवन का आखिर उद्देश्य क्या है? गर्म आँसू उसकी आँखों में झलक रहे थे। यह दयनीय मानव वानस्पत्य आखिर किसी के किस काम का? ग़रीब मासूम बच्चे, जिनका खून दलदल के पिशाच द्वारा चूसा जा रहा है, उनकी बीमारी और मौत में आखिर कौन-सा इन्साफ है? उनकी तकलीफों के लिए, किस्मत के पास कौन-सा हवाला है या कौन-सी दलील है? लेकिन अमीन ने गुस्से में अपनी भवें चढ़ा लीं और मुँह फेर लिया। वह दार्शनिक चिन्ताओं से थक चुका था। और स्टिपान एक सहृदय, भली मुसकान के साथ खड़ा हुआ था। उसने मानो हलके-से सिर हिलाया; उस उद्धत युवक के लिए करुणा प्रदर्शित की, जो यह न जान सका कि आदमी की जिंदगी ओछी, दयनीय और अनर्गल है, और न यही जान सका कि इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन कहाँ पर मरता है—मैदाने-जंग में, विदेश में, घर पर अपने बिछौने में, या दलदल के बुखार में।

और जब वह सोकर उठा तो सरड्डुकोव को लगा मानो वह बिलकुल

सोया ही न हो और तारतम्यहीन ढंग से इन चीजों के बारे में सोचता रहा हो। बाहर, पौ फट रही थी। रात की ही तरह अब भी कुहरा मोटा और भारी जमा बैठा था, लेकिन अब उसका रंग भूरे से बदलकर बर्फ की तरह सुफेद हो गया था और कहीं-कहीं एक ऐसे भारी पर्दे की तरह हिलता था जो कि अब उठने ही वाला हो।

सरडुकोव को सूरज देखने और गर्मी की सुबह की ताजी और साफ हवा खाने की प्रबल आकांक्षा हुई। उसने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर चला गया। नम कुहरे का एक घना झोंका उसके मुँह से आ टकराया, जिससे उसे खाँसी आयी। रास्ता पाने के लिए, नीचे झुकते हुए, सरडुकोव तेजी से दौड़कर बाँध पार कर गया और ऊपर चढ़ने लगा। उसकी मूँछों और आँख की बरौनियों को भिगोता हुआ कुहरा आकर उसके चेहरे पर जम गया; उसने उसे अपने होठों पर महसूस किया, लेकिन हर कदम के साथ साँस लेना आसान और और आसान होता गया। आखिरकार वह एक बलुई पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, और उसे ऐसा लगा कि मानो वह किसी एक अथाह गहरे, नम नरक में से बाहर आ रहा हो। एक अकथनीय आनन्द की लहर में उसकी साँस रुक गयी। उसके पैरों पर कुहरा, एक अनन्त, सुफेद, हलके चमकते हुए मैदान की शकल में छाया हुआ था, लेकिन उसके ऊपर नीला आसमान था, और सुगन्धित, हरी डालियाँ एक दूसरे से काना-फूसी कर रही थीं और सूरज की सुनहली किरणों से सारी दुनिया जगमग थी।

एडवर्ड बकलैंड

सन् १९०६ में लन्दन में जन्म हुआ। गरीबी के कारण उच्च शिक्षा न मिल सकी। चौदह साल की उमर में एक मोटर गैरेज में काम शुरू किया। उसके बाद अनेक बार बेकार हुए और अनेक ऊटपटांग काम किये।

अपने बारे में वह लिखता है :

'जब मैं यह सोचता हूँ कि कितना कुछ है जो मैं नहीं जानता, कितनी चीजें हैं जो मैंने नहीं कीं, कितनी जगहें हैं जो मैंने नहीं देखीं, तो मुझे अपने दुःसाहस पर आश्चर्य होता है कि मैं कुछ भी कैसे लिख सका। लेकिन खैरियत यही है कि ऐसा दुःसाहस मैं कम ही करता हूँ—इङ्गलैंड में शायद ही कोई ऐसा लेखक हो जो इतना कम लिखता हो।'

बकले राबर्ट्स के नाम से उसने कुछ लोकप्रिय मासिकों में कहानियाँ और कविताएँ लिखीं। सन् ३६ में हर्बर्ट हॉज के संग मिलकर एक व्यंग्यात्मक वामपक्षीय नाटक लिखा, 'ह्वेयर इज़ दैट बॉम', जो यूनिटी थिएटर द्वारा खेला गया और लॉरेन्स ऐंड विशर्ट के यहाँ से छपा है। इस नाटक को काफी सम्मान मिला।

मजदूर सभा का जोशीला कार्यकर्ता है और मजदूरों

के एक पत्र का सहकारी संपादक है। अपने कम लिखने का कारण बतलाते हुए वह कहता है कि मैं जीविकोपार्जन की चिन्ता में ही इतना व्यस्त रहता हूँ कि लिखने के लिए न तो मेरे पास समय रह जाता है न शक्ति।'

प्रस्तुत कहानी को वह अपनी सबसे अच्छी कहानी समझता है।

सड़क की लंबाई

हंटले ने पहले कभी खून नहीं किया था। जब वह आकृति जिस-पर उसने गोली चलायी थी एक अकड़ी हुई गति के साथ उछली और जमीन पर जा रही, उसे अपने आवेग की कमी पर एक हलका-सा अचम्भा हुआ। उस उछाल और अकड़ी हुई भंगिमा में इतनी कुछ भद्दी असंगति थी कि दया या दुख अरुचि में खो गया।

एनरीक, खुश था। वह हँसा और फिर उसने हंटले के कन्धों को थपथपाया।

उसने कहा—एक कम हुआ।

हंटले सड़क के पार किसान के उस टूटे-फूटे घर को देखता रहा, जिसके साथ तरु-पंक्तियाँ खत्म होती थीं।

उसने कठोर गंभीरता के साथ जवाब दिया—एक और जिन्दगी की जवाबदेही लदी।

वह थका हुआ था। वह डर जिसके साथ वह अर्से से लड़ रहा था, अब धमकियों के साथ धुँधली शक्ल में दिख रहा था। यहाँ आने में उसने कैसी बेवकूफी की, वापस लन्दन में, आना कितना सही मालूम पड़ा था। यूनियन, शाखा और पार्टी द्वारा दिया गया उत्साह और उसकी ओर सम्मान ने उसके निश्चय को बहुत सुन्दर और हिम्मती दीख पड़नेवाला बना दिया था। हर चीज ही ने उस रास्ते की ओर इशारा किया था; 'दि सोशलिस्ट' नाम के पर्चे के लिए फरवरी में मैड्रिड का उसका सफर, जबान पर उसका अधिकार, वैलेंशिया में

उसके ताल्लुकात—एक तरह से यह नामुमकिन ही होता कि वह न आता। उसने यश की दमक में मकान छोड़ा था।

यहाँ पर, सब मुख्तलिफ था। वह उनके अहसान के बारे में शक नहीं करता था, लेकिन अगर थोड़ी ख्याति उसे और भी मिल सकती तो अच्छा था।

यहाँ पर प्रदर्शन और तकरीरें नहीं थीं। ये लोग अपनी जिन्दगी और अपनी आजादी के लिए लड़ रहे थे, और किसी भी चीज के लिए उनके पास वक्त नहीं था। उन्होंने सिर्फ उसे स्वीकार कर लिया, उन्होंने सिर्फ उससे उतना ही देने की उम्मीद की जितना वह खुद दे रहे थे।

बहुत ठीक। बेशक, स्वाभाविक भी। सिर्फ...

हुंटले को झंडों और तकरीरों, सिर्फ लफ्जी तजवीजों, शुक्रिया या विश्वास की वोटों, इज्जत और स्तुति की ही बान पड़ी हुई थी। इन लोगों की जान पर खेलनेवाली खूँखारी ने उसे डरा दिया, और अपने बारे में उसका शुबहा जो उस इतवार को थर्लो स्कायर में शुरू हुआ था, धीरे-धीरे पक्का हो चला।

उस चिरस्मरणीय इतवार तक, उसने हमेशा यह मान किया था कि अगर मौका आये, तो उसका क्रांतिपूर्ण काम भी उतना ही तेज़ और निश्चित होगा, जितना कि उसका क्रांतिपूर्ण भाषण। लेकिन घुड़सवार सिपाहियों की आगे को बढ़ती आती हुई एक कतार उस आदमी के लिए बड़ी भयावनी चीज होती है जिसने फुटबाल की भीड़ से ज्यादा उग्र कोई चीज न देखी हो। हुंटले जब तक कि कतार उस तक आये, उसके बहुत पहले उछलकर भाग चला था, बेशर्मी के साथ भागा था, और अपने से नफरत करते हुए भागा था। यह कि औरों ने भी ऐसा ही किया था, यह कि उसका वहाँ टिका रहना भी बेकार और बेमतलब होता, उसे आराम न पहुँचा सका। वह डर से भागा था; बाद की कितनी ही सफ़ाइयों और दलीलों ने उस शर्म और डर को जो तब से बिलकुल गायब कभी नहीं हुआ, हलका या कम नहीं किया।

किसी ने उसकी बाँह को छुआ। यह लियोकेडियो था। वह अपनी

घुटनों से उठा और अपनी राइफल उस दूसरे को दे दी, जो उसकी जगह में, खिड़की के पीछे, टॉमस की बगल में, जा धँसा। हंटले, टूटी हुई आराम कुर्सी पर एनरीक से जा मिला और पानी की पेश की हुई बोतल से धीरे-धीरे पीने लगा। वह ताज्जुब कर रहा था कि एक बार मौत की क्रिया का सामना कर लेना इस तरह की अनंत थकान और तनाव से अच्छा है या नहीं।

एनरीक बोल रहा था, उस खास तरह की लय में जो वैलेंशिया-वालों की अपनी बात है।

'......क्योंकि यहाँ पर हम सिर्फ मर ही सकते हैं। किसी न किसी को जाना ही होगा।'

हंटले अचानक उठ खड़ा हुआ।

'क्या ? क्या हुआ ? किस के बीच से जाना होगा ?'

एनरीक ने खिड़की की तरफ इशारा किया।

'लुई को। कल, दोपहर तक, फ्रैंको के हबशी आ जायँगे। तब सब खत्म समझो। लियोकेडियो कहता है वह जायगा।'

हंटले अचकचाया हुआ, खिड़की की तरफ नजर गड़ाये रहा। यह गैरमुमकिन है। इस बिल से निकलने का अकेला रास्ता गाँव की उस सड़क के बीच से था। पीछे चढ़ी हुई और दुर्गम नदी, और दोनों तरफ दलदली झाड़ियों के होते हुए, दूसरा कोई रास्ता मुमकिन न था। और सड़क उस खेत से लगे मकान द्वारा संचालित होती थी, जिसके अन्दर मुट्ठी भर बागी थे। यह सच था कि जब तक राजभक्तों के कब्जे में वह मकान था, बागी सड़क से इस ओर नहीं आ सकते, लेकिन वे आखिर आयें ही क्यों ? उन्हें तो सिर्फ वक्त गुजारना था। सड़क के बीच से भला कौन गुजर सकता था ? क्या हंटले ने अभी उस लापरवाह बेवकूफ को गोली नहीं मार दी थी जिसने खेत से लगे मकान के ओसारे से आगे चले आने के सिवा कुछ नहीं किया था ?

'यह नामुमकिन है।' उसने कहा।

'इसे नामुमकिन नहीं होना होगा। नामुमकिन तो है मरना जब

इतना काम करने को बाकी है। या—हम लोग पकड़े जा सकते हैं, जो कि बदतर है। हम सिर्फ इतना जानते हैं। टॉमस के पास कागज़ात हैं......नहीं, सुनो। जब अँधेरा हो जायगा, लियोकेडियो, चुपचाप, बिला अपनी रायफल लिये जायगा, जिसमें अड़चन न हो। सड़क के आखीर में एक गहरी खाई है। उसी के अन्दर से वह मकान को पार कर सड़क पर पहुँच सकता है। और फिर तीन कोस के अन्दर वेन्टोरिलो है, जहाँ वह फोन कर सकता है और जब तक चढ़ाई करनेवाले उसके पास न पहुँच जायँ, छुपा रह सकता है। फिर उसने महसूस किया कि वह इधर से उधर झुलाया जा रहा है।

'और अगर वह पकड़ा गया ?'

'दूसरा जाता है। एक को पार जाना ही होगा। इसका महत्व जितना तुम समझते हो, उससे ज्यादा है।'

हंटले ने अपनी ठुड्डी को हाथ का सहारा दिया और केहुनी घुटनों पर टिकायी।

'मैं समझता हूँ तुम ठीक कहते हो', उसने थकान के साथ कहा—सिर्फ अगर तुमने गाँव को उस वक्त छोड़ दिया होता जब मैंने कहा था, तो हम कभी यों कटकर अलग न हो जाते।

एनरीक ने उसकी ओर पैनेपन के साथ निहारा।

'तुम नहीं...लेकिन तुम थके हुए हो, साथी! अँधेरा होने तक धीरज रखो, और तब तुम देखोगे!'

अपने मजाक से खुश उसने दूसरे की ओर देखकर मुसकरा दिया और फिर लियोकेडियो से बातचीत करने के लिए खिड़की तक गया। हंटले दीवार पर गिर पड़ा और अपनी थकान और आकांक्षाओं से भारी आँखें उसने बन्द कर लीं।

उसने फिर महसूस किया कि वह इधर से उधर झुलाया जा रहा है। उसने आँखें अँधेरे में खोलीं और एक पल के लिए इस खयाल में रहा कि वह नाव में है, अपनी सोने की जगह में। तब उसे होश हुआ कि कोई उसे झकझोर रहा है। खुरक और चकराया हुआ, वह उठ

बैठा, और खिड़की की मद्धिम रोशनी के पट पर खिंची हुई उस शक्ल पर आँखें गड़ाने लगा। यह था एनरीक।

'लियोकेडियो जा रहा है। हमें पहरा देना होगा। आओ।'

वह अकड़ा हुआ उठा और अपनी राइफल ली। एक कोने में लियोकेडियो चुपके-चुपके टॉमस से बातें कर रहा था। वह उनके पास गया और लियोकेडियो की तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया।

'सौभाग्य साथ हो', उसने अंग्रेजी में कहा।

लियो ने खुशी के साथ दाँत गड़ाये। 'क्या जरूरत!' उसने आनन्द के साथ जवाब दिया—शायद वही सारी अंग्रेजी थी जो कि वह जानता था—और फिर दूसरों की तरफ मुखातिब हुआ।

'अगर सब खैरियत रहे, तो मैं दो घंटे में लुई पहुँच जाऊँगा। अगर तुम तीन घंटे में एक लाल बमगोला न देखो—तो खैरियत नहीं रही, यही समझना।'

बिला एक और शब्द कहे वह चला गया।

शेष लोग सैन्य-सज्जित खिड़की के पास भीड़ लगाये यों खड़े थे, कि उनके बीच में जगह केवल राइफलें घुमाने भर की थी और वे धुँधली सड़क को आँखें स्थिर कर घूर रहे थे। सौभाग्य से अँधेरा था गो कि थोड़ी देर बाद चाँद आ जायगा अगर उसे बादलों ने न छुपा लिया। उन्होंने बाहर एक मद्धिम सरसराहट सुनी, गोया चूहों की हो, और उन्होंने देखा कि उस पलस्तर के ढेर पर जो कभी ओसारा था, एक परछाईं करीब-करीब अदृष्ट-सी डोल रही थी। फिर वहाँ कुछ न था। सिर्फ घनी चुप्पी और अँधेरा।

हंटले को अपने साथियों की साँस की आवाज उस पंप की-सी मालूम पड़ी जिसमें दरार हो। स्वयं उसकी साँस मुश्किल से आ रही थी, मानो वह फेफड़े से नहीं बल्कि पेट से खींची जा रही हो। दस कभी न शेष होने वाले मिनट शेष हुए। उसके हाथ की घड़ी की चमकदार सुई नौ की ओर दहशत के साथ बढ़ी। और, कोई आवाज नहीं आयी।

अब वह चुपके-चुपके गा रहा था। वह लंदन के बारे में गांव के,

पार्टी के 'दि सोशलिस्ट' के दफ्तर के बारे में सोच रहा था। हे भगवान्, लेकिन लियो भी था हिम्मती! अब तक तो उसने सब्र कर लिया होगा। इस वक्त वह निश्चय ही खाई' में होगा। बेशक वह पानी से भरी होगी, लेकिन पानी की एक बूँद से क्या?

उस चीख ने जो एक कुत्ते के अकेले भूँकने की तरह आ रही थी, उन्हें लकवा-सा मार दिया और फिर वह एकाएक रुक गयी गोया घोंट दी गयी हो। इसके बाद भागते पैरों की आवाज सुन पड़ी। सड़क की अँधेरी ने जैसे तीखी लपटें उगलीं। आधी दर्जन राइफलें स्फोट के साथ जा पड़ीं। एनरीक ने कुछ बातें कहीं जो हंटले की समझ से बाहर थीं, मुहावरेदार, डरावनी बातें—धीमी पर गंभीर मानो वह प्रार्थना कर रहा हो। टॉमस खिड़की के चौखटे के किनारों पर, बग़ल को झुका हुआ था, और हंटले, बिना जाने कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, गुस्से के साथ गोली चलाने लगा। अँधेरे में दिन से ज्यादा तेज आवाज जान पड़ी, एक शोर जो गिर्जेघर के शोर-सा बेमतलब था।

इसके बाद कोई भी इंसानी आवाज नहीं सुन पड़ी। जरा ही देर में बागियों ने गोली चलाना बन्द कर दिया, और हंटले ने भी। फिर, घनी शान्ति उन्हें आशंका और अनिश्चय से सताने के लिए लौट आयी। बहुत देर तक उन्होंने आँखों और कानों पर जोर दिया, नहीं तो कहीं लियोकेडियो लौट आये या बागी रात में हमला करने की कोशिश करें। हवा की हर साँस, हर चलती-फिरती परछाईं', डर जगाती थी। फर्ज करो उन्होंने गोली दाग दी, और वह लियो हुआ, तो? और मान लो, उन्होंने गोली न चलाई और ये फाशिस्त बागी निकले, तो?

एनरीक ने कहा—मैं अभी देखने जाऊँगा।

टॉमस ने कहा—नहीं, मैं जाऊँगा।

हंटले ने थर्लो-स्कायर के बारे में सोचा। कम से कम, मौत वहाँ दीख तो पड़ती थी।

पौने दस बजे, चाँद टूटे हुए बादल के टुकड़ों में से अचानक निकल आया, और गाँव पर एक धूमिल उँजियारी फेंकने लगा। आधा चलने

पर सड़क के उस तरफ एक आकृति पड़ी हुई थी, निश्चल। वह सड़क पर पड़ी थी, चेहरा नीचे को था, शक्ल या कपड़े से पहचानना उसे नामुमकिन था। उस पार हल्का-सा दीख पड़ता हुआ, खेत से लगा, घर था, या जैसा कुछ कि पिछले हफ्ते की लड़ाई ने उसे साबूत छोड़ा था।

कुछ मिनटों में चाँद छुप गया और अँधेरा फिर छा गया। लेकिन जब थोड़ी देर बाद, रोशनी फिर आयी, पहले से जरा तेज, तब एनरीक ने हंटले की बाँह कसकर दबोची।

'देखो! वह खलिहान के ज्यादा करीब है!'

यह सच था। वह आकृति, अपनी पिछली जगह से तीन-चार गज दाहनी तरफ थी। बागियों ने भी इस बात को देख लिया था, क्योंकि राइफलें फिर गूँजीं। एक झटके के साथ वह आकृति आधी उठी और सड़क पर मोड़ और घुमाव की चेष्टा करते हुए लँगड़ाकर चलने लगी। यह लियोकेडियो था, स्पष्टतः, घायल। चाँद फिर ढँक लिया गया, और जब वह फिर नजर आया, सड़क खाली हो गयी थी। टॉमस ने उल्लास के आवेश में एनरीक को झकझोरा।

उसने उफनकर कहा—वह बचकर निकल गया। निश्चय ही वह अब खलिहान के दरवाजे में होगा।

एनरीक ने कहा—वह बुरी तरह घायल हो गया है, अब वह बचकर नहीं निकल सकता। मैं जाऊँगा।

हंटले को स्वयं अपनी आवाज कूक की तरह मालूम हुई जब उसने कहा:

'मैं जाऊँगा।'

उसने यह भी उसी वजह से कह डाला जिस वजह से उसने जिन्दगी-भर और सारी बातें कही थीं—क्योंकि यह नाटकीय-रूप में मौके के खयाल से मौजूँ था। उसकी शिक्षा लेखक की तरह हुई थी—नाटकीय तत्व उसकी अंदरूनी चेतना में बिंधे हुए थे। इस प्रकार उसने पार्टी के घरेलू नौकर, सेक्रेटरी, संवाददाता, जुलूस के झंडा-

असदार, सब हैसियत में अपनी खुशी से काम किया था। कभी-कभी उसे अपने दिये हुए शब्द को वापस ले लेना पड़ता था, क्योंकि उदारता आदमी को नकल करने की ओर झुका देती है। लेकिन अब एनरीक ने धीमे से कहा :

'यह सबसे अच्छा है' और एक इशारे से टॉमस के उठनेवाले विरोध को घोंट दिया।

हंटले ने अपने तईं मंजूर किया कि एनरीक नेता है, प्रकृतरूप में मनोवैज्ञानिक। उसने जाना कि एनरीक सब कुछ समझता है। तब उस वैलेंशियन के प्रति उसकी घृणा में प्रशंसा मिली हुई थी। उसने गौर के साथ आदेशों को सुना, यह विश्वास करने की कोशिश करते हुए कि उसकी कँपकँपी रात की ठंडी हवा के कारण है, और जब और कुछ कहने को न रह गया, तो उसने अपनी राइफल दीवाल के सहारे टिकायी और दरवाजे की ओर बढ़ा।

एनरीक ने अपना हाथ बढ़ा दिया। 'हम लोग मैड्रिड में फिर मिलेंगे,' उसने कहा। हंटले को अँधेरे के कारण खुशी थी। उसने व्यग्र टॉमस से भी हाथ मिलाया और पक्के फर्शवाले आँगन में खिसक गया।

नदी से आती हुई ठण्डी हवा के कारण बाहर बहुत सर्दी थी। सड़क पर जाने की हिम्मत करने के पहले, उसने चाँद के छुपने का इन्तज़ार किया, क्योंकि उसकी प्रगति रह-रहकर उगने और छुपनेवाले चाँद के पर्दे में, रुक-रुक कर हो सकेगी। इन्तजार करने के साथ, उसने सड़क को समझा ; वह खाकी सड़क जिसकी धूल मेंह से कीचड़ हो गयी थी, वे बेडौल क्रमहीन इमारतें, जो एक दूसरे से अलग और कटी हुई थीं, जिनके बीच पेड़ और घास के छोटे चौतरे बिखरे हुए थे। इस गाँव पर जहाँ पिछले हफ्ते सैन्य-दल ठहरा था, बुरी तरह गोले बरसाये गये थे और मकानों में सिवाय दीवालों और टूटी शहतीरों के और कुछ नहीं बच रहा था। फिर भी खँडहर का अगवाड़ा बेडौल सा था, जिसके पीछे अँधेरे में एक होशियार आदमी परली तरफ खाई तक पहुँच सकता था।

और खास अगली मंजिल के लिए था उस अधजले खलिहान का ठिंगना डील, जो घायल लियोकेडियो को छुपाये हुए था।

और जब वह इन्तजार कर रहा था, हंटले ने अपनी ऐलबर्ट हाल की वक्तृतावाली रात को याद किया; किस तरह तब भी उसने उसी घुटी हुई साँस के साथ, उसी दुर्बल मन के साथ, जीत की जरूरत से उस ओर को खिंचते हुए फिर भी भागकर गायब हो जाने की आकांक्षा करते हुए समय बिताया था। उस वक्त उसने भाषण दिया था, विजय-माल पहनी थी, उसका डर विजयोल्लास में बदल गया था। क्या उसका जीवन हमेशा वैसा ही नहीं रहा? भय—यत्न—विजयोल्लास?

थर्लो स्क्वायर को छोड़कर।

ओह, उसे फेंको भी जहन्नुम में! इसे तो ऐलबर्ट हॉल होना चाहिए, थर्लो स्क्वायर नहीं। सड़क ओझल हो गयी; दीवालें परछाईं में जा डूबीं। करीब-करीब खुश वह चला।

ओसारे से सड़क तक के नन्हें फासले को एक तेज चाल में। विराम। कीचड़ से दूर रहो, नहीं कहीं जूतों की किर्र-किर्र न सुन ली जाय। फिर उस कङ्करीट और छड़ों के उलझे ढेर पर, जो कभी बारजा था। चाँद ऐसा मरा हुआ था गोया कभी पैदा ही न हुआ हो; और तय किये हुए फासले के खयाल से उसका हौसला बढ़ा। सड़क से जरा हटकर, मलबे के कूड़े-करकट से भरा हुआ चौतरा। निश्चय ही, यह बड़ा मकान रहा होगा। एक पक्का आँगन जो किसी राजगीर का चबूतरा मालूम पड़ता था, जिसके चारों तरफ वह चक्कर काटता रहा होगा। अब फिर जल्दी से उस धुँधली खाकी रेखा द्वारा राह पहचानते हुए, जो कि सड़क थी पगडंडी पर।

खलिहान से सिर्फ पचास गज के फासले पर उसने बादलों को फटते देखा और एक नीची मुँडेर की आड़ में दुबककर छुप गया। अब वह खलिहान के इतने करीब था कि उन पर्देदार खिड़कियों और दरारों को देख सके जिनके द्वारा उनकी रक्षा होती थी।

झूठा खतरा। बादलों का छँटना सिर्फ क्षणिक था और वह रोशनी नहीं

आयी जिसका सख्त अन्देशा था। हंटले ने सोचा कि वह सफर भी उसके जीवन से कितना मिलता-जुलता है। भयभीत संशय, आकस्मिक प्रयत्न, थोड़े साफ। नामुमकिन बातों की आशंकाएँ जो आशंकाएँ ही रहीं। आखिरकार यह भी आसान ही था—बिलकुल उसके जीवन की तरह। तुम डर रहे थे, लेकिन तुमने हिम्मत बाँधी और आगे बढ़ आये—और कामयाब रहे। अपने उस मिलान पर वह खुशी से मुसकराया तक।

मुँडेर को छोड़कर एक ऐसी जगह को पार करते हुए, जो कभी घिरा हुआ बाड़ा रहा होगा, वह झुकने से बिलकुल दोहर ही जाते हुए खलिहान की तरफ दौड़ा। और चूँकि जिन्दगी भी उसी तरह की चीज है, उजाला, चढ़ते हुए पानी की चुपचाप तेजी के साथ, सड़क में फिर फैल गया। घबराहट ने उस पर छापा मारा। वह टूटी हुई चहारदीवारी छलाँग मारकर साफ पार कर गया और खलिहान की ओर दौड़ा पर देख लिया गया।

खलिहान में तभी बिठाले हुए उन पहरुओं ने उसके कूदने के पहले से ही गोली चलाना शुरू कर दिया था, इसलिए दौड़ के वे पाँच सेकण्ड एक विस्फोट-से हो गये। किसी और दौड़ की खूँखार तेजी ही उसका अकेला बचाव थी। वह गोली जो उसकी बाईं जाँघ में लगी, एक भारी चोट की तरह महसूस की गयी, बिला पैनेपन के, जब तक कि वह खलिहान के दरवाजे में तेजी के साथ, मुशकिल से साँस पाता हुआ एक ढेर की तरह लड़खड़ाकर गिर न गया। तब थोड़ी देर को महफूज, उसे दर्द अनुभव करने और डरने का अवकाश मिला। जिस दिशा से वह आया था, उधर से उसके साथियों द्वारा बागियों से बचाव करने के लिए छोड़ी गयी गोलियों की आवाज आयी, और तब एक बार फिर शान्ति छा गयी।

'इतना गुल न करो।' एक महीन आवाज ने कहा, और उसने महसूस किया कि वह जोर से सिसक रहा था। लियोकेडियो, मुश्किल से खुले दरवाजे के भीतर दाहनी ओर, दीवाल के सहारे उठंगकर इस

तरह बैठा हुआ था कि वह खलिहान पर नजर रख सके। हंटले फर्श पर, अपने को [illegible] की ओर घसीट ले गया।

वह बुदबुदाया, 'मैं चोट खा गया हूँ। क्या तुम भी?'

जैसे [illegible] मुस्कराया, लियो के दाँत अस्पष्ट-से दीखे। उसने फिर कहा—

'जरा भी नहीं।' फिर स्पेनिश में, 'मुझे अपना घाव देखने दो। मेरे पास पट्टियाँ हैं।'

'तुम्हारा क्या हाल है?'

'कोई बात नहीं। मैं अब चल नहीं सकता। लेकिन अगर तुम बुरी त[illegible] नहीं चोट खा गये हो, तो तुम—पट्टियाँ बँध जाने पर—चल सकते हो।'

हंटले का भीतर और बाहर सब कुछ जैसे विद्रोह कर उठा।

'चला चलूँ? मरना इससे अच्छा होगा।' उसने अपने मोजों की पट्टियाँ सरका लीं और ब्रीचेज को जाँघ से नीचे गिरा दिया। अँधेरे में काले, उमड़ते हुए खून ने उसे ठेस पहुँचायी। और पहले कभी भी उसके इतना खून न बहा था। लियोकेडियो ने, एक कड़ेपन और नम गुरगुराहट के साथ, जिनसे डाक्टर भी चौंक उठता, उसके जख्म को मैदानी पट्टी से मोटे और भद्दे रूप में बाँध दिया।

उसने कहा—यह (जख्म) छोटा है। गोली सिर्फ छूती हुई निकल गयी और अंदर नहीं दाखिल हुई। मैं, मुझे तो तुममें से एक ने मार दिया!'

आवाज सुनने पर अपने उन्मत्त गोली चलाने को स्मरण करते हुए, हंटले ने उसे घूरा।

'हे ईश्वर!' उसने धीरे से कहा, और उस तिक्त मजाक का स्वाद अनुभव किया। उसके न होने भर से, लियो शायद निकल जाता, और उसे इस सब से नजात मिल जाती।

'मैं अब फिर वहाँ बाहर नहीं जा रहा हूँ।' उसने जमे हुए दाँतों के बीच से कहा। इस खबर के प्रति कि उसने लियो को मार दिया है,

अपनी प्रतिक्रिया के कारण वह अपने से नफरत कर रहा था। दूसरे ने अपना सिर दीवाल के सहारे टिका दिया और प्रतीक्षा करने लगा।

हंटले ने बाहर सड़क की तरफ देखा जो चाँदनी में खाकी हो रही थी, और उस बिपत और तीखेपन के खिलाफ जो उस पर छापा मार रहे थे, अब संघर्ष बंद कर दिया। आखिरकार यह था जीवन से वास्तविक मिलान। उसका सारा जीवन एक ज्यों-त्यों आधी रौशन सड़क के बीच एक जोखिम का सफर था। सारी जीतें, सारे रोड़ों पर फतह पाना और फासले का तय करना, सब कुछ इस ओर ला रहा था, फंदे में फँसे हुए जानवर की तरह धीमे-धीमे प्राण तोड़ने की ओर। और किस लिए? यह सब किस मसरफ का था—जिन्दगी के बीच उसका सफर, उस सड़क के बीच उसका सफर, जब कि दोनों कट जायँगे, और बिलकुल बेकार?

इस परदेशी जगह में जब कि लड़ाई और खून की बू उसके नथनों को भर रही थी, उसे घर की दारुण चाह हुई। लंदन के ख्याल ने उसके चिथड़े कर दिये। उसने सूरज में चमकती हुई ग्रेज़ इन रोड की ट्रामलाइनें देखीं, बिशप पार्क के नीचे सिहरन के साथ बहती हुई टेम्ज़ देखी, 'दि सोशलिस्ट' के दफ्तर में का घिसा हुआ फर्श देखा। वह यहाँ क्या कर रहा है, एक स्पेनिश गाँव में खून बहते जाने से मर रहा है, जब कि इंगलैण्ड में हजारों उसके-से ही मजदूर इन सब बातों से बरी अपनी औसत जिन्दगी बसर कर रहे थे? वे अब सिनेमा में होंगे—सिनेमा में!—संगीतालयों में, कुत्तों के 'शो' में। कुछ—उसके-से ही बेवकूफ!—मीटिंगों में, सभाओं में, प्रदर्शनों में होंगे; शायद यहाँ आने के हेतु वे सिंहद्वार।

उसने शर्ली का कांतिपूर्ण और कोमल चेहरा देखा, जब कि वह उसे बिदा करने आयी थी; शर्ली जिसके साथ उसने इतने दिन काम किया था, और जिसे उसने देने कहा तो बहुत था पर दिया था बहुत कम।

काश उसके मरने पर कुछ बाकी रहता—काश जिन्दगी का कुछ मतलब होता! लेकिन कहीं कुछ न था। लन्दन लौटने पर था थर्लो

स्क्वायर, यहाँ यह खलिहान का खँडहर। दोनों हालतों में सिवाय दर्द और तकलीफ के और कुछ नहीं हासिल। और बाहर चाँदनी में निकल जाने में सिर्फ तत्क्षण मौत और कैद के बीच ही चुनने को है।

लियोकेडियो, जो मानो मन का भेद पहचानता हो, फिर बोला।

'क्यों अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हो? यहाँ तक तुम आये हो—सिर्फ मरने के लिए। कल हबशी आ जायँगे। लेकिन आज रात तुम अब भी खाई' तक—और लुई—पहुँच सकते हो। क्या यहाँ हम लोग रोकर और आराम कर एक दुनिया बनायँगे?'

'तुम खुद क्यों नहीं जाते? मैं क्यों जाऊँ? जब मरना ही है तो जैसे कहीं और वैसे यहाँ।'

'कामरेड, मैं अब फिर कहीं न जा सकूँगा। लेकिन तुम...अगर तुम निकल जाओ तो बहुत कुछ कर सकते हो। और अगर नहीं—खैर, तुमने कोशिश कर ली होगी। पर—स्पेन तुम्हारा देश नहीं है। शायद हम तुमसे ज्यादा मांग रहे हैं।'

वह चुप हो गया, मुश्किल से साँस लेते हुए। बहुत अँधेरा हो चुका था और देहली के उस पार मेंह की एक धार गिरने लगी। दूर पर एक आदमी जोर से खाँसा। एकाएक लियोकेडियो आगे की ओर व्यग्र होकर झुक गया। हंटले ने अँधेरे तक में उसकी चमकती आँखें अनुभव की।

'फिर भी यह तुम्हारा देश है' वह एक डरावनी बुदबुदाहट में चीख पड़ा—'सारा संसार हमारा देश है। क्या हम लोग भाई नहीं हैं—क्या हम लोग वहाँ साथ-साथ काम नहीं करते जहाँ मानव आजादी माँगता है? कल यह जर्मनी और इटली था। आज स्पेन है। शायद कल, तुम्हारा इंगलैण्ड होगा!'

उसकी आवाज में कुछ था जिससे जोश उमँगता था। उसने हंटले को उकसा दिया, जैसे कि पहले भी ऐसी पुकारों ने अकसर किया था। वह बेचैनी के साथ बोला।

'अगर इसके लिए नहीं, तो फिर तुम यहाँ हो किस लिए? नहीं

तो तुम पैदा ही क्यों हुए थे, अगर कोशिश करने के लिए नहीं ? देखो—तुमसे पहले आनेवाली हर पीढ़ी ने तुमको पैदा करने में मदद की है। तुम्हारा सारा जीवन इस एक क्षण की ओर तुम्हें लाता रहा है। इंगलैण्ड में तुम्हारे काम के बारे में मैं जानता हूँ। वह एक कायर और गद्दार का काम नहीं है। तुम्हारा सारा काम तुम्हें इस ओर लाया है, इस देश की ओर, इस सड़क की ओर, इस खलिहान की ओर। क्या तुम इस सबको अब यों ही फेंक दोगे ? तुम्हारे साथियों के प्रति यह दगा है—अपने प्रति इससे भी बदतर कुछ। एक सफल जीवन जो निकम्मी मौत द्वारा निकम्मा कर दिया गया ? तुम्हारे इंगलैण्ड में लोग क्या कहेंगे ?'

वह पीछे को लुढ़क गया, चूर होकर। हंटले गतिहीन था और दरवाजे की तरफ, जो अँधेरे में सिर्फ एक धुँधली छाया-सा मालूम पड़ता था, घूरता हुआ बैठा रहा। यह सब सच था। यह उसके सड़क और जिन्दगी के मिलान का सही जवाब था, कि आया वह आधे रास्ते रुक जायगा, या चला चलेगा। इधर आधी सड़क पर, वह घायल, उसका उद्देश्य अपूर्ण, थी असारता। इधर आधे जीवन पर, वह डरा हुआ, उसका काम रुका हुआ, थी नपुंसकता।

उसने स्पष्टतया, बिना शंका या राग के देखा, कि यह कोई राजनीति का सवाल नहीं है। समस्या राजनीतिक निमित्तों से, उपयोगिता से बहुत ऊपर थी। यह एक आसान-सा सवाल था, क्या जिन्दगी का कोई मतलब है ? अगर है तो उसे चले चलना चाहिए। बचकर निकल जाय, अगर मुमकिन हो, मर जाय अगर जरूरत हो—लेकिन मरे, चेष्टा करते हुए।

जीवन में शायद पहली बार मानव-कर्तव्य का परिज्ञान उसे हुआ, जीवन को जगाये रखने का कर्तव्य, वह कर्तव्य जो अकेला मानव को मिला है—मनुष्य जाति के प्रति कर्तव्य। सही या गलत ये ही थीं उसकी धारणाएँ, ये ही उसके साथी। यदि इस वक्त वह चूका तो उसे सचमुच शायद किसी ऐसी चीज का सामना करना पड़े जो वस्तुतः मौत से खराब हो—एक अपूर्ण, निष्फल जीवन।

उसने एक बड़ी लम्बी साँस खींची।

'क्या मैं तुम्हारे जरा भी जोड़-पैबन्द लगा सकता हूँ?' उसने पूछा।

लियोकेडियो ने, बोलने से परे, सिर हिलाया।

'आँ—शुक्रिया। मैं—मैं अब चलूँगा।'

लियो ने इशारा किया और हंटले उसकी ओर झुका।

'यह तो मैं हूँ जो तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ', वह बुदबुदाया, 'अब लो मेरा कोट उतार लो और खुद पहन लो। उसमें...' उसने धीमे अस्पष्ट रूप में बुदबुदाकर दूसरे को वह सारा प्लान समझा दिया जो उसने एनरीक के साथ तय किया था कि अगर सब कुछ नाकामयाब रहे, तो उस योजना को पूरा किया जाय। एक प्लान जिसने हंटले को डर के मारे अधमरा कर दिया। लेकिन जितनी नरमी से हो सकता था, उसने उस कराहते हुए आदमी के ऊपर से कोट उतार लिया और प्लान को दिमाग से दूर रखने की कोशिश करते हुए, उसे मेहनत करके पहन लिया। आखिर काम हो गया। उसने लियो के हाथ को एक पल के लिए छुआ और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

वह अपनी जाँघ की चोट भूल गया था, लेकिन पैर पर ज़ोर पड़ने पर, उसे ऐसा लगा मानो एक आरे से काटी गयी हड्डी ऐंठ रही है। दर्द से उसका मुँह बिगड़ा, वह कराहा-सा, फिर दाँत पर दाँत जमा लिये और लँगड़ाकर बाहर हो गया।

अब बारिश सख्त हो रही थी और घुप्प अँधेरा था। अपने रास्ते को शांति के साथ पहचानते हुए, अपने दिमाग से बिना आवाज बढ़े जाने के खयाल के अलावा और तमाम खयालों को बाहर कर, वह सतर्कता के साथ सड़क की ओर बढ़ा और खलिहान की खिड़की में से निकलती हुई अकेली रोशनी की ओर मुड़ा।

उस जगह से, जहाँ उसने सड़क पायी, दस गज की दूरी पर एक काली परछाईं उसके पीछे मालूम पड़ी। उसके सर के पुश्त पर कोई चीज जोर से लगी, और वह लड़खड़ाकर एक दूसरी परछाईं की बाहों में

जा रहा। थोड़ी देर को जीवन में सिर्फ हड़बड़ संभ्रम, अटपटी वेदना, धींगामुश्ती और ठेल-ठाल ही शेष रह गयी।

फिर उसका दिमाग साफ हुआ। वह खलिहान में फिर लौट आया था। कोई उसे कॉलर से ताकत के साथ पकड़े हुए था और एक दूसरी धुँधली आकृति हाथ में चोरबत्ती लिये खड़ी थी, जिसकी रौशनी लियो पर पड़ रही थी।

'देवी मेरी!' रौशनीवाले आदमी ने धीमी आवाज में कहा, और रोशनी लाश पर से फिरा ली। लेकिन कैदी के सब कुछ देख लेने के पहले नहीं। उसने सोचा कि हर गोली जो उसने चलायी होगी निश्चय ही लियो को लगी, जो कि अब भी हंटले को कायरता और पराजय से बचाने के लिए काफी वक्त जिंदा रहा। तो शायद, उसके जीने का कुछ मकसद रहा।

सड़क के ऊपर खलिहान तक का चलना, पीठ से दो राइफलें लगी हुई, यों लगा कि जैसे कभी खत्म ही न होगा। उसने कई बार सोचा कि वह दौड़ेगा और जल्दी से मौत पा लेगा, लेकिन वह अपने को किसी तरह भी इस प्रयत्न के लिए तैयार न कर सका। और सर और पैर के दर्द से लड़ना ही बहुत काफी था। वह वक्त जानने को उत्सुक हुआ। एनरीक और टॉमस को छोड़ने के बाद से दुनिया ही बदल गयी थी। क्या अभी सिर्फ एक घंटा—दो घंटा हुआ था? वाह रे दिल्लगी कि यहाँ का कीचड़ भी विलायत के कीचड़ से कितना ज्यादा चिपचिपा है। मिट्टी है, शायद। क्या उसको पकड़नेवाले स्पेन के हैं या इटली के? इस हिस्से में अनेकों इटैलियन हैं। यह भी कितनी साफ बात होनी चाहिए थी कि वे खलिहान को घेर दे सकते थे। अगर वह सड़क पर वहाँ तक चला जा सके, वे भी वैसा ही कर सकते थे। लेकिन वह तो अपनी इज्जत के बारे में सोच रहा था। उसकी इज्जत! वह हँसा, और उसके पकड़नेवालों में से एक ने उसे सिसकते जानकर संगीन से गोदा। उसने सोचा कि बेशक उसने इनमें से एक को मार दिया था। वे इसे भूल नहीं सकते।

उस खेत से लगे मकान की रसोई नीची और लंबी थी, एक पुरानी अँग्रेजी सराय से मिलती-जुलती-सी। एक खुरदुरी मेज पर दो अफसर बैठे हुए थे। चार बन्दूक से लैस आदमी खिड़कियों पर पहरा दे रहे थे। चार और, धूम्रपान करते हुए, कमरे के उस सिरे पर बैठे हुए थे। 'दस', उसने शान्त भाव से सोचा।

उनमें से एक अफसर बात कर रहा था। हंटले के सिर में इतनी सख्त तकलीफ हो रही थी कि वह इन चीजों की ओर ध्यान दे सके ऐसा मुमकिन न था। किसी ने उसी नुकीली चीज से गोदा।

'आँ ?' उसने अस्पष्टता के साथ कहा—आँ—हाँ। हम लोग बारह थे। एक मर गया है। और मैं यहाँ हूँ। बाकी बचे दस, हुजूर !'

'क्या यही सच है ?'

'हाँ ?'

'क्या इसकी तलाशी ली गयी है ?' एक अफसर ने पूछा।

कैद करनेवालों में से एक ने कहा—अभी नहीं, हुजूर ! हमने सोचा इसे अंदर ले आना ही अच्छा होगा, शायद इसके साथी इसे बचाने की कोशिश करें।'

मेज पर एक घड़ी पड़ी थी। उल्टी तरफ से उसे पढ़ते हुए उसने देखा कि ग्यारह बजने को पाँच मिनट है। अंग्रेजी घड़ी-सी मालूम देती थी। उसने बनानेवाले का नाम पढ़ना चाहा जो उसके चेहरे पर लिखा हुआ था। पहला अफसर और भी सवाल पूछ रहा था। राइफल की नली द्वारा गोदा जाता हुआ, वह भी ध्यान देने की कोशिश कर रहा था। मेज यों काँप रही थी जैसे गर्म हवा में मरीचिका। उस तेल के बड़े लंप की रोशनी में बीस आदमी दीख रहे थे और उनमें से एक भी स्थिर न था।

'तुम क्या कर रहे थे ? कहाँ जा रहे थे ? क्या तुम्हारे अफसर भी हैं ?'

उसने यों ही थकी हुई-सी हालत में, अटकलपच्चू जवाब दिये। वे जेनरल मैत्सो से मिलने की कोशिश कर रहे थे। मैड्रिड में। हाँ,

उनके एक अफसर था। नाम ढूँढ़ने में बहुत दिक्कत हो रही थी। उसने कहा अफसर का नाम हंटले है। हाँ, वह अंग्रेज है।

और सवालात। उसे खुश्की और बेहोशी-से मालूम हुई। खतरनाक सवालात। चीजें जो कि वह जानता है और हरगिज नहीं बताना होगा। हरगिज नहीं। फर्ज करो वे तत्क्षण मौत की सजा देने कहें? क्या वह उसे सह सकेगा? क्या वह बोल देगा?

यहाँ पर अन्दर बहुत सर्दी थी। वह सोच रहा था कि क्या इंगलैण्ड में भी सर्दी होगी। शर्ली एक फर का कोट खरीदने जा रही थी। वह खुद उन बड़े, ऊँट के बाल के कोटों में से एक चाहता था। नफीस चीजें। लेकिन...

'इधर देखो,' उसने अचानक, अंग्रेजी में, विस्मित अफसरों से कहा—मेरे पास एक कोट है! लियो ने मुझे दिया!'

उस स्पेनिअर्ड ने मेज पर घनी आवाज के साथ हाथ पटका।

'इसे वहाँ ले जाओ और इसकी तलाशी लो,' वह कड़ककर बोला।

पहरेदारों के आने के पहले उसे याद हो आयी। अफसर के आदेश और पहरेदारों के उसके स्पर्श करने के बीच के एक सेकेंड में, उसकी चेतना जाग गयी। अगर उसकी तलाशी ली गयी, या अगर उसने सब कुछ बतला दिया, तो फिर सड़क का उसका सारा सफर, जिन्दगी के बीच उसका सारा सफर किस काम का? उसे लियो का कोट याद हो आया था और लियो का आखिरी प्लान।

वह चीखा, 'नहीं। इसकी जरूरत नहीं है। मैं बीमार हूँ, घायल। अब मैं एक पल भी खड़ा नहीं हो सकता। मैं तुम्हें बतला दूँगा। मुझे—मुझे इन नक्शों के साथ लुई की सराय तक निकल जाना था। देखो, उसके अंदर ही सब कुछ है। इसके बाद, तुम फिर कुछ न पूछोगे!'

उन्माद के साथ उसने अपने कोट के लंबे जेब में सर्र से हाथ डाला और एक मोटा, कागज में लिपटा और रबड़ की मजबूत पट्टी से कसा हुआ पार्सल निकाल लिया। शायद काँपती हुई उँगलियों से उसने रबड़ की पट्टी नोचकर फेंक दी।

कमरे का हर शख्स, जितनी कि हिम्मत कर सकता था उतने करीब मुँह लगाकर बड़ी उत्सुकता से उसे देख रहा था।

उसने जान-बूझकर पार्सल मेज पर, अफसरों के सामने रखा, और किसी ने ढीले कागज में उस उभरन को नहीं देखा, जहाँ पर रबड़ की दाबती हुई पट्टी से छूटकर ढेकली बम के बाजू से ऊपर को उठ गयी थी।

अगले तीन सेकेंड में हंटले बहुतेरी सड़कों से गुजरा।

इसके पहले कि धड़ाके की चमक और आवाज खत्म हो, एनरीक सड़क पर दौड़ रहा था और टॉमस भी उसके बगल में। सड़क पर अब पहरा न था, लेकिन एनरीक आँसुओं के कारण मुश्किल से दौड़ पा रहा था।

चुनचान यी

चुन चान ये एक नौजवान चीनी लेखक हैं। लड़ाई जब शुरू हुई तब वे तोकियो में थे। जापानियों ने उन्हें बहुत यातनाएँ दीं। चीन लौटने पर उन्होंने चीनी फौज में कुछ दिन काम किया और फिर जापानियों द्वारा अधिकृत चीन से निकलकर वे स्वतंत्र चीन चले गये जहाँ स्कूलों में अध्यापन ही उनका मुख्य कार्य रहा। सन् ४४ में वे चीन के सम्बन्ध में भाषण देने के लिए चीन की मिनिस्ट्री आफ इन्फ़र्मेशन की ओर से इंगलैंड गये। आजकल किंग्स कालेज, केम्ब्रिज में अँग्रेजी साहित्य पर कुछ खोज का कार्य कर रहे हैं। अँग्रेजी में उनकी पहली कहानी सन् ३८ में 'न्यु राइटिंग' में छपी। अभी हाल में उनका एक संग्रह 'द इगनोरंट ऐंड द फारगॉटेन' प्रकाशित हुआ है जिससे प्रस्तुत कहानी ली गयी है।

मेरे चाचा और उनकी गाय

उन दिनों जब मैं छोटा था, हम लोग मध्यचीन में यॉंग सी नदी की तराई में रहते थे और तब मैं अपने चाचा की गाय के साथ, जिससे वे खेत जोतने का काम लेते थे, बहुत खेलता था। बड़ी प्यारी गाय थी वह, मेहनती और सहनशील, जैसी कि गाँव की किसान औरतें होती हैं; मगर वह उनकी तरह व्यर्थ की बकवास न करती थी। जब वह बहुत थक जाती तो खामोशी से सिर लटका लेती, धीरे-धीरे मुँह चलाती रहती, यहाँ तक कि उसके मुँह के इर्द-गिर्द फेन-सा इकट्ठा हो जाता। मगर वह कभी हल खींचने से जी न चुराती। हाँ, वह इतना जरूर करती कि बीच-बीच में सिर घुमाकर ज़मीन काटते हुए हल की मूँठ पकड़े चाचा को खामोश निगाहों से देख लेती। चाचाजी भी अच्छे किसान थे। फौरन समझ जाते कि उस निगाह का क्या मतलब है। उसकी गर्दन से जुआ अलग करके उसे छुट्टी देते हुए वे उसको मेरे सिपुर्द करते और कहते—अब जाओ, उसके साथ खिलवाड़ करो। और वह खुद धान के खेत की मेड़ के पास एक पत्थर पर बैठ जाते और अपना लम्बा-सा पाइप पीने लग जाते जो कि अजगर की शक्लवाली एक बहुत भद्दी बाँस की जड़ का बना था।

सबसे पहले मैं उसे नदी किनारे ले गया जहाँ उसने करीब दस मिनट तक खूब जी भर के पानी पिया। जब उसने धीरे-धीरे सिर उठाया तो उसके मुँह से पानी की बूँदें नदी में गिरीं और तब वैसी ही आवाज़ हुई जैसी कहीं दूर पर बोझा ढोनेवाले खच्चरों के गले की घंटियों के

बजने पर होती है। गाय ने बहते हुए पानी के बहाव के उस पार हरे मैदानों और पहाड़ियों को बहुत शान्तिपूर्वक देखा। हमारी तीन हजार मील लम्बी, वृद्धा यॉंग सी मध्य चीन की तराई में पहुँचकर बहुत फैल जाती है, उसका पाट बहुत बढ़ जाता है। यहाँ तक कि उस पार के मैदान और पहाड़ियाँ इस पार से अजब धुँधली धुँधली और कुहरे से ढँकी हुई दिखलायी देतीं। ऐसा लगता कि उसको उनकी चाह है, उनके लिए उसके मन में अजब कोई भाव है। एक बार जब वह पानी के उस पार देख रही थी तो वह बहुत तेजी से और देर तक बोलती रही थी।

चाचा खड़े हुए, फिर उसके पास पहुँचते हुए बोले—छी, यह सब पागलपन मत करो, उधर कोई साँड़ नहीं बैठा है। और उसके नरम नरम पुट्ठों को उन्होंने प्यार से थपथपाया।

'तुम्हारी तरह जल्दी से उत्तेजित हो जानेवाली भावुक स्त्री मैंने नहीं देखी।' यह कहकर उन्होंने उसे फिर जोत दिया और वह अपने आप हल खींचने लगी जैसे उसे अब और समझाने की कतई जरूरत न हो। अपनी स्वभावगत शान्ति और धीरज के साथ वह उस सदियों पुरानी धरती को हल से काट चली।

मेरे चाचा अच्छे किसान थे यानी वह धरती और जोते जानेवाले जानवर, दोनों को ठीक से समझते थे। जाड़े का मौसम बीत जाने पर वह खेत से मुट्ठी भर मट्टी उठाते, उसे अँगूठे से मलते और ध्यान से सूँघते। वह फौरन यह बात बता सकते थे कि मट्टी में नया जीवन आ गया है या नहीं। यानी यह कि बीज डालने चाहिए या नहीं। चावल बो दिये जाने पर वह पानी में की धरती के रंग को देख कर यह बता सकते थे कि उसे अभी और खाद की जरूरत है या नहीं—और सो भी ठीक ढंग की खाद। उनका कहना था 'सूअर की खाद बहुत तेज होती है। एक हिस्सा गोबर में दो हिस्सा पानी मिलाने से अच्छी खाद तैयार होती है।' ऐसे मामलों में उनकी राय शायद ही कभी ग़लत होती।

लेकिन चचा के पास अपना खेत कभी नहीं रहा। खेती-किसानी ही मेरे दादा की जीविका थी। वे भी बड़े समझदार थे और चाचा ही की तरह वे भी खेत को और उस जानवर को जिससे उन्हें काम लेना होता खूब अच्छी तरह समझते; मगर वे बड़ी गरीबी में जिये और मरे। उनकी जो मड़ैया थी वह भी ताबूत † खरीदने के वास्ते जमींदार के हाथ बेच दी गयी, वही जमींदार जिसका खेत वह पैदावार का तीन पाँचवा हिस्सा बतौर लगान के देखकर जोतते थे। मड़ैया बिक जाने पर उनके पास फिर कुछ नहीं बचा बावजूद इसके कि वह बहुत ईमानदार और मेहनती किसान थे। यह एक रहस्य है जिसे आज तक मैं नहीं समझ पाया हूँ। बहरहाल, मैं यह कहना चाहता था कि मेरे चाचा को दस साल की उम्र से ही अपनी रोटी आप कमानी पड़ी। पहले कुछ दिन उन्होंने चरवाहे का काम किया, फिर खेतिहर मजदूर हो गये। पचीस साल की हाड़तोड़ मेहनत के बाद उनके पास इतना पैसा हो गया कि उन्होंने एक मेले में जाकर जहाँ गाय-बैल बिकने आते थे, एक बछिया खरीद ली। उन्होंने उसको उसी तरह पाला पोसा जैसे एक माँ अपने बच्चे को। वह सुबह उसी के साथ उठते और उसी के साथ उसी मड़ैया में सोने जाते। उसको उन्होंने बढ़ते हुए देखा, उसके रत्ती रत्ती मांस और हड्डी को। उसको उन्होंने आज की हालत तक बढ़ते देखा है, जैसी कि वह आज है—चिकनी चिकनी, रेशम की तरह, सीधी-सी और शर्मीली।

अब वह पैसेवाले थे—उनके पास अब अपनी गाय थी और कुछ बीघों की काश्त। लेकिन अब तक उन्हें बीवी न मिली थी, गोकि वह अधेड़ और अधेड़ क्या बूढ़े हो चले थे—हाड़तोड़ मेहनत करनेवाले किसान जल्दी बूढ़े भी तो हो जाते हैं।

उन्होंने अपने आपको समझाया, 'कोई बात नहीं, जब तक मेरे पास जमीन और यह गाय है तब तक मुझे बीवी मिलेगी और जरूर मिलेगी।'

---

† मुर्दे को जिस बकस में रखकर कब्र में गाड़ा जाता है।

और वह परिवार का स्वप्न देखने लगे, एक औरत का जो उनके लिए खाना पकाये, उनके साथ सोये, जमींदार के यहाँ अपमानित होने पर या कारिन्दे के हाथ पिटने पर निकले हुए आँसुओं को उनके गाल पर से पोंछ दे। और वह फिर एक लड़के का स्वप्न देखने लगे, एक लड़का जो उनके नाम को चलायेगा और उनके काम को, यही खेती किसानों का काम। 'मगर ओफ!' उनके मुँह से अनायास निकल गया, 'अगर मुझे एक बछिया खरीदने के लिए पच्चीस साल तक हाड़तोड़ मेहनत करनी पड़ती है, तो एक जोरू पाने के लिए और भी बीस साल...'

सोचकर वह काँप गये। और उनकी समझ में अच्छी तरह आ गया कि उन्हें और भी हाड़तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी।

मगर वह अपने सपनों को पूरा करने लिए जमकर काम शुरू भी न कर पाये थे कि दक्षिण चीन में राष्ट्रवादियों और मजदूरों की क्रान्ति शुरू हो गयी। फिर वही क्रान्ति एक आँधी की तरह मध्यचीन के ऊपर से भी बह गयी और अपने साथ तमाम सामंतशाही जमींदारों और मजिस्ट्रेटों को भी उड़ा ले गयी जो गाँव में जालिम कारिन्दों को लगान और कर वसूल करने के लिए भेजा करते थे। साथ ही साथ यह नयी शक्ति गाँवों की ओर भी फैली।

एक दिन क्रान्तिकारी सेना का एक नौजवान आया और गाँव के चौक में खड़े होकर उसने किसानों से कहा—'तुम लोग नित नये कर के बोझ से नहीं दबना चाहते न, कि चाहते हो? तुम जमींदारों से अपना पिंड छुड़ाना चाहते हो न, कि नहीं?'

किसी को इन सवालों का जवाब देने का हौसला न हुआ क्योंकि किसी ने ऐसे सवाल पहले नहीं सुने थे।

'अच्छा तो तुम्हें उन लोगों से छुटकारा मिल जायगा।' नौजवान ने लोगों के मौन को स्वीकृति का लक्षण समझकर कहा।

मेरे चाचा ने सिर हिलाते हुए अपने आप से कहा, 'अच्छा तो है, बात कुछ बुरी तो नहीं है।'

'अच्छा तो तुम लोगों को चाहिए' नौजवान बोलता गया, 'कि अपनी हिफाजत के लिए किसान सभा बनाओ।'

'अरे नहीं भैया, वह न होगा,' चाचा ने सोचा, 'उसके लिए मेरे पास वक्त नहीं। खेत परती पड़े रहने दूँ ? गैया को भूखों मरने दूँ ?' अपनी बगल में खड़ी हुई गाय की ओर वह मुड़े और उससे उन्होंने पूछा, 'क्यों ठीक कहता हूँ न ? अच्छा चलो प्यारी, कुछ काम किया जाय।'

और वह उसे लेकर खेत पर चले गये।

किसान सभा के लिए उनके पास वक्त हो चाहे न हो, उन्हें उसका सदस्य बना लिया गया। हर हफ्ता उनका आधा दिन गाँव के चौक में किसान सभा की जनरल मीटिंग में जाता, आधा दिन शहर में प्रदर्शनों में, जहाँ सभी बड़े बड़े जमींदार रहते थे और आधा दिन नौजवान क्रान्तिकारियों के भाषण सुनने में।

उन्होंने सोचा, अजब थकान की चीज है यह और वक्त बहुत बरबाद होता है। लेकिन और कुछ हुआ हो चाहे न हुआ हो, जमींदार डरकर भाग गये। बहुत से कर वसूल करनेवालों को गोली मार दी गयी। लिहाजा किसानों को पहले के मुकाबले में चिन्ताएँ अब कम हो गयी थीं। 'हाँ, हाँ...' चाचा को इस नये आन्दोलन की आलोचना के लिए कोई ढंग का कारण न मिलता था। 'जब तक अपनी गाय से अपने खेत पर काम करता हूँ...।'

मगर कुछ ही दिनों में बाहर से दूसरी दूसरी तरह की खबरें आने लगीं। चाचा की समझ में राजनीति की बातें तो कभी आती न थीं लिहाजा बेचारे बड़ी गड़बड़ में पड़ गये, उनकी समझ में बात ही कुछ न आती। सुनने में आया कि क्रान्तिकारियों की शक्ति दो टुकड़ों में बँट गयी है। यह भी सुनने में आया कि नयी सरकार ने बहुत से नये लोगों को निकाल दिया और अब पुरानी और नयी क्रान्तिकारी शक्तियों में लड़ाई चल रही है। इस खबर के कुछ दिनों के अन्दर ही किसानों को राइफलें पकड़ा दी गयीं और किसान सभा का नया नामकरण हुआ :

आत्मरक्षा वाहिनी ; और गाँव खुद एक बड़े परिवार के समान हो गया जिसमें जमीन पर सबका बराबर का हक था और जिसमें सब एक ही खेत पर सहकारी ढंग से काम करते थे। इस पंचायती खेती का सभापति था गाँव का एक हज्जाम और दो नौजवान क्रान्तिकारी उसके सलाहकार थे।

'गाँव की सारी जमीन अब हम सब लोगों की है,' हज्जाम ने गाँव के चौक में जोश के साथ चिल्लाकर कहा। हज्जाम के इस तरह चिल्लाने पर गाँव में सबको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि पहले कभी इस तरह पब्लिक में चिल्लाने की उसकी हिम्मत न पड़ी थी और पड़ती भी कैसे, कितना गरीब था वह, रहने के लिए एक अस्तबल तक तो था नहीं उसके पास। 'सब कुछ अब हमारा है!'

'मेरी गाय नहीं, हज्जाम!' चाचा ने प्रतिवाद किया, उन्हें अब तक बोलनेवाले की नयी उपाधि, ग्राम पंचायत का अध्यक्ष, का पता न था। 'उसे मैंने तबसे पाला-पोसा है जब वह जरा-सी थी।'

चाचा की बात की किसी ने रत्ती भर भी परवाह नहीं की क्योंकि उसी वक्त पास की पहाड़ियों से गोलियाँ चलने की आवाज आयी।

'दुश्मनों की फौज हमारा सफाया करने आ रही है,' दो में से एक नौजवान सलाहकार ने श्रोताओं से कहा। 'अपनी हिफाजत के लिए हमें उनसे लड़ना पड़ेगा।'

और भीड़ हज्जाम के नेतृत्व में पागलों की तरह पहाड़ियों की ओर चलने लगी। मेरे चाचा हतसंज्ञ से चौक में अकेले खड़े थे। उनकी समझ ही में न आता था कि यह सब क्या हो रहा है। गाँव अब भी वही पुराना गाँव था, वही काले खपड़ेवाली छप्परें जिनमें बीच-बीच में फूस का छाजन दिया हुआ था, वही एल्म के पेड़, वही एक दरवाजे से लेकर दूसरे दरवाजे तक कँकरीले रास्ते, जो कि उनकी पुरानी से पुरानी याददाश्त से लेकर आज तक बिलकुल वैसे ही हैं। लेकिन लोग अब वैसे नहीं हैं। लोग बदल गये हैं। हज्जाम ही की तरह सभी लोगों पर एक तरह की वहशत सवार है। ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने अपने से

सवाल किया, मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। इसी दिमागी परेशानी की हालत में वह हिफाजत के खयाल से गाय को गाँव के दूसरे सिरे पर ले गये।

गोलियाँ करीब दो घण्टे तक चलती रहीं। फिर खामोशी छा गयी। गाँववाले वापस आ गये, चुप, कोई एक शब्द नहीं बोला। दोनों सलाहकार गायब हो गये थे। हज्जाम का भी पता न था। कोई कुछ बोलना न चाहता था। चाचा को बहुत अकेला अकेला-सा लगने लगा तो उन्होंने गाय को संग लिया और अपने हाथों से—बहुत बड़े बड़े हाथ थे उनके—जिन्होंने दस साल की उमर से खेत में काम करना शुरू कर दिया था, अपने बोये धान को देखने के लिए खेत पर चले गये। और वहाँ खेत के एक सिरे पर हज्जाम की लाश पड़ी हुई थी—उसे इतनी गोलियाँ लगी थीं कि शरीर चलनी हो गया था। यह क्या? उन्होंने कभी किसी को अपनी जमीन पर इस तरह मारे जाते नहीं देखा था। खून से मट्टी का रंग बदल जाता है, और मट्टी का असर फसल पर पड़ता है, चाचा ने सोचा। मैं अपने पुराने मुलाकाती बेचारे हज्जाम के खून से सिंचा हुआ अनाज कैसे खा सकता हूँ? उन्होंने अपने मन में कहा और इस तरह गाय की ओर ताका मानों उन्हें उससे जवाब मिलने की उम्मीद हो। गाय उनकी आँखों में अपनी भावशून्य आँखें गड़ाये उनके सामने खड़ी थी। दोनों एक दूसरे को देखते रहे, नीरव। फिर एकाएक चाचा को रोना आ गया, उनकी समझ में नहीं आया, क्यों? अपनी जिन्दगी में वे पहले कभी नहीं रोये थे, तब भी नहीं जब कि मेरे दादा मरे थे।

उनके वापस गाँव आने आने तक उस पर फौज का कब्जा हो चुका था। कमांडर ने कहा, 'यह डाकुओं का गाँव है। इसे आग लगा दो!' और कुछ सिपाही छप्परों पर जलती मशालें फेंकने लगे। सौभाग्य से फौजवाले ज्यादा देर गाँव में नहीं रहे। आत्मरक्षा वाहिनी का सफाया करने के लिए वे दूसरे जिलों को चले गये। गाँववाले ठीक मौके से आ गये और आग बुझा दी गयी, नहीं तो पूरा गाँव जलकर खाक हो गया होता। मेरे चाचा की छत भी एक चौथाई जल गयी थी मगर

उन्होंने फिर उसे पुआल-वुआल भरकर ठीक कर लिया। इस काम में वह करीब तीन दिन लगे रहे और ये तीनों दिन गाय पास की पहाड़ी पर रही और भूख के मारे सूखकर काँटा हो गयी। उसकी पसलियाँ निकली देख कर चाचा ने दर्दभरी चीख की-सी आवाज में कहा, 'अरे मेरी प्यारी।' और फिर खेत के चावल की बात सोचकर जो हज्जाम के खून से सना हुआ था और जिसे वह खा नहीं सकते थे, उन्होंने फिर उसी दर्दभरी चीख की-सी आवाज में कहा, 'अरे मेरी प्यारी।'

गाँववालों ने अपने घरों की मरम्मत का काम खत्म ही किया था और अभी यह सोचने की कोशिश कर ही रहे थे कि फिर से कैसे जिन्दगी शुरू की जाय कि छापेमारों का एक दस्ता गाँव में आया। वे सभी राइफलों से लैस किसान थे। उनके साथ कुछ और नौजवान थे जो कि देखने में पहले के सलाहकारों जैसे थे। उनमें से एक ने फिर गाँव के चौक में खड़े होकर गाँववालों के सामने भाषण दिया, कहा—'पुराने सामन्तों और जमींदारों की फौजें हमें नष्ट कर डालने की कोशिश कर रही हैं; वे हमारे आन्दोलन का गला घोंटना चाहती हैं, हमारे ऊपर पुराने तौर-तरीके फिर से लादना चाहती हैं। हमें अपनी ताकत से अपने हितों की रक्षा करनी पड़ेगी।'

और गाँववाले भी छापेमार हो गये और सैनिक-शिक्षा पाने लगे। मेरे चाचा भी उनमें से एक हो गये। हर रोज वह दो तीन घंटे राइफल चलाना और निशाना साधना सीखते। हर बार जब बन्दूक उनके हाथ में होती तो उन्हें गोलियों से चलनी हज्जाम की याद आ जाती जो उनके खेत की एक मेड़ पर मरा पड़ा था, उनके हाथ काँपने लगते और दिल धड़कने लगता। करीब एक हफ्ते की ट्रेनिंग के बाद वह चीज उनसे और न बर्दाश्त हुई। वह ग्राम-पंचायत के नये सलाहकार के पास गये जो शहर का एक नौजवान आदमी था और बोले, 'साहब, मुझसे यह बन्दूकवाला मामला नहीं चलने का, बिलकुल नहीं चलने का। मेरा दिल बहुत पुराने ढंग का है; अब उससे लोगों को गोली मारना नहीं सीखा जाता।' और उन्होंने बन्दूक लौटा दी।

सलाहकार ने कहा, 'बहुत अच्छी बात है, हम किसी को सैनिक बनने के लिए मजबूर नहीं करते।'

और तब चाचा गाय को लेकर चरागाह चले गये और घास पर लेट गये। उनका दिमाग अजब उलझन में था, कभी सूरज को देखते और कभी उस जानवर को जिसने घास चरने और जमीन जोतने के अलावा और कुछ नहीं जाना। वह उस खेत में काम नहीं करना चाहते थे जिसकी मट्टी पर इन्सान के खून के दाग हैं। मगर खेत में हल चलाना ही उनका पेशा था। उनके हाथ-पैरों को आराम का अभ्यास न था, उनके दिमाग को इस बात का अभ्यास न था कि वह धान की खेती के बारे में न सोचे और न ही उनकी आँखों को यों ही बेमतलब ताकते रहने का अभ्यास था, जैसा कि वह इस वक्त कर रही थीं। जिन्दगी में पहली बार उन्हें अपनी जिन्दगी पहाड़ मालूम हुई।

कुछ दिन बाद वे फौजी फिर आये। गाँववाले उनसे लड़ने के लिए गये। इस बार बहुत भयानक लड़ाई हुई क्योंकि अब गाँववाले भी बन्दूक चलाना जान गये थे। और सचमुच वे बहुत खूब लड़े क्योंकि उन्हें लड़ाई का अनुभव भी मिल चुका था। और वे सब हज्जाम ही की तरह डटकर लड़ते रहे, जैसे सब पर वहशत सवार हो। मगर हमलावर फौजी अपनी मशीनगनों की मदद से गाँव के बहुत पास तक पहुँचने में कामयाब हुए। गोलियाँ छतों पर से सॉं-सॉं करती जा रही थीं और ट्रेंचमार्टर के गोलों से जमीन में गड्ढे हो जाते थे। चाचा पहाड़ी के पास की एक चट्टान की गुफा में घुसकर और कानों में अच्छी तरह उँगलियाँ ठूँसकर बैठ गये। वह उस लड़ाई की आवाज नहीं सुनना चाहते थे जिसका सिर-पैर कुछ उनकी समझ में नहीं आ रहा था। दिन खत्म होते-होते गाँववालों ने हमला करनेवालों को खदेड़कर उस जगह पर पहुँचा दिया जहाँ से उन्होंने अपना हमला शुरू किया था। मेरे चाचा गुफा से निकले—मानों कोई दुःस्वप्न देखकर अभी उठे हों। पहला काम जो उन्होंने किया वह था अपनी गाय को खोजना जिसे वह पहाड़ी पर चरती छोड़ गये थे। पहले तो वह उनको मिली नहीं।

जब आखिर को उन्होंने एक झाड़ी के पास एक गाय की खून में सनी लाश देखी तब अँधेरा हो चला था। उसके पेट में भी वैसी ही बेशुमार गोलियाँ लगी थीं जैसी कि हज्जाम के लगी थीं। अगर उन्होंने उस गाय की लम्बी, चिकनी पूँछ न देखी होती तो वह हरगिज़ न कह सकते कि यह उन्हीं की गाय है क्योंकि उन्हीं की गाय तो थी जो हमेशा उन्हें अपने पास आते देखकर अपनी लम्बी, चिकनी पूँछ धीरे धीरे हिलाती थी। चाचा ने रोना चाहा मगर रो नहीं सके। वही गाय जो कभी इतनी प्यारी, इतनी सीधी और इतनी शर्मीली थी अब कितनी बदसूरत दिख रही थी! तब भी उन्हें ऐसा ही लगा कि जैसे वह उन्हीं की सन्तान हो, उन्हीं की सृष्टि जिसे उन्होंने अपने हाथ से खाना खिलाया हो और जो उन्हीं के देखते देखते बड़ी हुई हो।

उस रात चाचा की एक पल को भी आँख न लगी। वह उस गाय के बारे में सोचते रहे जो उन्होंने पच्चीस साल की कड़ी मशक्कत की कमायी से खरीदी थी; उस खेत के बारे में जिसमें वह चावल पैदा होगा जिसे वह खा नहीं सकेंगे; उस औरत के बारे में जो अब उन्हें शायद कभी न मिलेगी...वह पौ फटने तक इसी तरह चित लेटे रहे, इन्हीं तमाम बातों के बारे में सोचते हुए, आँखें खुली हुईं और उन्मत्त-सी। फिर वह पागल आदमी की तरह कूदकर खड़े हुए और सीधे गाँव की कौंसिल में गये।

उन्होंने सलाहकार से कहा, 'मुझे एक बन्दूक दीजिए, साहब!'

'किस लिए?'—नौजवान ने पूछा।

'लड़ने के लिए।'

'यह लड़ने की बात तुमने ठीक से तय कर ली है न?' नौजवान ने विश्वास न करते हुए पूछा क्योंकि उसे यह बात याद थी कि चाचा ने पहले सैनिक शिक्षा लेने से इन्कार कर दिया था।

'बिला शक!' चाचा ने दृढ़ स्वर में कहा और फिर उनका स्वर धीमा हो गया मानों अपने आप से बात कर रहे हों। उनकी दुखी आँखें उनके खूब लम्बे चौड़े किसानी हाथों पर गड़ी हुई थीं। उन्होंने

उसी धीमे स्वर में कहा, 'यह अशांति का युग है। जमीन नहीं, गाय नहीं, औरत नहीं......'

एक पल के लिए नौजवान ने चाचा के, मौसम की मार खाये हुए रूखे भूरे चेहरे को देखा जो कुछ उद्विग्न-सा तो जरूर दिखता था मगर जिस पर गंभीरता और ईमानदारी लिखी हुई थी जैसी कि सभी किसान चेहरों पर लिखी होती है। इस एक पल के मुआयने के बाद नौजवान ने तय किया कि उनको बन्दूक दी जानी चाहिए।

दोपहर को फिर हमला हुआ। तमाम गाँववाले इकट्ठा हुए और उनका मुकाबला करने गये। मेरे चाचा सबसे आगे गये, वैसे ही उत्तेजित और उन्मत्त जैसा कि वह हज्जाम था।

लड़ने के लिए कोई मोर्चा तो था नहीं क्योंकि न तो कोई खाइयाँ ही थीं, और न कँटीले तार। किसान लड़ाकों ने पेड़ों और चट्टानों के पीछे से और जौ के खेतों की सूखी गड़हियों में से लड़ना शुरू किया। वे गोलियाँ कम चलाते थे। जब कि हमला करनेवाले सैनिक, जिनको न तो उस जगह के भूगोल का पता था और न छिपने की जगहों का, बहुत पास आ जाते तभी ये गाँववाले गोली चलाते। हमला करनेवाले लगभग सभी किस्मत के मारे सैनिक जो पास आ जाते, बंदूक की धायँ के साथ गिर पड़ते, कुछ की दर्दभरी चीख निकलती, कुछ की न निकलती मगर बचता शायद ही कोई।

मेरे चाचा एक छोटी-सी पहाड़ी पर एक कब्र के पीछे छिप गये। वही अकेले थे जो बेतहाशा बेसिर पैर गोलियाँ चलाये जा रहे थे; राइफल की धायँ धायँ में वह सारी सुध-बुध खो बैठे थे। बंदूक की नली को वह अपने हाथ में लपकता देखते और फिर कुंदा कंधे पर चोट करता। इसी चीज से उन्हें नशा सा हो गया था। मगर उनके इस तरह बेसिर-पैर ढंग से गोली चलाने से दुश्मन को उनकी छिपने की जगह का पता चल गया। तभी अचानक एक सैनिक उनके सिर पर बंदूक का निशाना साधे उनसे दस गज की दूरी पर दिखायी पड़ा। उन्होंने भी अपनी राइफल का निशाना उस पर साधा। मगर उस

सैनिक का चेहरा भी उन्हें इतना रूखा, भूरा, मौसम की मार खाया हुआ दिखा कि अपनी वर्दी को छोड़कर और किसी बात में वह उन्हें गाँववालों से अलग न जान पड़ा। 'यही वह दुश्मन है जिसे मुझको मारना है ?—'चाचा ने अपने आपसे सवाल किया। इसके पहले कि उन्हें इस सवाल का जवाब मिले उनके विरोधी ने गोली दाग दी। और वह गिर पड़े।

शाम के वक्त जब हमला करनेवालों को पीछे ढकेला जा चुका था और लड़ाई खत्म हो गयी थी, घर को लौटते हुए गाँववालों को मेरे चाचा कहीं नहीं दीख पड़े। लड़ाई के मैदान की अच्छी तरह छानबीन करने पर एक पहाड़ी के पास उन्हें एक लाश मिली जो मेरे चाचा से बहुत मिलती जुलती थी। लेकिन निश्चित स्वर में कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सिर का आधा हिस्सा बिलकुल उड़ गया था।

आखिरकार एक बुड्ढे किसान ने जो चाचा का पड़ोसी था, धीरे धीरे बुदबुदाकर कहा, 'वह देखो, कैसे बड़े बड़े हाथ हैं ! उसे छोड़ और कौन हो सकता है।'

पियोतर पावलेंको

उसे सबसे पहले अपने उपन्यास 'द बैरिकेड्स' के कारण ख्याति मिली। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि १८७१ का पेरिस कम्यून है जब कि पेरिस की जनता ने क्रान्ति करके कुछ काल को अपना शासन स्थापित कर लिया था। 'इन द ईस्ट' शीर्षक उपन्यास में सोवियत रूस और साम्राज्यवादी जापान की लड़ाई का चित्र है। सोवियत सरकार ने साइबेरिया में क्या-क्या रचनात्मक कार्य किये हैं, इसका बड़ा जीता जागता चित्र उसने उपन्यास में दिया है। जिस वर्ष यह उपन्यास प्रकाशित हुआ था, उस वर्ष सोवियत में उसी की सबसे अधिक बिक्री हुई थी।

लेखक की जन्मतिथि नहीं मिल सकी।

लेखक जीवित है और 'सोवियत लिटरेचर' में बीच बीच में उसकी रचनाएँ पढ़ने को मिल जाती हैं।

जिन्दगी

वह अपने चार साल के लड़के को साथ लिये सड़क पार कर रही थी। दो गाड़ियाँ चौराहे के दोनों तरफ, रास्ता रोके रुकी पड़ी थीं। वह ठहर गयी जिसमें गाड़ियाँ निकल जायँ।

यकायक लड़का खुशी के मारे हल्ला मचाता हुआ माँ से अपने को छुड़ाते हुए गाड़ियों के सामने से जो अब चलने लगी थीं, सड़क पार करने के लिए तेजी से दौड़ा।

माँ चिल्लायी। उसकी चीख इतनी डरावनी थी कि दोनों गाड़ियों के ड्राइवरों ने एक साथ अपने अपने ब्रेक लगा दिये। गाड़ियों के भीतर के लोग खिड़कियों में से बाहर को देखने लगे कि आखिर क्या मामला है और पाँवदानों पर लटके हुए लोग पहियों के नीचे। चारों तरफ से औरतें चिल्ला पड़ीं, 'कैसी अजीब माँ है! उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए।'

वह 'कोलिया! कोलिया!!' चिल्लाती हुई, घबराहट की मूर्त्ति बनी दोनों गाड़ियों के बीच की तंग जगह की ओर दौड़ी और उसका समूचा चेहरा पलक भाँजते दुखी और संत्रस्त हो गया।

'कैसा है तुम्हारा लड़का? नीली जाकट, बाल भूरे?' वह बोलने में असमर्थ हो रही थी। उसने चेहरे पर ढुलकते हुए पसीने को पोंछते और एक हाथ गले पर रक्खे हुए, सर हिलाया और अपने चारों तरफ के लोगों को भय से विस्फारित आँखों से देखा।

'वह तो नहीं है तुम्हारा लड़का? वह देखो! एक फौजी आदमी

ने झपटकर उसे उठा लिया था। बहुत करके उसे चोट आ गयी है...'

'कहाँ ? कहाँ ?' और वह दौड़ी जिधर लोगों ने इशारा किया था।

एक लंबा हवाबाज जो सर से पैर तक इस कदर धूल में सना हुआ था कि खाकी वर्दी पहने जान पड़ता था, कोलिया को गोद में लिये उसे छाती से लगाता और चूमता हुआ सड़क पर चला आ रहा था। लड़का मगन था और हँसता खिलखिलाता हवाबाज के कान खींच रहा था। उसे किसी तरह की चोट लगी नहीं जान पड़ती थी। और स्पष्टतः उसे हवाबाज की गोद में मजा आ रहा था।

'साथी हवाबाज, साथी हवाबाज तुम पागल हो क्या ?' उनके पीछे-पीछे दौड़ते हुए माँ चिल्लायी। लेकिन वह बढ़ता ही गया। साफ ही था कि उसने एक भी शब्द नहीं सुना।

'कोलिया, मेरा नन्हा कोलिया,' वह बुदबुदाता रहा जैसे नींद में हो, 'अबे शैतान तू यहाँ कैसे आ गया ?'

लड़का उसे कुछ बतला रहा था।

'वाह रे मजाल !' माँ ने हवाबाज़ की बाँह पकड़कर उसे रोका। उसे गश आने ही वाला था।

वह चिल्ला-सी उठी, 'मेरे लड़के को तुम कहाँ ले जा रहे हो ? वाह रे वाह, हद हो गयी ! उसे फौरन छोड़ दो ! नहीं तो मुझे फौजी स्वयंसेवक को बुलाना पड़ेगा !'

हवाबाज ने अचंभे के साथ उसकी ओर ताका।

उसने औरत से पूछा, 'आप क्या चाहती हैं ?'

भीड़ इकट्ठा होने लगी।

'तुम मेरे लड़के को कहाँ लिये जा रहे हो ? वाह रे वाह, हद हो गयी।'

'तुम्हारा लड़का ? यह तो मेरा लड़का है', और मानों अपने को आश्वस्त करने के लिए हवाबाज़ ने अचरज के साथ लड़के को देखा, 'तुम किसके लड़के हो कोलिया ?'

लड़के ने जवाब दिया, 'तुम्हारा, पिताजी !' और माँ की तरफ हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, 'और यह अम्माँ ।'

कोलिया ने समझाया, 'मेरी असली अम्माँ कब्र में है। जर्मन जब आये तो उन्होंने उसे गोली मार दी और तब काकी लीपा ने मेरी आँखें अपने हाथों से ढँक ली थीं, लेकिन पीछे मैंने भी फिर देखा......'

'बस कोलिया, बस !' पीड़ा के साथ उसने एक लम्बी साँस ली और औरत की ओर मुड़ते हुए पूछा—तो तुमने इसे गोद ले लिया है। क्या इस बात को बहुत दिन हो गये ?'

वह खड़ी थी वहाँ, उसकी आँखें अधमुँदी थीं और वह अपने ओंठ काट रही थी मानों किसी तेज पीड़ा को दबाने की कोशिश कर रही हो। गले से लगा हुआ उसका हाथ अब भी काँप रहा था।

हवाबाज ने कहा—'सुनो, अपने को काबू में करो। अब हमें करना क्या है ? अच्छा होता कि हम दोनों सारी बातों पर गौर कर लेते... तुम कहाँ जा रही थीं ?'

'घर ।'

'अपने मकान !'

'और नहीं क्या, अपने घर ही तो !' और उसने कातर होकर लड़के की ओर देखा और सिर हिलाया।

'अच्छा चलो। सचमुच मालूम नहीं मैं कैसा दीखता हूँ और आ फँसा यहाँ इस उलझन में, लेकिन खैर कोई बात नहीं।'

भीड़ ने धीरे-धीरे उनके लिए रास्ता कर दिया।

'कोई बात नहीं...इस ओर ..कोलिया, तुम्हारी रूमाल कहाँ है ? नाक पोंछ लो...दायें को...लेकिन तुम कानून के खिलाफ कोई काम नहीं कर सकतीं। तुम्हें हर्गिज न करना चाहिए। हर्गिज ऐसा पागलपन न करना चाहिए।'

उसने कुछ कहा नहीं। वह उसके पीछे-पीछे चली जा रही थी। उसके चेहरे पर अपराधी की-सी मुद्रा थी मानों वह कोई ऐसा जुर्म करते पकड़ी गयी हो जिसके लिए उसको बहुत सख्त सजा मिलेगी।

उन्हें कुछ नहीं मालूम कि वह किस तरह मकान पर पहुँच गये।

छोटा-सा कमरा था। ज्यादा चीजें उसमें न थीं, सिर्फ एक सोफा, एक छोटी मेज और एक कोने में सूटकेस पर रखा हुआ एक तेल का स्टोव।

बहुत से पुराने खिलौने खिड़की में इधर-उधर बिखरे पड़े थे। हवाबाज ने अपने बेटे को फर्श पर उतार दिया।

'अच्छा अगर आप बुरा न मानें तो मैं अपना परिचय दे दूँ। मैं मेजर ब्राजनेव हूँ।'

'मेरा नाम रोगाल्चुक है। तुमसे मिलकर मैं बहुत खुश हुई हूँ। मुझे उम्मीद है कि हमारे बीच कोई गलतफहमी न होगी।'

'किस तरह की गलतफहमी ?' कठोरता से देखते हुए उसने अचरज के साथ पूछा। उसको वह कुछ अरुचिकर-सी प्रतीत हुई।

वह औसत से कम लम्बी और जरा दुबली औरत थी। उसका चेहरा काफी अच्छा था गोकि उसके मुँह के आसपास की भारी रेखाओं ने उसे खराब कर दिया था। उसके आश्चर्यचकित चेहरे पर बेहद उदासी और दुःख की मुहर थी।

उसने सर के चारों ओर अपने लंबे सुनहले बालों की वेणी लपेट रक्खी थी। उसकी बाहें पतली और हल्का नीला रंग लिये हुए थीं। निर्जीव।

हवाबाज ने कहा, 'आओ, बैठो। आओ हम लोग बातचीत कर लें। मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं।'

'कामरेड ब्राजनेव, अच्छा होता कि पहले तुम नहा धोकर कपड़े वगैरह बदल डालते, क्यों ? कहो तो एक प्याला चाय...'

औरत की आवाज से मेजर को लगा कि वह उसे रोकना चाहती है और उससे किसी चीज की दरख्वास्त करना, भीख माँगना चाहती है।

'नहीं, आओ हमलोग पहले बातचीत खत्म कर लें।'

कहानी शुरू करने के पहले वह कमरे में से चुपके से निकलकर

एक पड़ोसी के यहाँ चली गयी और दालान की आवाज़ों से ग्राजनेव ने अन्दाज़ा लगाया कि केतली चढ़ा दी गयी है।

रोगाल्चुक ने कहा, 'मैं लेनिनग्राद में रहा करती थी। मेरा पति जनवरी में कहना चाहिए ठीक मेरे सामने ही मारा गया। और मैं अकेली हो गयी। मेरे ऊपर यह चोट इतनी बड़ी थी कि मैंने समझा अब और न जी सकूँगी। मेरे पास एक ऐसे जीव का रहना अनिवार्य था जिसकी जिन्दगी, जिसका स्वास्थ्य...जिसका सुख मुझ पर निर्भर करता हो। मैंने एक अनाथ को गोद लेने का निश्चय किया। यों तो इन अनाथों की अब कमी नहीं। लेकिन मुझे फौरन ऐसा कोई न मिला। मुझे ऐसे किसी की खोज थी जो मेरे पति से मिलता-जुलता हो। यह सच है कि बच्चे वक्त के साथ बदलते जाते हैं लेकिन मुझे कम से कम एकाध महीने के लिए इस बात की जरूरत पड़ी कि मैं अपने मृत पति के सौम्यरूप को किसी बच्चे के मुख-मण्डल में आरोपित करूँ और साथ ही मैं यह भी चाहती थी कि उस लड़के का नाम वही हो जो मेरे पति का था। कोलिया को पहले-पहल देखने पर ही मैं झट जान गयी कि यही मेरा लड़का है जिसकी मैं खोज कर रही थी, सदा के लिए मेरा।'

मेजर ने कहा, 'लेकिन वह अनाथ तो है नहीं। ऐसा समझना गलत है।'

'हाँ पिताजी मैं अनाथ हूँ,' कोलिया बीच में बोल पड़ा, 'काकी लीपा को भी जर्मनों ने मार डाला।'

अपनी जिन्दगी की कहानी गौर से सुनता वहीं बैठा था वह, ऐसा नन्हा-सा, पीला, चेहरे पर पतली नीली शिराओं की रेखाएँ, जो चमड़ा के अन्दर से साफ झलक रही थीं।

'अनाथालय में मुझे बतलाया गया था कि कोलिया की माँ मर चुकी और उसका बाप मोर्चे पर मारा गया और उसके सारे निकटतम संबन्धी भी या तो मारे गये या अस्पताल में घायल पड़े थे। मैंने झटपट सारी कानूनी कार्रवाइयाँ खत्म कीं और उसे गोद ले लिया।'

मेजर ने कहा, 'उस वक्त मैं नहीं मारा गया था। वह मेरे नाम का एक दूसरा आदमी था।'

रोगाल्चुक ने कमरे में चारों तरफ घबरायी हुई नजर दौड़ायी जैसे कुछ खोज रही हो।

लड़के ने पूछा, 'क्या खोज रही हो अम्माँ?'

'मेरा हैंडबेग कहाँ है, भैया?'

'अम्माँ, फिर तुम्हें कुछ नहीं सूझ रहा है। है तो वह, कुरसी पर। वह रहा कुरसी पर।'

मेजर ने अपनी उँगलियों की पोर से मेज पर खटखट करते हुए चोरी-चोरी अपने बेटे को देखा।

उसे बहुत बुरा मालूम हो रहा था कि उसका लड़का इस अजनबी औरत को 'अम्माँ' कहकर पुकार रहा है, लेकिन उसने अपने में इतनी ताकत नहीं महसूस की कि इसके लिए उसे डाँटे।

रोगाल्चुक ने हैंडबैग में से अपना पासपोर्ट निकाला और मेजर के सामने रख दिया।

'मुझे दृढ़ विश्वास था कि मोर्चे पर काम आये हुए एक लाल फौज के कमांडर के लड़के को गोद लेने का पूरा अधिकार है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मेरी शिक्षा-दीक्षा और मेरी जीविका लड़के को पालने-पोसने के लिए काफी है... मेरा पति भी लाल फौज का कमांडर था।'

उसकी आवाज धीमी लेकिन मोहक थी और उसे सुनते हुए ब्राजनेव को उस दूसरी स्त्री की याद हो आयी—जिसकी बात-बात में हाजिरजवाबी का रंग था, जो ऐसी ही दुबली-पतली लेकिन इससे कहीं ज्यादा ताकतवर थी—जिसे अब वह कभी न देखेगा, उसकी पत्नी, जिसके साथ उसका सुख, उसकी आशाएँ, उसकी समूची जिन्दगी ही बँधी हुई थी।

उसे लगा कि अपनी पत्नी के मर जाने से स्वयं उसके अपने व्यक्तित्व का एक अंश नष्ट हो गया है, जैसे उसका कवच टूट गया हो और

उसने अपनी अमरता खो दी हो। अब उसका कोई भविष्य नहीं है, मानों उसके साथ साथ वह अपने विशाल, असीम जान पड़ने वाले भविष्य के एक अंश से वंचित कर दिया गया है। एक पड़ोसी ट्रे में रखकर दो प्याले चाय और एक छोटी रकाबी में शीरा ले आया। ब्राजनेव ने बेखबरी की-सी हालत में एक प्याला उठाया और दो चम्मच शीरा डाल चुकने पर उसे खयाल आया कि वह गलती कर रहा है। कमरे में शांति का साम्राज्य था। रोगाल्चुक को जो कुछ कहना था, वह कह चुकी थी।

'पापा, पापा, यह तुमने क्या किया? और सो भी इतने बड़े होकर'—और कोलिया ने इस बात पर बहुत खुश होते हुए ताली बजायी कि उसने अपने पिता को एक ऐसा काम करते पकड़ लिया था, जो उसे न करना चाहिए था, 'और अब अम्माँ तुम्हें डाँटेंगी तो देखना! तुम यह नहीं जानते कि शीरे को रोटी पर लगाना चाहिए?'

उसका पिता निरीह भाव से मुसकरा दिया।

'अरे मैंने उसमें अपना पैर थोड़े ही न डाल दिया है? मालूम होता है मुझे इन बातों की आदत अब नहीं रही।...भई माफ करो, अब फिर ऐसी गलती न होगी। थोड़ा-सा अपनी चाय में डाल लो, कोलिया।'

शिक्षक की सी आवाज में लड़के ने कहा, 'ऐसा न करना चाहिए; पहले मुझे अपना दलिया खाना है, उसके बाद चाय लूँगा।'

रोगाल्चुक ने भावावेश से काँपती हुई आवाज में कहा, 'स्पष्ट है तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अच्छा सुनो: कोलिया उतना ही मेरा बेटा है जितना कि तुम्हारा। कानून की नजरों में वह मेरा बेटा है। मैंने उसे गोद लिया है।'

'तुम्हारे गोद लेने का क्या मतलब है? मुझे कहना होगा...।'

'निकोलाई ब्राजनेव वह जरूर है लेकिन उसका नाम मेरे पासपोर्ट पर दर्ज है।'

मेजर खड़ा हो गया और कमरे में टहलने लगा। उसने कहा, 'क्या अजीब मुसीबत है। आखिर हम करें क्या? और हमें किसी निर्णय पर फौरन पहुँचना है। और हमें यह निर्णय बुद्धिमानी से करना चाहिए। सबसे पहले तो जिस लाड़प्यार से तुमने मेरे लड़के की देखभाल की उसके लिए मैं तुम्हें हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। तुम मेरी कृतज्ञता का अंदाज नहीं लगा सकतीं और उसे अपना बनाने के लिए तुम जिस तरह लड़ रही हो उसने मेरी कृतज्ञता को और भी बढ़ा दिया है। अगर मैंने उसे एक आश्रयहीन, अनाथ की शक्ल में पाया होता तो कह नहीं सकता मैं क्या कर बैठता। सचमुच वह कैसी मुसीबत होती।...... अच्छा लड़ाई बाद मेरे वापस लौटने पर हम क्या करेंगे?'

रोगाल्चुक ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'अभी से उसके बारे में सोचकर क्या होगा। वक्त आने पर सवाल हम इस तरह हल करेंगे कि लड़का फायदे में रहे, नुकसान में नहीं, और करना ही क्या है।'

लड़का आज उसे जैसा प्यारा लग रहा था, वैसा पहले कभी न लगा था। वह इतना परीशान लग रहा था कुर्ती काटकर बनायी हुई अपनी उस अँगढ़ी-लगी कमीज में। वह समझ गया कि उसकी किस्मत का फैसला किया जा रहा है और उसे शायद डर था कि ये बड़े लोग ठीक से फैसला न करेंगे।

मेजर ने एक लम्बी साँस ली।

'तुम्हारी आमदनी का क्या हाल है—काफी है दो के लिए?'

'मुझे कोई खास शिकायत तो नहीं।'

रोगाल्चुक की मुद्रा जरा गम्भीर हो गयी, उसका चेहरा दीप्त हो उठा।

'और कपड़ों का—कुछ मुश्किल तो होगी आजकल?'

'जरूरी चीजें तो उसके पास हैं ही। अलबत्ता शान शौकत के अब दिन नहीं रहे। और फिर वह कोई बिगड़ा हुआ लड़का तो है नहीं, बहुत संजीदा तबीअत का है।'

'अपनी तनख्वाह से तो खैर मैं तुम्हें कुछ जरूर दूँगा। लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है कि तुम फौज और बेड़े के स्टोर में भर्ती हो जाओ। हाँ तो यही ठीक रहा। पेंसिल है न, होगी तो ? मेरे मैदानी डाकखाने का नम्बर लिख लो।'

रोगाल्चुक ने पता लिख लिया।

'क्यों, अब हाथ मुँह धो डालो। लो इस तसले में पानी है', उसने कहा।

'शुक्रिया। मैं तुम्हारा वक्त तो नहीं ज़ाया कर रहा हूँ, क्यों ?'

'नहीं। आज मुझे काम पर नहीं जाना है।'

'अम्माँ ने आज मुझे सिनेमा ले चलने कहा था। पापा, तुम भी चलो न', कोलिया ने कहा।

'नहीं बेटा, मैं न जा सकूँगा। सिनेमा तक मैं तुम्हारे साथ जरूर चलूँगा, लेकिन देखने का मेरे पास वक्त नहीं। मुझे फौरन जाना है।'

रोगाल्चुक कमरे के बाहर चली गयी जिसमें मेजर को कोई उलझन न महसूस हो। मेजर ने कमर तक कपड़े उतारे और हाथ मुँह धोया। फिर उसने मेज पर पड़े हुए रोगाल्चुक के पासपोर्ट को उठाया और उसे उलट-पलटकर गौर से देखने लगा। वह उसे पढ़ ही रहा था कि वह कमरे में दाखिल हुई।

'तो तुम ज़िनाइदा ऐंतोनोवना हो' उसने किंचित शरमाते हुए कहा—मैं, अच्छा देखो...मेरा नाम वासिली वासिलियोविच है। मेरी उम्र छत्तिस है। अच्छा हो कि हम एक दूसरे को जान लें। तुम्हारा क्या खयाल है ?'

'मैं भी यही सोचती हूँ', उसने मुसकराते हुए कहा।

मेजर ने ब्रुश से वर्दी को साफ किया और रूमाल निकाल कर अपनी वर्दी में टँके तमगों पर पड़ी धूल को पोंछा।

'अच्छा, अब चलना चाहिए।' उसने कहा।

वे लड़के की उँगली थामे साथ साथ बाहर निकले।

पास पड़ोस के सभी लड़के मेजर को गौर से देख रहे थे—लंबा,

ताम्रवर्ण, सीने पर दो तमगे टँके हुए। वह रुककर मुँहकी बायें उस ओर ताक रहे थे। कोलिया दोनों के बीच चल रहा था, फूला-फूला, मगन।

मोटर के अड्डे पर मेजर ने बेटे को उठा लिया और चूमा, उसके मुँह को, गले को और पतली-पतली बाँहों को।

'ज़िनाइदा एँतोनोवना का कहना मानना और उन्हें प्यार करना', उसने कहा।

'किसे ?' लड़के ने पूछा।

'अरे, माँ को और किसे...'

'इन्हें...'

'क्या कहते हैं, इन्हें प्यार न करूँगा ! आप इन्हें प्यार करते हैं ?'

जिनाइदा एँतोनोवना पीली पड़ गयी और अनजाने ही उसने अपने को जैसे सिकोड़-सा लिया।

वह बुदबुदायी, 'कोलिया, मेरा कोलिया, डैडी को कह कि तुझे चिट्ठी लिखा करें।'

'पापा, तुम हमें चिट्ठी तो लिखते रहा करोगे, न ?'

'हाँ हाँ, जरूर। और तुम भी मुझे लिखना, कोलिया। लेकिन भूलना मत, तुम्हें नेक फरमाबरदार लड़का बनना है !'

'अम्माँ तुम्हें चिट्ठी लिखेंगी और मैं तुम्हें तसवीर बनाकर भेजूँगा।'

'बहुत खूब, अच्छा, शुक्रिया...बाकी बातें अभी यहीं तक रहने दो। विदा, ज़िनाइदा एँतोनोवना' और उसने पहली बार सीधे-सादे खुले दिल से रोगाल्चुक की आँखों में आँखें डालकर देखा।

'तुम अम्माँ को चूमते क्यों नहीं ? तुमने मुझे चूमा लेकिन अम्माँ को नहीं। ऐसा क्यों, पापा ?'

आजनेव ने रोगाल्चुक को अपनी बाँहों में भरा और उसके माथे को हल्के से चूम लिया।

'तुम्हारा बहुत आभारी हूँ, प्यारी जिनाइदा, मेरा हार्दिक धन्यवाद लो।'

वह कूद कर एक मोटर पर चढ़ गया और गोकि उसमें काफी जगहें खाली थीं वह पाँवदान पर खड़ा-खड़ा बहुत देर तक उस अनजान स्त्री की दुबली-पतली आकृति को देखता रहा और देखता रहा उसके पास खड़े उस दुबले-पतले लड़के को।

ग्राज़िया देलेदा

जन्म ९ अक्तूबर १८७५

मृत्यु १५ अगस्त १९३६

जन्म नुआरो, सार्डिनिया, इटली में हुआ। अल्प वयस में ही लिखने की ओर उसका झुकाव दिखने लगा था। उस समय उसने सार्डिनिया के लोगों के जो चित्र खींचे थे, उनसे उसके शिक्षकगण बहुत प्रभावित थे और इटली के पत्रों में अपनी रचनाएँ छपाने के लिए उसको प्रोत्साहित करते रहते थे। पन्द्रह बरस की उमर में ग्राज़िया ने अपना पहला उपन्यास 'फ़िओर दि सारदेन्या' लिखा जो कि तत्काल रोम में प्रकाशित हो गया। जब उसकी दूसरी कहानी 'एलियस पोरतोलू' १९०० में छपी तो शीघ्र ही उसका अनुवाद कई यूरोपीय भाषाओं में हो गया। इसी समय वह लेखिका के रूप में स्थायी तौर पर रोम में रहने लगी।

उसने तीस से ऊपर उपन्यास और अनेक कहानियाँ लिखी हैं। 'ऐशेज़ आफ़्टर द डिवोर्स' और 'नॉस्टैलजिया' उसकी दो कृतियाँ हैं जिनका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है। La fuga in Egitto शीर्षक उपन्यास पर उन्हें सन् २६ में नोबेल पुरस्कार मिला, 'उनकी उदात्त आदर्शवादी रचनाओं के लिए,

जिनमें उन्होंने इतने सजीव रूप में अपनी मातृभूमि के जीवन को अंकित किया है और इतनी सहानुभूति और गम्भीरता से सामान्य मानव समस्याओं को समझने का यत्न किया है।'